

राजस्थानी भाषा गाहित्य एव सम्पृति अवारमी थावाचर सू पृथ्वीराज राशीह पुरस्कार म् गुरस्त्रत उपायाम

मांझळ

Ø7_.

कृष्ण जनसेवी एण्ड को., बीकानेर



सस्करण 1990 मूल्य 35 रुपये मात्र लेखक रामनिवास शर्मा

मुद्रक साखला प्रिन्टस च दन सागर, बीकानेर

म्हारी बात

मारतीय वित्तास मास अठारवी सुदी अग्वितत सी रक्षा रो मुग हो।
गाठा राष्ट्र आपर अग्तित न रातम सातर तूम रसो हा। वी बेळा त्रसा से के हानत हुम सक इ सी तो क्लमा ही करी आम सक। इ प्यास री नाविका भेतनी आपर अस्तित्व सी सात मास भटकती एक गाउँ है।

राजस्थान री सम्हृति वृविनी री है बिलदान री है जौहर री है। इ राज राजस्थान री रमणी लाम तौर सू ओ मान मुरतव चाव।

समाज अस्तित्व रों लोज माय भी जिन्म रो भूल न मुलाय कोनी सक ो। धनकी जिन्मानी मूल मू अनिक्त ही। या आपरी अभिनता रो लोज गाय साम्यानी हो। क्या समान बी र अस्तित्व मुनाय न बी रा एक रिम्मरागत रूप हो। रापणो जाव हो। क्या सुना अपर पर्म्परागत रूप माय आपरो नुवा करो मा ूरो बोध करावको जाव हो।

न्तरता री आ महती च्छा रव व वा पत्नी भी हुव अर सामै-सामै ता भी। जे बराम मा नीं वच मक तो मिनक र सामै मोवणी अवारय मान। वामरी मी ववाणा थार। मा वच न आपरी सच्छा अस्तित्व भुरावणी चाव। परवार रा भूरी वहरूपा मुगुरायण भागच री दूषा न्हांची अर पूता एळी री आसीत पावणी थार।

धननी एन समस्या है। यो समस्या रो समाधान नीं तो धनकी र वन पर नीं मुमाज री ब्यउन्या वन, पण धननी गथप माय लाग्योटी रवें। 1 म आपरा अन्ति व स्वीयन अस्मिता न राजः।

इण माय मन किती सफलता मिली इ बावत तो बिन पाटक ई बतासी १

हा सत्यनारायण स्वामी अर श्री माणव तिवाही बच्च रो घणी आभारी ह जिना रो पूरो सहयोग मिलण स ही पोथी छपाई जाय सनी। श्री कृष्ण जनसवी अर श्री दीपच > साखला रो घणो आभारी ह जिनां

र उत्साह र नारण आ पोची इण सोवण रूप मांग छप सबी।

अवाजीय म 2044

प्राचीक चीक बीकानेर

—राप्तिवास गर्मा

पणमानीता आदरजोग हिनी बर राजस्थानी रा स्थात विद्वान स्राचाय भी स्वसयचा नर्मा न 73 वें जसपदिन र मौक

धणमान समपण



बात पसवाबों कोर। नूई अर पुराणी। पसवाड साम नूई बाता ऊपर आजाब अर पुराणी वार्ता भीच वह जाव। पसवाड साम नूई अर पुराणी वार्ता रा क्रम इसी चाल ने आंग री नूई बात काल पुराणी अर नाल री पुराणी नात आज क्यात री नूई बात काल पुराणी अर नाल री पुराणी नात आज क्यात री नूई बात काल पुराणी आता सिल न रोळ लोळ हुंय जाव। पछ ज समझी बाता भीकी हुंब न मीठे पाव विरखी सतावे। वा बाता न बार बार कुपर ने न्वणी पड़। व समळी वार्ता काल री सी लाग, पण वारो नितहास बढ़ी हो लाबो हुव। इण सारल इतिहास री छोटी अर मोटी बातो नाळज म अटक्योडी रव जम्म सिर्म री हाडो में बास रा भोजा। इलिएय री सक्ट उतरचा पछ मीठी मीठी खाज जाव कर बीन प्योळ्या न सुल सिन। इण सीर रूप सात इ सोग्योड इवरपोणी सी हुव अर साराम न सुल सिन। इण सोरए सात ई सोग्योड हुत री टीस ई सन्त ही पुळाडी र ल है।

अ समळी बातां बहोत बरसा पछी री है। पण अ अपण आप ही यान र दरवाज कर आप न उपण न सहस्रहाज्य लाग जाय । हार न लारसी बाता न हुण्य न यार करणी पढ़ । स समळी बाता हरी हुम न आस्या र साम न कपुतळी री तर नावण लाग जाव । मुग्ता र मार्ट्स रा मुग्ता पुर पहीं जाय न सराठा रो पोहिस्सो दिख्याय न उतराद रो सरती माप दौडण लागस्यो । राजस्यात री रजपूती अर अवस्य री नवाबी मराठी र नांव सुई धर पर कांच ही । हिस्सी रा साम दूओ कण ही नवाबी रा मार्थी में स्वत ही नवाबी रा मार्थी से स्वत ही स्वत ही । हिस्सी रा मार्थी रा मार्थी हो सहान ही महान्त्री मिया री । यानसी राड मो होसती निर्मी

रा राज सिमासण द्वयण लागस्या हो। किरम्या रा नृहै उभरती तावत अक सागद दोना कानी याळ्या चलायी जिल गुमराठा रो पाढलियो मरम्यो अर मुक्ता रो राज पराणो देह पडयो। राजपूतान रा राजा चीय देवता देवता काल हुम्या। शासगळा री आस किरम्या स अटक्योडी ही। अ समळी बाता काल री सी लाग है।

इतिहास रा पाना घणा है छोटा हुन । आठ सो अरसा रो शीस पीडधा रो लालो इतिहास घोडा सा वाज स समायधो । काळ रा करन करावळा पाल अर बो लाग रो धान स वाली साळा न मुलाब देव है। तो पतो कोणी चाल क नद नहाइ हुया अर नद नहाई हुया लास। समय रो माया सा<u>धा</u>णात्तु अध्यात क नद नहाइ हुया अर नद नहाई हुया लास। समय रो माया सा<u>धाणात्तु अध्यात कर तर होता । समय रो माया साधाणात्तु अध्यात कर होता। सहस्य माया चाला कर होता। सुस्ता माया रो मरणो है सहसा नार हुयो अर मराठा है जतराव सु जुगाया होता है। सहस्य मायावता मायावता मरमा। र जपूती दाक माल र साथ है साबुटीवर्गी, अर विकरी चोटी पणी गाय रथी वा समयी रो सवळी सुस सेयर सोधगी दिली जळावा ठठ न अगाया लाग।</u>

हू कठ भटकाया । मुलताना लार मराठा छार रजपूती छार। अ सगळा पाणी र बुलंबुला रीतर चांडोक ताळ उभरा पाछा थिसूजाया — जिया बान्को म चाद।

 पत्योही रोही सामन हो। पोहर लेक रात दलगी हो। सवार र जिलाड़
माय पिता है हुद्धूर्म हुद्धार्ग कीवा गढ़ ही विलय हो। से वेग सू वैगो
दूगरी वन पूनणो जाव हो। सोच मे मरपोड़ो पोड़ी पोड़े ताल उच्छ आप री
दाही माय हाय परे हा लाग लागर पुराग दिनो न वन है जीव हो। उप
दुर्ग रो सांव उग रीव कर दुद्धण सामगी ही पण चाल हगा ही लाग खेत रो
मारग हुव । सारता पोड़ मिटका कोनी उम सू पना पाछी आगर आपरा
पोड़ और माड देवती। उम दासत ले ने तेग गुवाह रो-सो हो। उग न ओ भी
वेरो, हो व उग र सवार ने स्टीन वट आवणो है। इम वासत सांव लेव बाल
मू काटी दूमरी वानी पाल ही।

बात घणी जूनी है। सतजुग री। जण राम बनवास भोगता हा। रावण सीता न हरन लयम्यो हा । सीता न पाछी लावण वासत राम वानरा-भाल्वारी सेना बणायर लका माथ धावो करघो हो । धाव म स्रहमण र शक्ति बाण लागचा हो। हडमान सजीवणी बूटी लावण वासत हिमालय पहाड माम गयो हो। पण सजीवणी बूटी री पचाण नी हुवण र कारण बा सगळो पहाड ई उठायर ले जान हो उच गरत सोच्यो क क्षी कोई राक्षस है जवो राम माथ नालण वासत पहाड ले जाव है। आ सोचर बी बाण मारघी। याण सीघी हडमान र गोड माथ लाग्यो। हडमान र बाण री सागीडी लागण सूहायर सहारे मूकाय माथ रास्योडी पहाड हिल्यो। इण हिलण र साग ई पहाड रो खूणो भटक सू टूटम्यो अर पून रा वपेडा खानतो खाबतो अठ आम पहियो । जिन निन र पछ अर बाज र दिन तांई आ हुगरी हडमानजी री डूगरी र नाव सू जाणीज है। डूगरी री चोटी माथ हडमानजी री बेन बाती मण्डी । बगदी माद सात-सास धवा कराव हो। पूर्य र दिन होणपुर, लरवूची कोट अर वदेरी सू जातरी देरीया नरण बासत आव । सिमामी रा आव अर बाली रात जागन देव । दिनूग पाछा दुरे जीव ।

मुतर-सवार कठीन ई देख कोनी हा। सीधो बालतो जाव हो। इत मं विरला में डूगरी मं बंदणवाली नाळी आयम्यो जिए रादोनू किनारा

थोरा जा जावती इण कारण विरखा दब्या पछ नाळो आ सगळा भाड भुखाडा सुभरघो रवतो अरु जिक वामत नाळ न टावा टावा पग मेलर पार करणो पडतो। बोहली ताळ सुमून सुतर सवार अठ चेत चेत क्यर नाळो पार करण सारू साढ रो होसलो वधायो। थोडीज ताळ म सवार

बारटचा, करा, क्षेजडा अर थोरां सुभरघोडा हा। नाळी मारग सुच्यार पाच हाथ नीवो हय न बवतो हो। बिरखा हवती जण डगरी रो सगळो पाणी मसाहा मारतो नाळ मे समा जावतो । पाणी र साग गळगचिया, सूनी

नाळो पार करन भाखरा र मारग माथ आयग्या। हुगरी सावळ दीवण लागगी ही। कोसा ताई लाबी चौडी हगरी उण न छाती सुणी भीत सिरखी

लाग ही। चादण सुध्याडी इगरी समदर सुनिकळत कलास ज्युजगमगा वती ही। टेचरी माम री धाळी बगली क्लासपति र चाद जिसी सोव ही।

डूगरी कर्ने

्रिन्स हे हार् भी जड़ां ने पूगण सामायी हो। बनावी र सामे लगत रोपन दो सर्पाणिक सामगी। मगन ह्योडो आगणियो इस्तार माप माव हो अर सार-सार सगळा मुणणिया टेर सार हा। जागणियो आग आग माय हो—

> लका मोहे जावण दे, मोह नाम जरूरी। रामय द्वजी री सीता नारी हर लीनी रावण यळ भारी। पतो लगावण दे, मोह नाम जरूरी लना मोहे जावण दे।

योर अर छाणा अक कानो पडया हा। साली आनण विद्ययोडो हो। अेक कानो कमडळ पडयो हो। यूणी म अेक जिसटो ई रूप्योडो हो। यूणी स उठत यूक सुजय री चेतनता सालम पड हो। 🛩

सवार पगरकी कोछर गुणा र वारण कन रासी अर कमक्छ सूहाय पोबर पाणी पीयो। जलारो करन पाछी जागर रणी रो सिराणो सेयर सोबग्यो। हरिभजन री छरी र साग नींट ई पतका माथ जतरण सागगी। चुणी। मीत सी चुणी, जिकी जार्गाणयां सूहर ही का सुसादा मू।

 अमंकरणे हुयायों हो। बोद आधूण न जावण क्षाणायों हा। उचा र सहर माण आली रात र जागरण री उदामी निजर क्षाय हो। तारा द्विषण क्षाणाया हा। ज्योरस्ता अभिवारिका आली रात पुरित मुल क्षयन पादी घर जाव ही। पून री चाल म ठराव हो जाण जावती बेळा वा पाछी मुढ मुढ न लाद देल हो। ओण्ण र पल मू कहता पूल घर रो मारण बताब हा। रात पोळी वबण मागगी ही। जाणिया परमाती गावण लागया हा।

सवार पतवाशे कार न उठयो। हाय मूठा यायर याणी सीतो अर दूनरी माय जवन नात्यो। दूगरी माय चढन रो मारन नुनो नोती हो। अंत्र माय जवन नात्यो। दूगरी माय चढन रो मारन नुनो नोती हो। अंत्र मायत तो हो पुत्र र सार है खानी पूर्णा—जिले पुत्र परि सार हो जातर से तार सो मायत सारक जातर किया हो। प्रत्यो सारक जातरी किया हो। यह से सीते पण ज्यवन्त्र वासरी किया हो हो तीन आय जावता। अंकरो दोक्सो आदमी दूगरी याय चढ़न रही हिमत है को त्रस्त आप किया हो। जदती आर उत्तरती विका पूर्ण प्यान पालगे पदती। अंकर दे कुल चूक जर लावायळ मू किया रो पान वितळ जावतो तो वो सन्द हुएव नीच मालरा में पर रामदार हुए जावतो। केनल बोकल जावतो माय पूनता जिलता जुरू कर नाहरी माय पुत्र रामदार में पर रामदार हुए वासतो। वेनल बोकल जावतो माय पुत्र ता जिलता जुरू कर नाहरी वारो वे केनल बोकल जावतो माय पुत्र ता जिलता जुरू कर नाहरी वारो वे केनल बोकल जावतो माय पुत्र ता जिलता जुरू कर नाहरी वारो वे केनल बोकल जावतो माय पुत्र ता जिलता जुरू कर नाहरी वारो वे केनल बोकल जावतो माय पुत्र ता जुरू कर नाहरी वारो वे केनल बोकल जावतो माय पुत्र ता जुरू कर नाहरी वारो वे केनल बोकल जावतो माय पुत्र ता जुरू कर नाहरी वारो वे केनल बोकल जावतो माय पुत्र ता जुरू कर नाहरी वारो के केनल बोकल जावतो माय पुत्र ता जुरू कर नाहरी वारो के केनल बोकल जावता है। कर उत्तर ता वारो वे केल बोकल जावता वारो वे केल वे केलल बोकल जावता कर वे केलल बोकल जावता के केलल जावता कर वे केलल बोकल जावता केलल वे केलल जावता केलल

सवार गुका बनली बगर सूजरख ज्यू बगसा भरता भरता हुगरी माप बढ़ायो। बगली सामें अंक छोटी सोक दिवारों हो। पवास जेंक जातरी चोक में बात को लातरी चोक जागा देव हा। बगली रो किंवाब खुतों हो। मीठे तेल रो बीक सह हो। बगली महाच माप बहुत उठाय बवरण बली रा मूरती ही जिली किंदुर लर मालीपाना लाग-सागर आप रो साकार है सोचण छागणी हो। बारी रा लेंक छतर देवळी माप सटक हा। दीय सू निकळत कालळ बगला म मांय सू काळी कर राखी हो। छतर री मोळी आप रो रण ई गमा चुकी हो। दीय कन सूरियो राखी हो। सामें पढ़ी वाली म चूरमो जर विटबया चारयोडी हो।

अगूण आम म सफदी चमकण लागगी ही । जावता अधारा भागत भूत ज्यु लखाव हो । हाळ-होळ सपेंदी गरी लाल हुवण लागगी ।

सूरज री वहीं किरण सीधी व गती र मांव बटण लागगी। जागण बद हुवम्यो हा। सगळ श्रेष साथ ई बच बोतर बगका तार कुढ हा वठ पाणी पीवण सार जावण लागचा। जातरघा र पीवण लातर ई हो उण कुढ रा पाणी। सूरज री किरणां दूगरी माथ केण लागमा। बातको <u>जावरा</u> हा सूर दूर ताई स्वराधो रोहों बावड म सिनान व र हा। बरसण वरन, जिदूर मभूत रा टीको लागवर जातरी टोळा म टूरण लागमा।

भीड हुवग सुसवार दा<u>र्ग कन</u> हो, <u>निसकारो जालर</u> ठरम्यो हा। ज्यू-ज्यू भीड सिडण लागी, वो बाग सिरक्तो गयो। पुजारीजी इक्तारो सामै रास्था सीव्या माध्या मुस्ताय त्या हा। समझीमया कन पड्या हा। कन पुगर सवार जयकार करन पग कानी हाय करयो। पुजारीजी महाराज आयो सुली आस्था सुपूछ्यो—कण आयो?

'नीच ता पोहर अेक्र रात गया हो पूगन्यो हो' सवार आग कयो— 'अठ अवार ई आयो हा

सूरज बोहळो ऊचा चढम्यो हा । सगळी दूगरी तावढ में रमै ही । पून रा फटकारा जोर सूलाग हा । जावरमा रो टाळवा नीच जावती वीख ही । डवा चोर सुदूगरी मरी ही। इन्हें दुक्ती आज बया ई कभी दील ही। दूगरी री आ डिपाम तळाव वन कमा आदमी बळप अर दूजा जिनावर गण्मीगणा मा दीव हा। पुत्रारीजी उठन इक्तारी छमछिमया, अर आसण बनती म राखर बढदों कर न भाग लगायी। ताळी बजायर परसाद री चाली बार क्या अर वारणो उबयो। सूद कन पड़ी, तूबी न ठावी राखर क्यों — चाली नीच हाला।

दोर्न् जणा दूर पडघा।

भात बळी रा नगत हमायो । दानु जणा जीमर आप आपर मध लागम्या । सवार साट न पाणी पावण बास्त नीच आयम्या । पुत्रारीजी गुप्ता म जायर आहा हयस्या हा। सवार साढ न पाणी पायर पाछा आयो अर गुफा र बारण नन आगर सुनो सो दस्यों न बोहळी सारी चमचेडाँ गुफा री छात सुटिर ही। वो मूता-सूतो देखतो रैयो क नर किया काम विद्वल हुयन माना नानी आग सिरक है मादा न सघ है अर उण में काम जाग्रत करन किया जबरदस्ती उणरै साग भोग कर ह । आग आपर सबध में सोनण लागम्यो---हुआ स्तनजीबी चमचडा सुघणो बेसी वामी हुका प्रेम र वशीभृत हपर ई ओ सगळो नाम नरू है। ओ आखो ससार नाम रो ही परिष्ट्रत रूप है। अ जीव जातु मिनसास् ही मेळ साव । मिनस जीवां सू मिनता जुलता है ना सुघार रो साग लयन आपरा चैरो बणावटी बणायन राख है ना सगळो जीवण ही आ सगळी बाता रो अन छोटो सस्करण है। हुपाय करू हुतो पुण्य काई है अर ओ पुण्य है तो पाप काई है ? पाप कर पुण्य री सीमा निर्धारण रो ता म्हारो काम कोनी पण सगळी बातां करता थकापाप री सीमा मंबढण राविचार कोनी। तो फेर म्हारी इण र साग काई रिस्ती है जब सुठावरा रो समाचार सुणता पाण मिलण बास्त बहीर हयग्यो। काई ओ आक्पण है ? आक्पण री "याह्या कोनी। आ सोचता साचतासवार रो मायो पाप अर पुण्य र विच भचभेडा लावण छागग्यो । हारन सवार पसवाही फार न आह्या मीच्या सीवण रो जतन करण लागग्यो । जीवण श्रेक विद्रम्बना है का लावा श्रर उळस्पोदो मारग । जिता बो छादो है बितोई उळमणा सू भरपोटो है । श्रादमी वित्तोई रहस्पमय है जितो जीवण । <u>रण वास्त श्रादमी रो इंसरो नाव है रहस्पमय, श्रर जीवण हण</u> रहस्य रो <u>रहस्यमय पटळ</u> है ।

सिह्या पडण छागगी हो। पुत्रारीजी दीया बाती करण वास्त गया परा हा। सवार बसत रो पसवादा पेर हो। हाळ होळ रात रो पादर साबी हुवण सागगी। पमचेडा उड उडर गुणा र बार आवण-जावण लागगी ही। केसा रो पाद आम म उभरपो नोती हा, ऊसता है आपभीजयो हा। पुत्रारीजी आरती करन पर बचर पाछा आया।

राणा ! ' पुजारीजी कवी वीं वाक्योडा सालागो हो ।'

नोई बतावा? मायको मन आवळ बावळ हुय रयो है।' राणा यद तर दियो। आग योच्या— आयम् सताह मृत करण बसता ही आयो हो। यण पूनम हुवण र वारण आयन वसत कोनी हो इण जारण बात कोनी हुय सकी।

आसण माय बठता पुजारीजी क्यो-अब आपा गायस सूबाता करसा।'

पुत्रारीजी र सामन बटती परो <u>राणा बोल्यो</u>—मन सनेसी मिल्यो है क ठाकरसा <u>पीत खलाया</u>। मन वेगो द गांव बुलायो है। सूड माच समस्या री लगा मड ही जण वो झाग वोल्यो—'आग पारो काइ विचार है ?

इत म बावाजी घूणी म खाणा नाखर पूक मारन आगो चेतन कर दी। छाणा होळ होळ जगण सामग्या। साग साग घूढो इ निकळ हो। छाणा मू निसरती सी म बाबा राणा रो मूढो घूर घूरन देख हो। उण हैं नारी भरपा— हा। बोटी ताळ ताई नाषी मीठ री छी मून बापरती। पछ बाबाजी बोच्या— यार जीव म बादहो है? इण बोस राणा र साम लेक जीवता-सो सवाल सरका दियो, जिण सु उणरो जी झाकळ खावळ हुवण लागयो। सारली सगळी बात नूव सिर सु शोक्यां र साम नाचण लागगी। बात, जिक सुकण लागया हा, पाछा हरया हुयगा। राणा कोई बोतती। आप कमाया कामणा निगन दीज दीप राणा मुत्ते हो, माठ सिरखी। जाण स्वाता काम नद निगी जोर न सुदायो हो। खाणा स्वीत की मा वधागी ही। बावाजी री निजरा राणा बानो व्यान सु देल हो। झाज सु केई महोनो पती री बात है जण थो जेव सुगाई न क्षेत्रर सामुजीकाट जावती सठ ठरन पयो

हा। बावजी क्षेत्र गरी हैंकारा भरघो- हू।

सिझ्या पडनी ही। गाव छोटो ई हो। कोई पचास घरा री बस्ती ही। ठाकरा रो गाव, नरसा री बस्ती। गाव र च्यारूमेर घवो छावण लागग्यो हो। रात बाप री लाबी चादर त सपेटणो सरू कर दियो हो। पछेरू नीम-खेजडा री डाळचा र चिप्या वठा हा। भिगसर रो महीनो हो। अधार पखवाडो। डाफरकी मोळी हो। टादर राली ओढर फुपडा म सोयग्या हा। लुगाया सासरा न छान म बाध दिया हा । राणी बासळ म चूतरी माथ बठी धूणी तप हो। भायला बन बठा हा। हनाया चाल रयी ही। इत म रावळ स हलकारो मिलण रो सनेसो लेयर आयो। आवण रो पढ तर लेयन को पाछी गयो परो । पण राण रो मन कोनी लागै हो । होळ-होळ सगळा जावण सागग्या । राणो चीपिय सु घडी घडी राख फ्फडे हो क किया ई ओग मिल। राणो सुनो-सो बठची हो। घूणी ठढी पडण लागगी ही। हार नै राणी चठची अर ठाकरा स मिलण खातर चाल्यो । सीयाळ री बधारधुप रात, अर ऊपर सु डाफर री मार। राणा मुकडो बण्योडो चाल हो। रावळ रो बारणो खुलो हो। माम बहता ई चौकी ही जठ दरोगी बठी घूणी तप हो । अधार मे माय बहती राणा जिन-सा लागे हो।

> बुण हुसी ?' पाळियो बोस्यो। आ तो है राण कयो।

'हारा तपायन ठाकुरसा सूमिल सो । व यान बोहळी ताळ सू अडीक है।'पोळिय पेरू बाल्यो । घडसाळ म बस्त राण नथा— तपता ई लाया हा। यसी मिल हो ला। आग और म जावतो बोल्यो। ओर म दीवट माथ तेल रादीयो चस हा। ठान रसा दीलडी नामळ ओडधा दोलिय माथ वठा हा। राणी दोनू हाय जोड पणी सन्मा चयने जाजम माथ देनल लाग्या। ठान रसा बोल्या— अत कर्म कर है! सार सिरनता हाय सूजागा बतावता योल्या— अठ महार कन यठ। तृत्वारा मितर तो है ही साग साग समाहनार ई है। नन यठतो राणां बोल्यो— आज बेवनत दिया याद नरघो?

हू तन कर निना सूज डोन हो। बाहुळी बाता बतावणी चाव हो। पण दिन से जण ही मिलता कोई न कोई बन खठो हुसता। इण कारण सत हुसी ई कोती। आग बाळ ओ टटोळता ठाकरसा बोस्या— कोई मन री बात हुसी किली ताळा र सामन बतावण री कोना। इण कारण हारन छुकट रात ग मिलज न सुलायों है।

आपरो हुक्म हुव तो आ जान इ हाजर है। राण पूरी अपणायत सू कया।

ठाकरसा बोल्या-- इस विसवास सूई ता तन बुलायो है। आ तो आप री महरवानी है क आप मन तनु माना हा।

कोर मानण सु ही कोनी हुव उसो आप रो है थो आप रो ही रसी।
परायो तो परायो के हुव। इण बात र स्वण र सागे सागे ठाकरसा री छाती
रो भार हळको हुवतो सो लाग्यो। मूढ माय छायोही तिहासा री रखावा
उडण लागगी ही जाण गुम्माडी भीज पाछी लाग्यो हुवें। जांगा छोडोडा
नाळजो जागास सावाय छाग्यो हो। का सिरकता ठावरसा बोल्या — जी
रो बात नवू हूं। हासी मत करया। बारो हासी करण रो घ्यान घणा रव है।
इण बात माय गैराई सु सावची है।

इया काई सगळी बाता न हासी म थाओं ई टाळू हू । हासणजोगी बात माय जरूर हास ह । राण कयो । ठावरसा मायल वरद न बुवाबता सा धवण लाग्या— आ बात कोई एव महीना पती री है जद क्षारा क्यराणीसा ग्र ब्याव में मेळा हुवण साह विवरसपुर गया हा। याद दिरावता पता ठाकरसा क्या आपणी वेरी सुजात सर र ठाकरा र देर कत ही हो। व आपणा वहा सिरदार है — आ तर्ने टाई है। सिरनारा र दर म आपणा आवणी जावणी पणी ही रवती। बडा सिरदार काशणी माणत न देशी जण जणा री विजाद मीं रारे हुपायों हो। आ बात आपणा साणत न देशी जण जणा री विजाद मीं रारे हुपायों हो। आ बात आपणा साणत र वाना म पडण लागरी ही। बडा सिरदार कहा ही स्वाणा हा। जठ ताई याव रोकान नी सठटची व की को बोल्या भी। अपरार रवान ह्वण र पल दिन जीमण देयन सगळा न गरी दाह पायी। अर दाह र तज मे ई बा म्हार कत स माणस न माग ली। मन ई मनहूरी र वारण, हा मरणी पढी। राण न साम रण बाह जब सावता पका ठाकरसा बोल्या— 'वन का समळी बात रो गान है है।'

हा, असगळी वाता तो म्हार सामन ई हुयी ही। पण इण सूजी री वात रो वाई लेणो-देणों हैं ? — राणो भाळपण स बोल्यो।

ठावरसा उगर भोळ्यण माथ मन मन म रीसा बळ्या अर ऊपर सू हामता पवा घोल्या— तूं सनक्ष नोनी । "याव र पद आपा उण न वठ ही छोडन पाछा माव आपग्या हा। आ समळी बाना न परवा माथ पिणता पवा ठावन्या बोह्या कोई साढी पाव म्हीना हुया है। जकर पछ आज ताई ना तो रान न पूरी नीद आय है अर ना निन रा चन पड़ है। आख्या पहडता फाडता ई रात अर दिन रोजी न निवळ जाव। उगर बिना ना तो कसूबो ऊन अर ना नाको मन्साता हुव। विरह रो वेदना सू फण्डीजता डाकरसा दोराई य केन तावी निसकारी गांच्या

जगर काई सुबा लटक हा जिका थे ताड लिया करता? राण कया।

ठाकरसा राण री नासमभी माप मन मसोजर रमग्या । सावाणीज भोडा साजन बरी री गरजपाछ। उणारा कळपतो काळजी बार आव हो— 'ल सुण ! तन समळी हीय री बात बतावणी ई पटसी । तन ओ मालमई है म्हार सासर आळा भाटी सिरदार अपण आपन घणा ऊचा मान है। भटियाणी आपर पीहर रो गौरव लेयन आपर बाप म ऊची पढ है। भाटी सिरदार कोई म्हांस रिसती करणी थोडी ई चाव हा, पण अंकर जद व धाडी मारन पाछा जाव हा, उणा र लार बार ही। रात दिन चालता-चालता वत सवार दोन् ई पाकग्या हा । उण आफ्त मे म्हारा बाबीसा रातवासी देगर उणा न बचाया हा। उण उपगार रो नतीजो म्हारो रिसतो हो पण जीवण मे उपगार अर रिसता यारा यारा हुव है। आ दोनारो आपस मे वोई मैळ कोनी हव । योडाक सुसतार ठाकरसा आग कवण लाग्या-- ढोला र ढमाक म्हारो भाटी परवार स रिसतो हयो। अक मजबरी अन रिसत न जलम दियो । उणरो फळ मन भोगणो पढघो । भाटी सिरदारा री घोषी बहादरी र साग-साग जात रो भठो दम ई भटियाणी आपर साग लेयर आयी । म्हारा बाबोसा जीया जिल तो भटियाणी उणार उपगार सुदबी दबी रयी पण उणा र घाम पधारपा पछ अर साग ई राठोडा अर भाटिया र भगडो हय जावण मू उप रो मन चोट खायोडी सरपणी सो हयग्यो । म्हारी भीर राठोडा कानी रसी अर मोक मोव भाटिया न मैं सागोपाग ग्रुड चटायी । अ सपळा कारण इसा बणग्या जिका सुम्हा दौना र जीवण में अळगाव उपजण मामग्री ।

मूड मूडावणो अर गड़ा रो पडणो साग ई हुयो । आपा जद बीदावाटी कानी सूक्षाया हा। गाव म सीयोदाऊ जोर सूफ्स्योडो हो। मन ई जोरा रो साव चढण लागायो। सूपाडो मीरच माध गयो परो अर हू अट ई रमायो।

जीवण-बोध

सगळो गाव सियोदाऊ सू मरतो हो। बुलार आयतो जण होत दूटण लगा जावतो। थी-दा सीरला शेक साम बोडपा ई सी को मिटतो नी। काळको नगरण लाग जावतो जाण सी नाळक मे बढतो ई जाव हो। सो-तोन पर्या इनी ही हास्त रखती। डोल ताव सू निकण छाग जावतो। होळ होळ सी लागणो कमती हुवतो। पसीनो आवणो सरू हुवतो बर साव जतरण लागतो। केई दिना साह बा ही हास्त रखती। नीम कर अजवाण से पासी लेवता खेला मुद्दो मीठ से सवाद ई भूतप्यो हो। जीम जहर ज्यू खारी रखती। सी पहण लागमी जण सीयोदाऊ से और कमती हुवण लागमो। हो। केई दिना ताई हू ई इण से फेट म रयो हो। नी दूबळो ई सीखण छानामो हो।

इण सीयोदाक मन तन सूई नी मन सूई मुडवाळ वणा दियो हो। भटियाणी र दादब सूई हु उथप्योडो रवतो। हु ठकराई छोडर छेक मामूली आदमी ज्यू म्हारी घण कन रवणो चाव हो पण म्हारी ठकराणी म मैं माव ई वो हो नी। रात दिन रो मनमुटाव म्हार हेत री हैनी न खाली ई राखतो।

आ खाली हेली निष्णीन कोज ही। भटियाणी र साम श्रेन डावडी आयी ही जिकी बकत र बायर सूनिकरण सामगी ही। डावडी माणस रो बतायर पर कियो हो। माणन नाई वा घननी पहर श्रेक रात गया मुन्सूबी लेयर आवती जण सामगति क भटियाणी में क्सर है। उणरो नक्सरे मारी पडती। हूं म्हारो आयी मुसायन उणरी पचका म की जाबू इसी मोको उण मन कर ई कोनी दियो। वा आपर श्रुकार म ई ह्य्मोडी रवती। इण द्रुषक विस्था म म्हार मन नमूब मूसामीडी हेत पाछ निया। मुलाबी ठह पन ही। हु सीवण साम गयो हो। पननी नमुखी तेसर आयो। से पहां पत्ती होल पोड़ों मारी हो मन सिरस्तो। तुस ते छी ही। हम नार से सार से हो मन सम्बो देवर पासी बड़ोरों लियों नावण लागों ही। नम्बो देवर पासी बड़ोरों लियों नावण लागों लग मन रमां मालम पहचों लाण नाल री छोरी आज री नामणारी हुमगी हो। उन री चाल मे मरवण रो सा आवष्यण हो। छारयों म नसाय हो। अरपों वरो बाह सो दोग हो। नावळी री दूवर्यों मन नृतती लागों। हू भूरूर्यों अपण आपन अर उजन भी बोर्यो—'दीत दूव है थोड़ों हम दूती है। वर्षों में सारी। मह भूरूर्यों अपण आपन अर उजन भी बोर्यों—'दीत दूव है थोड़ों हम दूती हो। जा स्वार से मी भी भी से सार दवावणी सह वर्षों।

ओर म अघारो भगावण सारू तेल रो दीयो चस हो पण दूत्री कानी क्सबी अधार न और गरी करण म लाग्योहा । ह सीरल ओड्या मूती हो जिण कारण उपर सु दबावणी ताब कोनी लाव हो । मैं सीरल मे हाथ घालन दबावण सारू कयो । घनकी म्हार क्यां मुजब डोलिय माथ बठर दशवणी सरू करधो। जण मन इया लाग्यो जाण होल सुआगरा गोळा श्रेक साग ई निकळ है। आ आग आग र सायर स बडवानळ ज्य बध ही। म्हारी ऑस्या म सुरली दौडण लागगी ही। उण री कोचळी माय हाथ राख्यो जण बा सरम सुभेळी हुवण लागगी। मून भाषा म बोली- इया नाई करो हो। अर बा हिरणी ज्यू ज्यारूमेर देखण लागगी। मन इया लाग्यो जाण महारी जुगा री भूख आज अठ तृप्त हुसी। जको म्हारी मन सदा मुरक्तायोही रयो है बो आज मुळकसी। म्हार सरीर म चेतना रासी सी विच्छ अप सागई दौडण लागम्या हा। धनकी न मैं क्ण महार कन सोबाण ली पतो ई कीनी चाल्यो। आधी रात दळघा पछ जण वा जावण लागी मैं क्यों क तन रोजीन ई आवणो है। मटियाणीओ माणस रो भाव देखर लार रयग्या। बखत ज्यु ज्यु बीत हो माणस रो मोल मुघो हुवतो जाव हो। दारू सू सौ गुणी उणरो नसी हो। माणस र आया पछ तो अफीम रोटसरियो खुलतो ई कीनी। कसूबी कटोर र माय पडचो पडचो ई पूरी मादकता दे देवतो । उणरी मादकता र आग कसुबो भीको लागतो । चन आया पछ इया मालम पहतो क जाण उण रा सरीर उण रो नीं हुयर कोई दूज रो है—सभीन-सुन्य रो उण न मणो चाव हो। ठुकराणी पाळ-सी ठडी हो ता आ रांत सिरत्यी गरम। पनकी आपर अस्तित्य न म्हार अस्तित्य म मिलायन अक्जुट हुम जावती। मनै दमा बातती जाण हू अने साधारण आदमी ज्यू उणर साग जीव हू म्हारी आयो मुलायन। ओ मौकी मन ठुकराणी भी वे सक ही पण दियो नवर्ड केनीन। दश क्या मुलायन मुख्य माग री माय प्योज ही जिकी मिटण लागगी अर पनकी रो क्या कुण सी निवरण लागायो हो। ठुकराणीया म्हारी उपेक्षा न चतराई सू मक्ता रया। पण उण मन अक आदमी रो भी जीवण दियो।

ठाकरसा बोहळा स्याणा हा। जमान राषणा ठडा ताता दिन देख्या हा उणा। मिनवारा स्वभाव जाण हा इण वासन पनवि रो ज्यास पनाई प्रवायम्या हा। क्ष्यदा स सवळा नागा हुन है एक गवाड म कोई नागो कोनी फिर। मैं पतन्दो न पासवान बणावणी चाव हो एक भटियाणीजी र स्वभाव सूबाकफ हा। कोई मौको देखरकाम बणावणा वाव हो पण बो मौको कदई ब्रायो है कोनी। उल स् पहाई विषमपुर मू बाईबार ब्यास रो नता सावस्यो जज बता साळा भेळा हुबर पया हा। पण भारी हुवण र नारण भटियाणीजी साव प्यारमा कोनी हा। उला रो मन हा लोट सु भरपोडा अर पिस लिया हुनोई। ब्राम रो समळी बाल तन मालम ई है। उला विना महारा मन कोनी लाग। दिन्यो तर उलन पाछी छान जल ठीन हुन।

राणी सोच समभर धीरज स् शेल्या—'सगळी बाता ठीक है। राज रजवाडा में रसी बाता हुया ईकर है। पण धनकी बिना पारों मन कानी साग का बात रहारी समभ में कोनी बायी। जुनाई जिसी जुनाई आपर कन है पछ उपर कोई क्ल धोडा ई लायोडा है। '

ना मुणता ई ठावरमा ठडा पडम्या अर बोस्या—'शा बात धार समक्रण री कोनी। धारो वाम तो वता ई है उलन पाछी लावणी है।'

ममभण रीकोनी। घारी याम तो ब्लाई है उलन पाछी लावणी है।' राण हकारी भरता कथी—- बल ठीक है। उल सूमिलर रूली बात करसू। हकम हब तो अवार ई जाबुपरा।'

राणो घर कानी रवाना हयायो । मन मन म ई सोच्या जाव हा--ओ भाई डो जब रो जिणन रात्युनी दनी आव । गाव री गळचा सोयगी ही। राण भाटो लोलर ललारो करघो पाछो भाटो लगायो। भूपह रो बारणो

'हा ।' ठाकरसा ससतायर बोल्या ।

ओढाळघोडो हो। मांय बडर दक लियो। सोवण लाग्यो जण घरिधराणी पुछ्यो- आज तो भाईड मन बोहळी हताया नरी !? काय री हतायों करी राज पड्तर दियो 'उज न धनकी विना नीद कोनी आव । धनकी किसा फल देव ही ? आ बात म्हार तो समभ में को

आयी नी । ह तो अक ई बात समझ्यो ह क धनकी न पाछी छावणी । रावळ री बातो ब जाण अर बारो राम जाण। पसवाडो फोरती धणियाणी बोली अर पाली मोवण लागगी। राणी आबी रात सोचतो रयो-लुगाई लुगाई म घणो करक है। पण

उणर समभः में की कोनी आयो ।

धर कूचा धर मजला

पतरासर छोटो सो पाव है। बोडी सी बहुती। मुख मे एक मीठ पाणी रो दूवो अर अंक सार पाणी रो। अंक जोड़ों हो कि में बान तोई पाणी रवती। करती रा करती रो बनात हों। गांव मुद्दत पढ़ी र सारण माथ भाटी सिरदार रो राज हो। ग्रह पड़ी माथ राठोदा रो घरती हो। तीन घड़ी माथ बीवायों हो अर तार पाय का माथ बीवायों हो। बहु पड़ी माथ राठोदा रो घरती हो। तीन घड़ी माथ बीवायों में प्रति कर तार रा राज हो। ग्रह पड़ी माथ विवायों से पाय की साथ की स्वाय राज रा राज हो। यह पड़ी माथ विवायों से पाय की साथ की साथ की साथ पड़ी कि कर ता है। जिस रात दिन तक वार रो पूठ माथ ही हाथ राजता। ती तीन ज्यार गवादों ही जिस रात दिन तक वार रोजों हो। यह ही हाथ राजता। यह विवाय से प्रता साथ राजता। उस साथ ही हाथ राजता। अप विवाय में मुल्या रोजों के साथ ही हाथ राजता। अप विवाय से साथ सी का प्रता राज्य हो। वार रोजों हो साथ ही हाथ राजता। अप व्यवस्था मुजारी क्लावता। अकर पुजनिवृत्वी वहां ई जीवट आळा हा। आपर प्राक्ष्म सू प्रतासरन ठाकर रो सूची म प्रधान

वण दिराय ियो हो। भाटी सिरदार ई बसत देवलत आसरी छेवता।
सुनानसर रा सिरदार धोनळसिंह रा लास ठानर हा। दुनर्नामहनी र सान
दा तीन लडाइया में गया हा। बठ भोली ईन्जत हासस हुयी ही।
सनळसिंहनी र धान पपारपा पछ दुनर्नामहनी निक्समपुर जावणो छोड
दियो। दुन्तर्नास्त्रजीर अंग कुंबर हो जिल से नांव भनवतीसिंह हा।
भगवतीसिंह भी आपर्र बागोसा जिया तलवार से पणी हो। पर पराणो
रजपूती रो योथी अकड मू नीर्ण हो पत्रतो हो। मूठ से मार र नारण सगळा
मान देवता पण रिस्तो करण री देळा सगळा नान म सळ धालता। इण
कारण भाटी सिरदार भगवतीसिंहनो सुआरो दो सो रिस्तो करयो। पण
जण रिस्त में बरावरी से मार की सहस्त्रो सुला रो तकारो हो। इल तनाव

म भटियाणी रो गरव भारी पड़तो हो अर अहसान उठावती भगवतीमिह।

कुवर भगवतीसिंह राषणकरा बरस बीदाबाटी मं बीत्योडा हा। उणरो सास भावलो राणो अनुप्रसिंह साग ईरयो। बाबोसा र धान पषारघा पछ ठाकर भगवतीसिंह न केई कारणा सूगाव मं ईरवणो पटघो।

भो जमानी अठारवी सदी रो हो । रजपूती री मूठ बीली पडण लागगी है। आल राजबूतान म मारपाड रो बजार गरम हो। काळा री पोजा बारवार जयपुर जोधपुर अर उदयपुर माथ घावो मार हो। विजमपुर अंक कडण पड हो इण बास्त सठीन आवणो उणा रो समब भीनी हो। तो ई

प्रसावाटी ताई उणा रो धावो चालतो ई रवतो । दिलणिया र लार-लार विदारी ई पादो मारता रवता । इण वास्त वाधावास तार्जूजीकोट अर स्वमन्त्र रा सास सास चाणा हा । वेलावाटी मू आवणिया पावेतिया न मारण म ई रोक अर वीदावाटी माम विम्मपुर रो अधिकार रास । राजमूत सोसला हुवता जाव हा । राज राज म पडयन चाल हा । अने भाई पूज भाई ने मार न राज हुवयणो बाल हो । भाई मोई रो दुसमण हो । आपर स्वास्य रो पूर्ती साक राजा दिलाजा न अर चिंडारिया न मतत वास्त नृतता । रता। एक लालव मायकर राजमूत रोवाण हुवतो जाव हो । व मन मू अर परमा मू ई पिरता जाव हा । राज दरवा। रोक स्वारी में रातिव न वास कर

पातिरिया रो जममट लाग्यो रवतो । वाजिद अली द्याह बादधाह बणम्या हा। महफ्लिंज जमती रवती। पडयत्र चालता रवता। अर राजसिहासन वन भाई अर बापर सून सुभरसा रवता। पण उला हन सोवण समभण रो

बलत कोनी हो। समळा दांक माकरा दास अर स्वारण रा सीरी बण्योडा हा। छोटो सो ठाकर भगवतीसिंह वातावरण र साम पाल हो। गुलामा री श्रेक साबी क्तार समळा र साम पाल हो। इला गुरामा अथवा गोला री गोई ईजत आवक कोन. हो। उला र ठाकरा रो मरजी सद सूबडो बात हो। उला री बन बेटी ठाकरा रो मरजीटान हुवती। मरजी रो श्रेक रूप पनकी हो। जावग री त्यारी करी। राहक कन जायन टोडियो सायो। भी पायन त्यार करयो। आ समळी बाता न पाच सात दिन हुयय्या जण अंक दिन दोषार ठाकरसा तावब में बठा अठीनसी बठीनसी कर हा, राण कन जायन जमाताजी री करी। ठाकरसा इच रो भरम समभय्या अर साळ में बैठन बात करण रो केय न उठय्या। ठांकरसा समळी बात सुणी अर हकारो भरदी। उन्हास के स्वीत करण रो केय न उठ्या। ठांकरसा समळी बात सुणी अर हकारो भरदी। राणी दिवरों गणी हैं रचा है तवण री बात बतायो।

राण दा तीन दिन सोचण विचारण मे लगाया। चुपचाप विकमपुर

विक्रमपुर

मुलतान सू न्हिली जावण रो मारग रातीघाटी सु दो सौ श्रेक पावडा आयुण उतराद हुय न जावतो हो। रातीघाटी रा खदेडा आखी साल पाणी स् भरघोडा रवता । घोडा बर बळता सारू मार्ग माथ सेवण रालाबा-चौडा वीहड हा । मारग माथ धार्डेतिया रो भग कोनी हा। विण्जारा सुध मारग रात दिन आवता जावता रवता। इग्यारवी सदी पछ पूगळ रा भाटी तानतवर बंगता गया । हेन्डो ई बंबणा बद हयायो हा । जाट मारग म धाहो मारण लागग्या जण बिणजारा इण मारग न निरापद नी जाणर मुलतार सु तवरहिंद (भटिंड) हुवत दिल्ली र मारग आवणी जावणी सरू कर दियो। हाळ होळ आ जागळु देश बणस्यो। जाटा रा गाव वसण लागम्या । पूगळ रा भाटी रातीपाटी ताइ घाडी मारता रवता । इण वासत रातीघाटी जाटा अर भाटी सिरदारा र ऋगड री खास जागा हमगी। पण जाट स्याणा अर समभदार निश्ळघा । राजपूता न राजपूता सू मिहाय दिया अर आप अळपा रयग्या । राजपुता भाटी सिरदारा न पराजित नरन रातीघाटी माथ विकमपुर बसायो। मिन्र देवरा बणाया गढ बणाया। होळ होळ बिक्रमपुर तरकी करण लागग्यो । बस्ती सुगाव अर गांव सुशहर बणण लागम्यो । घरती रा भाग पुरम्या । अठारवी सदी ताइ लगीलग बधतो गयो । वित्रमपुर रा राजा मुगल राजघराण म् चोला रसूनात राख्या । मुगला र दरबार मे पचहजारी मनसबदारी रो ओहुदी लियो । उत्तर सु लेयर दिखण ताइ मुगला री सना म सनापति रया।

समय र प्रभाव सूमुल सुविधावारी लोज हुवण लागी। किलो छोटो पडण लागम्यो। च्यारूमेर ढळात री जागा देखर तूव क्लि रो निर्माण करायो । खाई थणाई । रात भाट माय कोरणी नरायर महल माळिया बणाया । चानणी गत में क्लि कवन सो चमकतो । सहर री बस्ती बामण बाणिया री हो। ब्यापार दिनादिन बमानी जान हो। मुगला र साम दूर दूर ताद आहमण वरणन जावता जण ब्यापारिया न आपत साम के जावता । कारावो सदी र आबता आवता विक्रमपुर नामी चहर बणाया । मुलतान सू ईसीयो मारण हुवण सु ब्यापार री मदी वणण कागया ।

दीया बली रो बलत हुमग्यो हो । ठड पडण लागगी ही । मिटर म आरती हुवण लागगी ही। भालर री भणकार दूर दूर तांद सुणीज ही। रात शहर न आपर आचळ र ओळ सोवावण लागगी ही। गळी कुचा म सोपी पडग्यो हो। ठइ री माटी परत घरा री छना माथ आपरा पग राखर शहर म उतरण लागगी। राणो दिनूग रो र्वान् हुयाडो आस दिन चालतो रयो । भालर वेळा बी गणेशदार कन पूग्यों। शहर केन पूगण र पला राण आपस माळै टोडिय रा दोन् कान उतारन खूज म घाल लिया हा। शहरपनाह री पोळां दवीजण लागगी। सिया भरता लोग धरा म भेळा मेळा हव हा। डाफर लोगारा गाभा लपेट ही। राणी होळ होळ गणेशजी री बगेची कानी चाल हा। बा अंक बीध में पिरघोड़ा हो। चैयो रूमेर बाढ छाप्योडी ही। सामन अन फाटा हो जिका खुलो हा। माय बहताइ दाव हाथ कानी बिरखा रो पाणी कुड में लेवण बासत काकर नाखर पायतण बणायोडा हा । जीवण हाय गानी जाळ ही। जाळ र हेठ घूणी ही । सामी साम गणेशजी रो पनी मिंदर हो। भिंदर रै सार ई पाताळेख्दर गिंद पावती रो मिंदर हा। गणेशजी र सामै दीयो चस हो। पुजारीजी महाराज साधना कर हा।

राण जाळ कन साढ सुखतरन चणन जकायो। पलाण उसारन आळ री पडी र सार राख्यो। मोरी खूट र बायर टाडिय र साम सबण रो बोरो राख्यो।

अवाणचूनी अवाज मुणर राणा वा यो — ज माठाजी री। आता मैं हू। ज माताजी री। वण आया अवाणचूक ई ? पूगण भ बोहळो मोडा वर दिया नी ?' पूजारीजी पछ्यो।

पुनारीजी अन साग ई पणा सारा सवाल नर नास्या। राण मूर रो ढाटो खालता उपळो नियो— याडो नाम हुवम्यो। टुरियो तो येगो ई हो पण माराम योडी ताळ ठरव्यो हो। नन आवता राणो बोल्यो— आप सोगा रा वरसान नरपान बाहळा दिन हुवय्या हा। सोच्यो मिसणो ई हुय जासी अर छोटो योटो नाम है किना ई सबदाय सेवा।

को तो चोलो करघो। पुजारीजी पाछा माय बहता बोल्या।

गणवानी र मिदर सार अन औरा हो। आर म दा माचा पश्चा हा। अंक ता खाली हो अर अन माच औदण विदानण रो सराजाम रश्चो हो। राण सराजाम लाचन माच माच राख दियो। भाटो इनन वाछो आयो अर बारणो डकन दोनु नणा वाली करण रागाया।

भसायटो हुबताई दोनू जणा उठर कर री बाम सलटाय न आप आपर बाम सागया। पुजारीओ पुकाधर मबहम्या। राण साढ न वाणी पायर नोळ बतायन गणेनजी री बनवी र सारल बीहड म चरण सारू छोड दी। बूची साढ चरण सागयी।

भगवान बारा सह साथ हा। बीळ मकराण भार री बिण्णोडी मुस्ती मूद बोल ही। बुस्त री पसी रिम्मण पना म र सही। माणनारी यह स्तरण करवा पछ पाताळाकर रा दस्सण करण बासत चार हो। माणनारी यह स्तरण करवा पछ पाताळाकर रा दस्सण करण बासत चारा हो। कोछ बारण स छोटी-छोटी पढ़वां र सार सार मीच उतरथा। पारवर्ती निजनी री जुळेरी बण्योडी ही। पारवर्तीओं काण वासाव नरणा साम क्या ही। सकरणा दें मांच कोरणी करम पारवतीयाच्चाया परचोडी बणायाडी हो। विवस्तिय माथ तिपाई माथ राहयोडी तास री कळती त बृद बुद शाली टक्च हो। अळ्य सु देसता हया मासम यह हो जाण निर्वास्त में माठा बार बच्चायाडी है, यह साम लामाय देखा सु सो भरम मिट हो। कारीमरी मृद बोत हो। जळरी र हाय लगायन तिलाह अर आस्या माथ परेसो अर पारवता र चरणा म माथी निवास मगल कामना साह आसीवीन माथा। दराल चरन पाड़ी सहर करनी बादस।

शहर म मिलण भिटण सारू गणेश वगचो स बार निकळघो । डोडी-डाडी दरवाज कानी चाल्यो। डाडी र दोना कानी सूकी सेवण डागरा री खायोडी ऊभी ही। कठई कठई पोठा बर भीगण्या सवण माथ पडी ही। रात न ठड र साग भीणी भीणी घवर पडी ही जिनी सेवण माथ मोत्या रा दाणा ज्यू चमक ही । घवर री उण ब्दा म सौ सौ सूरज अेक साग ई निखरता दीन हा। तावडो चिलक हो पण पून री ठड स् उण रा पग निमळा हा । ठर ठरन भारती पून स् गामा द्वील स् लपेटीज हा। हाय ठढ स् ठर हा। आगळघा रा परूठड सु अवडीज रया हा । राणा गणेश दरवाज सु सहर मे सडधा। च्यार छव रुखाळा माच माथ चठा तावडी सव हा। दरवाज र जीवण हाय नानी दो मूण रो हूचो हो। माळी कूचो वाव हा। बेळचा पाणी सू भरी ही। मिस्ती मसक भर भरन पाणील जाव हा। कोठ सुपक्षाला भरीज ही। पणिहारपारो भीड कूव साथ ही जिका कुभारा जाटा अर माळघार घरा री हो । सासर खेळपास् पाणी पीव हा । सूरडा अठीन वठीन ना ठहा । गिडन तावड मे पडघा सिसन हा। रामच द्वजी र मिटर वननर हुबती राणी बजार मं आयो । बजार रो दुकाना खुलगी हो । धान री दुकाना काग मोठ, बाजरी, गवार अर मूगा री त्रिगल्या लाग्योडी ही। विदया अर कबूतर बठीन-बठीन विसरपांड नाज रा दाणा चुगहा। डिगली र विच साठी राप्योडी ही। तावडी बाट लिया दुकानदार धान तील हा। सासर फिरता पिरता यान म मूडी मारण न सम हा। ग्राहण यान सरीद हा। यान री दुनाना र सार पसारमा री दुनाना ही । पसारमा री दुकाना र सारकर हुयन

अवाणज्ञनी अवाज सुणर राणा बास्यो — ज माताजी री । अने ता मैं हूं। ज माताजी री । वण आया अवाणघूक ई ? पूगण म बोहळी मोडार्ट कर दियानी? पुजारीजी पृछ्यो ।

पुनारीजी श्रेन साग ई पणा सारा सवात कर नास्या। राण मूढ रो ढाटो क्षोलता उपळो नियो— योडा नाम हुयन्यो। टुरियो तो वेगो ई हो पण मारण म योडी ताळ ठरम्यो हो। कन आवता राणो बोस्यो— आप कोगा रा दरसण करपान बोहळा दिन हुयम्या हा। सोच्यो मिसणो ईहुय जासी अर होटो मोटो नाम है किंको ईस्तरत सता।

को तो चोखो करघो। पुजारीजा पाछा माय वहता बोल्या।

गणेवाजी र मिदर सार अन ओरा हा। ओर म दा माचा पड़पा हा। अने ता दात्ती हो अर अन माथ ओडण विद्यावण रो सराजाम पड़पा हो। राण सराजाम लायन माच माप राख दिया। साटो डन न पाछा आयो अर बारणो डकन दोनु नणा वाता न रण लागया।

भस्रावटो हुवताई होन् चणा उठर जरूरा नाम सस्टाय न आप आपर नाम सामया। पुजारीजी पुजार म बहम्या। राण साढ न पाणी पायर नोळ लगावन गर्मवजी री वनवा र सारस बीहड म चरण सारू छोड दी। बूची साढ चरण सामगी।

राको गणानी रा दरसण नरण न चाल्या। घोसाल परसा गर्मेया मगवान वटा साढ़ साव हा। घोळ मनराण भाट री विष्योडी मुस्ती मृद्ध साल ही। मृद्ध री प्रवी विरक्षा पता म रस ही। चावचाती रादस्यक करणा पछ पाताळ कर रा दरसण नरण वासत थाराये। कोछ वारण स छोटी छोटी परमा देशा रा तार तार तीच वतरणा। पारवता सिवानी री ठळती वण्योडी ही। पारवतीओ छाल पासान परमा साम ठळी हो। मनराण रे माटे माव निर्माण नरन पारवती माच पाय काम परमा हो। कामी ही। शिव सिंग माप विपाद माय रास्पोडी ताव री नळती स बूद बूद पाणी टपन हो। अळ्य मू देसता दया मालम पड ही आण पिश्विम दो भाग जोडर वणावडी है पण हाथ बतावर देख्या मू को भरम मिट हो। बतावरी हो काम ही। बळती र हाव सामान तसा कर आरवा माप वेरेचा अर पारवती र परमा मापी निवार साम कामना साल आवीवांद माया। रदसण नरन परवेशी बहु वन्हों पाल्या।

शहर म मिलण भिटण सारू गणेश वगेची सुबार निकळघो । डांडी डाडी दरवाज कानी चाल्यो। डाडी र दोना कानी सूकी सेवण डागरा री खायोडी कभी ही । कठई कठैई पोठा अर मीगण्या सेवण माथ पडी ही । रात न ठड र साग भीणी भीणी धवर पडी ही जिनी सेवण माथ मोत्यारा दाणा ज्य चमक हो। घवर री उण बूदा म सौ सौ सूरज अक साग ई निखरता दीख हा। तावडो चिलक हो पण पून री ठड स उण रापग निमळा हा । ठर ठरन पालती पून स् गाभा डील सूलपेटीज हा। हाथ ठड सूठर हा। आगळघारा परूठह सु अवडीज रया हा। राणा गणश दरवाज सु घहर म बढघो। च्यार छव रुवाळा मांच माथ थठा तावडो लंग हा। दरवाज र जीवण हाय कानी दो भूण रो बूबो हो। माळी बूबो वाब हा। बेळघा पाणी सू भरी हो। भिम्ती मसक भर भर न पाणी ल जाव हा। कोठ सूपलाला भरीज ही। पणिहारचारो भीड बूच माथ ही जिनी कुमारा जाटा अर माळघार घरा री ही। सोसर खेळघां सूपाणी पीव हा। सूरडा अठीन बठीन नाठ हा। गिडक तावड म पडचा सिसक हा। रामच द्रजी र मिदर कनकर हुबसो राणो बजार मे आयो। बजार री दुकाना खुलगी ही। धान री दुकाना आग मोठ. बाजरी, गवार अर मूर्गा री दिगरुपा लाग्योडी ही। विद्यासर कब्तर अठीन-वठीन विसरघोड नाज रा दाणा चुग हा। दिगली र विच साठी राप्योडी ही। ताबडी बाट लिया दुवानदार धान तील हा। सासर पिरता पिरता पान मे मूढी मारण न लग हा। ग्राहक पान खरीद हा। पान री दराना र सार पसारघो री दुराना हो। पसारघो री दुराना र सारहर हथन मारा सरमीनायत्रीर मिन्र जाव हो । मिदर घाटी उत्तरमां पछ पाछी ऊत्राई गुम्द हो । घाटी रो उतार सागीडो हो । मारगर दोनां कानी सलारां, विसायतिया अर रगरेजा रो दुनाना ही अर घर हा ।

दो घडी दिन चढम्यो हा । पट ढकी जणआळा हा । दशनार्थी खाथा खाथा मिदर कानी जाव हा। छातीसूणी घाटी दोरी ही। बहली रो आवणो जावणो मसकल हो। मोटचार-लुगाया री भीड तर-तर वधती जाव हो। राज रो मिन्द हवण सु उण री पूरी मानता ही। पुष्टिमार्गिया री मिदर हवण र कारण लक्ष्मीनायजी री दिन में दो तीन भांब्या हवती ही। चढत सुरज साग भीड ई बघती जान ही। राणा ई इण भीड म सामस हवन ठेट साई धना खावतो आग वधतो जाव हो। मिदर सातरा बण्याडो हो। सगळी मकराण भाठ स बणायोबी हा । मुरत्या मृढ बाल ही । सिणगार फबती हो । लक्ष्मी साचाणीज लक्ष्मी ही । सान अर हीरा र आभूवणा सु बणाद करघोडी लक्ष्मी पळपळाट कर ही। लक्ष्मीनायजी सामात् लक्ष्मी रा नाथ ई लाग हा। राणी सोच हो-लक्ष्मी ! बारी माया अपार है। बार विना लाओ जीवण ई अकारय है। चार विना ना तो घरआळा पूछ सर ना जात दिरादरी आळा। राज-दरबार मं भी बार विना मान कोनी मिल। बार रूठण सागई सगळा बिराजी हुय जाव । दरसण करन तुलसी चरणामृत अर परसाद लयर बो पाछो बार आया अर च्यारूमेर घूम क्रिन मिदर देखण साम्यो। रातीपाटी राखन्डाइता गराहा क हामी राहामी चणा म समाय आव अर पाछी जोया ई पता का चाल नी कहायी कठ गया ?

राणा दरसण करन पाक्षा आयो अर जामर चितन सांची। घोडी ताळ हथाया करें। एठ सजनता रहेर काणी चात्यो। क्वीस र सारे बार-चाल्या जाद हो। पणदा दरबाज कर मुम्सीर काणा र कुच केन हवती कसाया री बारी काणी हुयन हुक्सकोट कर निरुद्धती हो। आ सगळो घारण भाइक्या सू भरिया हो। हणा म सूरवा दोडता रहता हा।

हकमकोट र साम दो सौ पावडा माथ अनोपसागर हो जिक माथ च्यार भूण लाग्योडा हा। दूच में अथाग पाणी हो । राज राघोडा अर सासर अठ ही पाणी पीबता । कूब र सामन ई नुवो गढ खडघो दीख हो । सामन किल रा मुरज हा। नागी तलबारा लिया आदमी रात-दिन पोहरा देवता रवता। गढ री पोळ र साम ई नागी तलवारा लिया आदमी योहरो देवता। पोळिया गढ़ मे आवण जावण बाळा रा पूरो ध्यान राखता । उणा री निजर सु बचर जावणो मूसक्ल हो। गढ र डाव हाय काती जगी तळाव हो जिणर पीद मे कदई पाणी हुवण रो आभास हो ! गढ कन थोडी चल पल दीख ही । अठ सू आग तो सवण, धतूरा, आकडा अर बोरटचा री फाडनपा ही। कठई वठई जाळ अर गृदघाई निजर बाव हो। गढर सामन जाळ अर खेजडा रो सागीडो भुड हो। गढर उतरार्ट कोई च्यार सौ पाच सौ पावडा पछ सजनसारो डेरो हो। राज रा ताजिमी सिरदार हवण सु उणा र डेर सार दरोगा री दो तीन भूपदयां ही। गोला सिरटारा री हाजरी मे लाग्या रवता। दरोगण्या ठुनराण्या री सेवा चाकरी मे रवती। दायज म डावडी डावडा देवण सारू इणा रा टावर काम आ जावता । जवानी रो पाप उतारण म नाव इणा रो ई हुवतो। जर खरीद गुलाम ठाकरा र जीवण रो श्रेक खास अग हो। अपाप भर पुन राभागी हा। फुठरी गोली ज क्दई ठाकरार चित चढ जावती तो भाषी जवानी ठाकरा र साग काढती अर बूढाप मे नाव र परण्यांड कन आ जावती। उण सूपला ज भूल सूपय भारी हम जावता तो खसम र नाव सु सगळो पाप धुप जावतो । ज कर्र पासवान रो पद मिल जावतो ता उण रो जीवण सोरो निकळतो अर बुढाप मे ठाकरा री तरफ सुपेटियो मिलतो रवतो ।

राणो क्लिर पसवाड सृह्वता हेर का नी निकळायो। डर री सामळी भीत रोडा लगायर बणायाडी हो। भाठा लगायाडी बांतेक ऊषी पोळ हो। असवाड पसवाड री भीता काषी-पाकी ६टा सूबणायाडी हो जिका माय लारो पूनी लगायोडी हो। लाग्स छेडबाड लगायोडी हो। अेक भाटी ई हो। वहताई पोळ र सायन पोळियो माच माच बठो हो। सामन बायळ हो। बायळ सूआपे अक ताबी घोडो मूतरी बणायोडो हो। चूतरी र सार ई मगरा, साळ अर कोटट बा पड ही। आ बमळा माघ ठानरा र रवण पा पोडण रा अर रसोवड रा कमरा, परीडो अर ओर ओरड धा बण्योडो हो। गीचला कमरा बर लाळ आवण बावणियार वठण बायत हो। ठाकरा र ऊपर सूनीच आवण री मायन सूही पेडणा बणायोडो हो। महांकर अमरी जण दाक रा चयक अठ ही ढळ्या। रात न पासवाना सूहेत मुकाकात अठ ही ह्या करती। पूतरी राधर कार पडली दाक री जती हो जठ भात भात र स्वारा री शाक काढीजती। कारल छड चीक हा। मायन सका अर सूभारिया हा जिका मे जुध रो समान जर दूत्री अटब बडण राक्योडो रतती। चीक र मोड बार लाबी चीडी बायळ ही जठ गाया मस्या घोडा अर ळठा री ठाणा ही। सेवण री दूपरी ही। बळीता पडणो हो थवडणा रो एरावडो हो। लकडी रा मिरडा हा। ळटाव मू बण्योडा दुमजली सजनशा रो डरो सातरो रीख हो। बेर र च्याकमर जाळ गढी रर बावळिय रा इक हा।

राण कुटबा साडुबा रो अक ठाठो कियो। लाघो बदळतो बदळतो सज नता र डेर कन पूर्यो जल दूपरो ढलव लागगी हो। पोळियो सुस्ती रा पाठ रूर हो। पूर्द सूहाळ होळ धूवा ठठ हा। पाळियो माप माग बढघो बठघो चिनम पीव हो। गटो माच र विरास पढघो हो। राण न पीळ र माय बढतो देखो जल स्तारो करन पूछाो—

मुण हुसी ?

ओ तो हूबळवतो रामसरआळो । राणो बोल्यो ।

आयो पघारो सा । ज माताजो रो । आज अवाणचूक ई किया आयग्या ?

क्षायन्या ' ठाठो राखतो राणो बोन्या— इयाई काम सारू आया हो । धनकी

री मादीबडी मेली है सादेवण न आधाहू। 36 साभका 'क्षीतो आ छो ई करघो। काम रो काम अर मिलण रो मिलणो।

'आ ही सोचन बायो हु। समान ई पुगाय देम् अर ठाकरसा सुही ज माताजी री हुय जासी।' स्ताली चुतरी देखर आग कयो — टाकरमा अठ कोनी दील, बार पधारघीडा है काई?

'हा ठाकरसा थोडा दिना पली ई उतराद न रवाना हुवा है। आवो, बठो।' माच रो सिराणो खाली करतो बोल्यो। पछ चिलम फाडर गर्ट स् तमासू काढन चिलम पाछी भरण लागग्यो । आग कदण लाग्यो—

'दो श्रेक फक खाचलो । पछ मनसो कर नेम । 'फर्क तो खाचाला ई। हेरो बस्ती स् अळघो पड।'

विलम बेताय न दवतो चनो पोळियो बोल्यो- लो सा ! ' राण 'हा बंपर साफ रा पुलो काढर साफी माथ लगायो अर विलम खात्री। पछ हाल चाल पूछण लाम्यो । कूण क्ठै गयोडा है कद आसी । सगळा समाचारा रो भुगतान हुवण लागम्यो । राण री आस्या चयारूमर छोह लेवती फिर ही ।

पोळिय सनसो देवणन चा या । बापळ न पार करचा चुतरी र सार जनानी डघोडी । माय बहर हैली पाडपो । माणस रा पाछा पहुतर आयो । घनको रो नाव सूणीज्यो । पोडी ताळ मे पोळिया पाछो आया अर बोल्यो--- आप डचोढी म बंडर पेडचा नन महचा हुवा अबार आ आय । राणो ठाठो उटायन आग चाल्यो । राण री आंस्या च्यारूमेर री जाणकारी लेव ही। पावनी कठ ढळत तावड मे घूड म

सिट हो। रिसाल म बबतो बूनो हुमग्यी जण डेर मे पाणी रा ढाचा ढोवण सारू छोड दियो । यूई माथ ढांचा ढोवता ढोवता टाक्यां पडगी ही । सगळो हरो मूनो सूनो लाग हो। मिनला री चल पल बोनी दीली। राणी मन में राजी हुयो। इपोडी में बढर माड वन उपर मृउतरती पेडधां वन सको हुसम्यो। अ जनानी पेडचो ही। पेडचा री ऊचाई र साग छात अण्योडी ही। चानणी आवण वासत पहचा री ऊचाई र हुँमाथ सू तिरही भीन च्यार भाठ मायू ल रो न ठकराण्या रो अठीन मू ही आवणो जावणो हुवतो । सांसरी सारू पास पूर्वा स्वठीन सू ही आवतो । सास्तरा रो प्रारण आ ही हो । अयारूपेर सूनवा हु हुनण सू चेजडा बोरट्या सवण यहूरा अर आकडा चोलो तर पनन हु। अरारी परवा पछ लार्स बारण सुआवणो जावणो नाग रो कोनी हुवतो । जरण अर सूरडा अठीन आवता जावता रवता । लारस भाट र सामोसाम सामीधी जाळ अर मूरी हो जिल म सूत भूतणी रो यस हो। अठीन सासर भूत्या मटक्या ई आवता । गूदी र नोज कभो ळठ हो को दोलतो ने रस्त

लाया पर्ग उठायर गणश दरवाज काली चाल्यो ।

राणो गळी र सार सार चालण लागम्या। गळी डेर र लारल बारण मन जायर ब'द हुवती ही। जो वारणो लगायां खातर हो। बलत वेवखत माणसा

असमजस

लाहुवां रो ठाठा लेयर पनकी पाछी पडण लागी जण इयां मालूम पडपो क बीरा हाय टूट है। हार्गा र साग मन ई टूटवो जाव हो। पोडपां काटण सागणी हो। भार सू टूटतो मन डील न तीहतो जाव हो। पर पनत बारण कन पूर्गी जिल न उपरो सास जल हण सागयो। बारण रो सारो तेयने उभी हुया। उपर पर माय जेन नृवो सवाल पूमर पाल हो। सिलाह माय पत्तीन री बात आवण सागगी। वी सिलाह माय पत्ती फेरपो पण बठ की कोनी हो। मन रो वम हो। बम अस्पिरता री मा है। सामल औरिय माय पुरावती री सायण मिठवोती बार लागी। पननो रा डग डाळा देखर बा माथी चाल मूँ उपर कन झायी। बोली—'इता-सारा लाडू कठ सू सारी?

मा भेज्या है।

'तो इयां आमणदूमणी कियां ?'

याद आयगी।

'मिल्यां न किता बरस हुया है।'

'दो-तीन बरस।' धनवी याद करती बोली।

मन दे देखं।' भोगळपोर परवां माध गिणती बोली---'तीन बरस तो मान पुत्रप्पां न हुमाधा अर उप ग्याप्त रस्स पनी सिसी ही। प्राव्यान से मिलपो कोई मिलपो कोनी। अर अर तो थीरो गपना आवणा देवर हुमाया है।' मिठदोणी अर मांत्री निस्तवारी नास्यो। कोटडी कन भनकी न छोडती बोली—हूतो कठीन जावती कठीन रीई बातां संवक्ष लागगी। अरवा परीड कानी बूही गी।

धनकी ठाठो उतारन आळ म राक्यो। बीन इसा मालम पक्यो जाण कृष्णपृष्टि छाती रो बड़ी भारी भार उतारन राक्यो है। "ण भार मे अक मोह हा अक मिठास हो। नूसो हो जिकन सा पाव ई कोनो ही अर पावती भी हो। अळगो राज्यो पाव अर कन राज्या री इखा ई राज्य। बी मे सक अंतिर्चण है शाक दोविरद हैं निमूत भी कई बांस है। वेर्र भी धनकी थी भेक्सी में लेवणी पांच हो जिके स जीवण री अर्जव गजव हो। रस सर्पी हो हो। "।

हो। होत बातों से बज़त हुवायों हो। मिठबीली सीबट मार्च राज़ीक ही मू ज़ बांत हो। दूंकराणीं तो बात हो अरोतन करन ग्रेंबण कामाया हा। सामने बोन में तुम त्यारतों, इब नृ देवर धनकी आपदी को नृते से बारणी और मह मुंती हा। पून उनावडी बात स् बार्च हो। मान ही मान प्राम्य में विवर साहा तरा ब्यु है। ब्याह्म सर्वाच्या होम ब्यु बहात हो, देवो हो अर ही टूटपोटा विचारा मी महस्त्रीयों प्रकास सोच ही आपद स्वाम आपदी आपी हो बात स्वाम मा अर स्वाह से हेड बल लोगा स्वाम निवार राज्य में सुनावा माल मर हा अर खुम के

विगरपा विधारा री कबपा नगई टूट है। अठन गैर जुड हों । टूटती जुडती आग वप ही। वनकी विधारा री तर टूटती जुडती प्रसादा प्रर हों। व पण आ सगळा पे इतिहास इनसान मृत्यारे हैं । विधार नक होंगी व पण आ सगळा पे इतिहास इनसान मृत्यारे हैं । विधार नक हैं जीवण वास्तविक पटनावा रो उर । जरूरत जीवण री जबरी भूग है। भूव री परिस्कार विधारा री छेड़ी। धर्मनी अर्व जरूरत जीवण री जबरी भूग है। भूव री परिस्कार विधारा री छेड़ी। धर्मनी अर्व जरूरत रीम्प्रनीशिव स्थाप स्थाप हों चार का उत्तर हों। व स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्य

क्षाण जणर साम्मृकी हुयोई कोनीम्म केई दिनाम्याद कोमी। करी तोग्वी विचार ई को करयो नी १ जिक दिनाधननी अठ अधिभित्र दणरी दिवस देशे सराजामित्रमा रासाय करयो तो क्षिरमायती म्योली व्यार जिन्हा में कंदि वाजा आयरी है। जिल्ला या तुसर बोली म्यायो मित्री है। रोटी है। रोटी मीता है। रोटी वाजा के दूरि है। के वाजा जिल्ला हुयारी मराजी है। के वर्ग निर्माण के विचार के विचा

ा (क्षांस्वतको हुपड चिना में साम्योदी ही। जा तो किणी सी स्वेय सक सर ना सला मुंतकराहक । माय पी साम्य गीसी क्षांस्व अपूर सामवती। स्वाह ही। प्रियम होला मुंतकराहक । माय पी साम्य गीसी क्षांस्व अपूर सामवती। स्वाह ही। प्रियम होला सुंत (लोका मूं भू भरपोटी हो। । हु। अरु का तो तड़ तर मूं वालावत हु व मूं जणरी। क्षांद का सिंत हु के सिंत हु के सी सहत के होया मायनी होत के को हो। हो। व्यवस्त हु व मूं जणरी। क्षांद के सी सहत के होया मायनी हो के को हो। हो। व्यवस्त हु के सी हो। का स्वयं के स्वति हो। वालाव है हो नी ही। हु कम्म ही हो। वालाव है। हि। मायन हि। वालाव हो। हु कम हो। हु का हो। हु कम हो। हु का हु क

कबराणीसा र सिनान करती बेळा. पूर्व, ईश्वेंबती: कीन्स्रोपरिविधारयी मादा,ककटिया किया साग्या (सर,सायळो.माद्य अनताण क्रांय हा,दे)। आज तार्व,तो अ कोनी हा, सब किया हुयग्या।। इण) सेळपणे (साम कदराणीसा, हस्या अर कर रसा न पूषण रो कयो । इया जतर सू वा चुप हुस्यी । पण भिजासा सात कठ हुयी हो ? अर अपजाण प्रश्न और पणा रूपो में कांस्या साम नाचण लाग्य्या । औरत एक प्रश्न मी है अर पड्तर मी । औरत प्रश्न सदो नर सक रण ईप्यों कोनी दवा सक । जिज्ञासा सू आपरी सायळां न देवी छात्या देवी, हाय फैरन देवी क नठ ई नोई अवस्या रो सनाण दीस है कोई ? पण अपचाह रा माव हो कोनी हा। भोळपण री बात माय आज निती होसी आव । प्याव नांय र वासत हुव । बीन बीनच्या न कन कन कांय वासत सुवाग । अ समळी बाता सयम र लाव प्रवाह में सुद ई समफ जाव । अ समळी वाता समफावण सारू ना तो नोई कव अर ना नोई सताय।

बलत बीततो गयो अर सगळी बातां आपोआप ई सम्भण लागगी। आज जण दा दासगळी बातान याद कर जण उणर काना माथ लाली दौडण लाग जाव । आख्या सरम सुभुक्त जाव । क्वराणीसा जद कदई जळनवश बो सगळा सवाला न पाछा सरू कर अर बताव क ठा पडियो-अ सगळा किया हुया ? जण द्वेप स् जळण लाग जाव । अर अधिकार हुनन सारू और खुलन सुरति सुख लेवणो चाव त्रिण सु बखत रो भाव बध अर पासवान रो पद मिलन बुढाप रो सराजाम हुय जाब । समय सारू मन मे अणजाण्या अर अणचीत्या भाव आवण जावण लागग्या । डील मे रळी पूटण लागगी। मायल मन मे बमहुवण लागग्यो क कठई उजाड मे मुरभाय नी जाव। गळी म बिखेरणी नीं पह । स्याणी आदमी आग री सीच अर सगळी बाता रो पलां ई सराजाम कर लेव । अब उणन याद आयो क ठाकरसा उणरी खाड साथ इण स्नातर ई याव रचायो हो । उणन बडो ही आसरिक दुस हुयो कश्रो नाटक कितो घरमहीन है । किणी न भोगण रो मारग है । रीस घणी ई आयी पण कर काई ?, वा जरखरीद है। उण रो स्वतंत्र अस्तित्व कोनी। उणरो जीवण सेव अणबुक पहेली सो है।

रात पछ दिन अर दिन पछ रात ओ ही ऋम बरसा सूचालतो आयो है अर आग चालतो रसी। पण इण कम र साग मिनल लुगाया में फेर बदळ फुठरो रूप घारण करन इण री आगळघा रो चूमो लेयन बेहोश हुय जावता। भोरा रो जण कमूबी बळतो, बाटकी दूरी र असास सू हो रिपळण लाग जावती। रूप रो छुठरायो किरचा मास सू कतूब म दीखण लाग जावतो। यत्तराहे तो दिया वाई उणर लार-चार ही पूमती रैयती। वसत री जरूरत रो पेट घोषी बहाया सू कोनी भरीज। बर बसत रो मोल सूर्वाणयो अठ कोई दीख्यो कोनी। जिलो बसत रो मोल समक्षणियो हो बो अणजाण बण्योहो हो। इण कारण जी म सीम्क अर ईच्याँ सोनू सारी-साग पत्रप हो।

हुवती रव । आ जण सरोते सुअफीम राकिरचा बणावती जण किरचा ई

्रमो दरा एवा स्थानू वानेव ल्यारस वामी का संदर्भ , । क्षेत्र्य ग्रहास्य स्थे साउम से सुर्वनात्रा र गामा the expelled nations of the fire figures texthe ातमा का का म भारतमात्रकातमा का वा ताता । १९४१ का स्वार वास्त्रकार मुख्या स्वारतमा का स्वारतमा । सं रेण्याते राता संसाते स्तीर बरबसा सभारती तो बड ा १ में मुनियाळो भरजवानी में हो । इह सागीड़ी पड़ हो। होफ़र बाजगी सर हुमगी, ही,।। पीरु अंक , रात हुमगी । हायळ मासोपो सदायो हो । ब्लहापीसा पूरा महीना हा। बीदावाटी कानी सु कवरसा न आया न दो अक महीना हयग्या हा। इक्यांतरो भूगत न कवरसा थोडा ठीक हुयग्या हा। कवराणीसा भाटी परवार सुहवण र कारण परवार गे नसा घणो हो। आपर खानदान न पणो ई मानती ही। भी रिस्तो खानदान ऊची मानर कीनी हुयो हो पण क्षेक असान उतारण सारू हुया हो। जो सगळो नाम सिरदारा रो हो लुगाया नाती आ वातान समभाही अर ना समझण री अरूरत हा। आदमी आदमी र काम आव । आज हमा तो वाल तमा ।

कवरता र सोवण रो बलत हो। सीरक्ष ओडचां सूता हा। पण नीव असवाड पसवाड दें नोनी ही। आठ म दीयो जग हो। मचरो जगती दीयो जगारो भगत हो। बाती र मूढ माद मुल हो दण कारण गोडो यूवो निकछ हो। मूत गिनत न असात हुण जावतों क नोई आब है। धनवी प्रसूची सेयर आयो अर पशाय नानी खडी हुयर क्यों— अरोगी सा। घोडी ताळ चुयी रपी। वाणक कोलो— अरोगो सा।

हा अठीन आ । उठता कवरमा होत्या ।

वा सिराण कानी दो अन पग चाला । कवरसा उठन बठन्या हा । पण माथ सीरल नालर कटोरी भाली । आगळपा सुकटोरी भालती कवरसा ुउण री आगळपा भी दबादी । इस्ळ होळ पीवण सामग्या । उण र झील मे श्रेक सर्गाद्रो होडायो । नदोरी प्राणी देवता चील्या-- योहो दवा देयी दील दुर है।भोड़ो भोड़े। बोड़ाळ दा) जामी पुन भावाहै।। का का गण ।। का ३१ बटोरी राखरे मोडो। श्रोडेाळ मध्यनकी पाछी सीर्रविमाय स् देवांबर्ण जास नंदरा महारती। माराने सुह लाक पर स्थीय तर विशास 1)" । 'इया सी ओर हिक्सिन 'सोगे" इसे रेसीर बंदर मीयेने हार्व घेलिरे देवें दि पेंसवाडी फोरेलां पवर्रसा क्या है। देन कि का मान हाप पालर मंगर् । उर्ण बलतं उर्णने इया मालम् पड्यो जाँण् द्रवया माय ह्याकी करें ही। वा सरम सू भीजण लागगी। सगळ डील मु श्रेक अणुंशणी चेतना बापरण लागगी ही। बीरा होठ ना नवणो चार्व हा पण बै हाल्या ई कोनी। डर्णरे किनोड मोर्थ प्रीति आर्थण सिंह हुयथा। ती में बळवळी मध्यी। तत्ता १० ता तत्ता एता १० ता है। तता तता तत्ता तता िर ११ क्षेत्रिलोहि सूद्वा। क्वर्साबोल्मा । ११ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ ा।। पण भनकी राहाय क्वीला पहता। जायहा । अरु इणरुसाग ई छगरी बाचळी कसमसीजण लागागि।।।होळ-सीबाः बोलीः-- 'ओ।कार्धः 'जिता तो !! >!! उठेर पछि गया जलें रांत बाधी स् 'घणी'ढळनी ही । 'वितूरी धर्मेनी सरमावती उंटी! जॉर्ज बंडी भारी पांप कर निर्मा हुव । वैस रेंगो क 'कंदि ओळभो देवला। आखो दिन सदेह रा छिया म बीतम्यो। किणी कयो अक सबद ई कोनी पण अंक गरी मुळकाट जरूर फेंक देवती जाण सगळा रात री घटना सुपरिचित 🦜 । ओ कोई नूबो काम कोनी हो । ओक नुओक दिन तो ओ हुवता है। उपर गाला माथ सून सी ही। छात्या पीचीजती लाग हो। अर -जाध्यो काकडिय ज्यु फाट ही । सीधो चालणो ई मुसकल हा । आखो दिन सरम म निकळग्यो। सिङ्घा पछ फेरू कसूब रो हली आयो। जिक दिन पछ वस्तव र बाटकी री ठोड धनकी रा होठा ले ली ही। धनकी री नसी चढतो क पसवाड पही कटोरी तुपी तुपी करती ईरय जावती।

फेर बलत पसवादों फोरपों जर्म विक्रमपुर आवणी हुयो। अर आयों एक जावणी मुसकत हुययों। पसवाडों पोरती पनकी सीच हो—अ सिरदार है जिका दारू पी पीर आपन मदबा कर। जिका पुदा दियों सक्या हुव बै जन में सबर नाई यान करसी। जिकारी खुन दारू अर अफीम सु काको कहायों है व आंघा हुयन 'पूजा सु पसवाडों कोरपों अर मुकत कठा न पूक सूआला करपा। वा आपी नीद म ही अर आधी जाग ही। उच्च द्वारों मालम पढ़पों जाण कोई वापी देव है। अर सुणीज्यो— पनकी हू तन सेवण में आयो हू। वा आकळ बाकत हुयन उठी। बारणों सोवन देवशी—कद पिनम म तारा मुळर हा। बाकर फटकारा मारती चाल हो। बाळ सू बगाज सामगी।

सिया मरती कूनशे बचण लागगी। नीद शास्त्रा री पलकां सू शोभळ द्वयां। वसवादों पोरता पोरता ई माल फाटण लागगी। नीद री मिल करपा भूती रसी। मविरय में घटी री घरपराहट हुवण लागगी। गाळी पालती बेला घटी रो पाट श्रेनर तो करब लावड हुव पछ वो मपरो पमरो पालण छाग जाव। पीसणवाळी लुगाई री चूडघा चाल माप ठेनो देव। नीद पलवां माथ जतरण लाग जाव बर उणरो होळ होळ नाक बोलण लाग जाव। पगा री सप पय अर पुगड पुता नुणीज चण वा हटबडार जाग अर वारणों स्रोतर बार सामन देल तो तावडो आगण म रसतो निजर आव।

राज रो पानो

जीवण लेक खुलो पोधी है। रीजीन रो काम पोधी रा पाना है। लापा लोग रोजीन रा रोजीन बा पाना न भरता जाबी हा । लाव कमर हुन की जा जा पाना रो नूप सिर सु मुस्याकन कर। काम सार हो । ताव लमर हुन की तो दून जात । मरती निमल लापरा करपोडा सगळा पाप लर पुण्यान देखें की तो दून जात । मरती हिमल लाप जा शे ही सतार रो दस्तुर है । स्वारय सु भरपो मिनल लपण लाप न परिस्ती समक्त भर बाकी सगळा न पापी। पण पापी लर करिस्ती कियी र तिलाह माय कोनी तिस्मोडी हुन । लापर पापी लर करिस्ती कियी र तिलाह माय कोनी तिस्मोडी हुन । लापर लाम की तिस्मोडी हुन । लापर लाम की तिस्मोडी हुन । लापर लाम किती निक्मी है। पण लो काम किती निक्मी है इप पे वती ही कीनी चाल । काम र लार स्वारय सीते, पोखी मिन पण मूढ माय घानीनता रीख, न मत्रता दोख ल मीठी उत्तर निजर लाव इण सगळ स्वय रो इतिहास बडी ही मीठी हुन।

विकमपुर रो राज दिन दूषों कर रात भौगणी वधतो जाव हो । राजपराण रो मुगला र साथ भौजी सवय रथो । विरोध कर तो भाटो हुए । राजपराण रो मुगला र साथ भौजी सवय रथो । विरोध कर तो भाटो हुए । राज-राया से जाज राज । कुट सताट करता अर भगजिति रा वहायक वणन दिख्य वाई जावता रया । कुट सताट करता अर भन परवारों ई विकमपुर मेज देवता । इप सू खजानो भरीज जावतो । राज रो खरूवो भोडो ई हो । च्याक कानी मक्ट रा मदान हा । बारला रा भावा हुवता कोनी । बेके बहब पढती विकमपुर सर्वाई सुरक्षित रखतो । रयत योशी ही । माळ हुवता कोनी । बेके बहब पढती दिखते पुरक्षित रखतो । रयत योशी ही । माळ हुवता कोनी । बेके बहब पढती दे रखतो । रेख वावरों थोडो हो। मुगला रो हालत विगडती ई स्वाराथों सदी म विकमपुर र वतमान राजाओं कर्याहरू

रो दिवार हुयो क मुगल राज घराण सूसवय तीवन स्वतत्र राज वणाय लेवा। समळा सिरदारा न भेळा करन सका सूत करी। सगळा राजी हुया अर इण काम में पूरी हाय बटावण रो वादो करती।

सिरदारा आपरो बर मुलायन राजाजी न पोसी नी देवण री कसम झामी। एउझाजी-प्रात दिन जेन करन च्याक्सेर री यात्रा करी । किलां री चौत्रदा री अर माणां री भरमत करवायी। सावधानी सूनीण राखण रो पूरो बसोबस्त करयो।

पूरो बदोबस्त करमो। ११११ - १९११ - ११११ - १९११ - १९११ - १९११ - १९११ - १९११ १९११ - अविधनक हे राजाजी ने तातु अध्यापी । राजाबद दहा हाल सक्कान्ति। विषया जप करण लागा। , पण ताव तो भाव वणग्यो अर छोटो भाई मुद्रव्हिह बाळा राजाजी सगळी बात सम्भग्या । भरी जबानी में मरता नगया । जण आपर छोट भाई न अर निसवास सिरदारा न बुलामन, वयो के हु तो जातू ह पण आ, टावरा ने थार टावरा ज्यू राख्या । व सिर री सोगनी खानर विस्वास निरायो। राजाजी किता स्याणा हा,। समळी बात न समभूर गिटम्या । राजपूता री सीगनां दारू ज्यू हव जिल साग पीव हम्, री, ही मुभ कामना कर। राजाजी र मरता ई कसमां सगळी रयगी। सोगुरो देखावी मणो ई करको । मूरत्सिहजी आपर आई र नाव सूराज चलावण, लागम्या स्थारय भरचा पड़यत्र भी साग साग,चाल हा । बन, जिकी, जवानी न ,पार करण लागगी ही उण रो ब्याव ई बीख र मारचोड राजा साग करघो। च्यारा कानी स् विभिन्द हुयनै नांबालिग राजा नै , मरावंग रो जंतन । कर्षो । कर्ष सिरदारा विरोध करधी जेण बीनै बाबी घीधित कर दिया। गोर्रमान सासचे दियों मारण वासन पण व भी इण पापं रुखाय रळण म इनंकार करण्यो। छेनडा मूरतसिंहजी खुद ई क्षेक दिन हवामहल में सूत नावालिंग ।राजांकी न मार नास्यो अरामरायो घोषित कर दियो गाराज मे 'हाको मूटायो । ह स्थळ' पुषळ मचगी। राजगादी खाली कोनी रथ सक प्रम साह पर्व रा सिरदारी कैयों के आप ई गादी भांच विराजो । पेरत्महाराज रूपसिंहजी रा खीकरी बासी जण छणान राजा चणाव देसा । भूरतिसहबी सो बा ही 'चावता हा। राष्ट्राची । । विकास वर र 50 HING

राज्ञतिलक् हुयम्मोत्रेद्धभानदातात्सी १६७० प्रणी छलात्तरी र उद्घेष्ट्रभात्तरी र ह्रपृष्टिह्जो, प्राकृद्धिमायसी।तारयूर्यातार्वक्रमपुर म्छोड्रङ्भाग ख्रुदमा । म्बिका त्यम्याज्ञणाः चुपी.. क्षात्त, ली.। प्राजासी काई विश्ववासास है । प्रवता केमी। पढ राजा भी यी पराचा दरवी। सवाली विवदावा। बाल् एड्ड बेम महद्याप्रिक जुल PITE मेरीज र खुम सूर्ण मिल्मी रीज सून देश नीही हुए देलांची र विक्रमपुरि रा राजासहासन होतन सामध्या । सून केरणा ता सारी ही तम राजी स्मीठियाँ घणा दोरो। सिरदीर नीव मार्वे विरोधे करें । सीनिर्व विश्वीस केर्राया । संगेळो न्याप आप र किनाण जारी संगठी बाता किमा हा पण संगठी रा विरोध है नीने। डिक्निंग' जीवनारा करिया' मेर्ड्स्स करित डिनिंड हि कि है सिर्टारी विसेक री क्षीस में जिनीरा दी जान करियों र सिरीपान विदेश बपाया । नूबा पटा बाटचा । रीत रा रायता सगळा ही न रघा । पण नाळें में बंडधी सीपीदाऊ निकळेंही कीमी हो।। राजाजी मीद बेंबर बार्फकी ले लियो हो । राज तो मिरयो पण सजानो क्षाली हुवंतो खाव हो । मोटी । एकमा री रिसवत दी १ सामै।मिलावंग साह हराया धर्मकाया । बीताव रेणें। तर तर विभेडतो।ई' जाव हो । इण संगळी ।हालत।स् वर्ध वेरमच दे पेरिचिंत' हो। राजाजी मामगळी बात बताबी। सगळी। बात समक्र मे बेद' धरमचे द नि राजांजी दीवान रो पद दियों खर सगळा असतियार देय नैंग्हाज संभाळण री भार मूंप दियों । वर्ष घरमच द स्याणी अर सम्भ्रदाश हो । वेतराई सूँ माने तियो । छोटा ठावरा न आपर कानी मिलाया अर छणाः नै राजवी पी कर्ना पुद दिया। धोक्ळसिंह नृदी परम्परा स् ऊची पद पावण आळा माय सू अेक हा। नीं तो छोट ठिकाण न मूत पुछ हो के? बखत रो फेर हो। मान अर रुतबो बधम्यो । राजधराण मे पूछ हुयगी । सेना मे ऊची पद मिलग्यो । भगवान सगळी चीजा बेक साग ई, छपर काहर दी। आदमी सगळी पाय सक पण अकल तो आपर हीय राई काम आव । सगळी बाता अचाणचक ई आयगी पण गुण बेगा सा कानी आया ।

दूर दूर ठिकाणा में उपद्रव हुवण कागम्या। ठाकर स्वतंत्र हुवण सागम्या। नजराणो देवणो वर कर दियो। रेख चाकरी आवणी बर हुया।। राज रोख तोवा — मचण सागयो। द्वारा तोवा — मचण सागयो। राजाजी री फोजा टूटगी। समझी विषयादा के सा। है माथ आय पढ़ी। दीवान भीरत मू काम वियो। ठाकरा री फोजा खतम करण रो अलात करणो और राजाजी री अलग मु कोज कणावणी सक करी। इण सू बोहुल कायदा हा। राज री फोज करोरता मू च्याक कायदा हुवता जयदान दवावण लागयो। इण सू राजाजी री कोज करोरता मू च्याक कायदान रवावण लागयो। राज सू राजाजी से के से स्वतंत्र करायो। या स्वतंत्र कायदान रवावण लागयो। राजाजी हो। राजाजी री फोजा रात दिन व्याक कान आवती जावती रेवती। राजाजी विरोधी ठाकरा री जागीरी टूटायन खालसा रो आवेस करता जात हा। इण मु ठाकरा री ठकुराई र साय-साग जमीन ई जावण लागगी हो।

विणज रा मारत पादितमासू भरोजनमा हा जिक सू विणजारा रो आवणी-जावणी रुकसो हो। स्वतारिया उरम्या हा। इण सूराज न बहीत ही जुकसाण हुवती जाव हो। राज माथ दोलडी मार पढ हो। सेठ-माहुकार उपार तोराणी कर करता जाव हा। भाव गवाडी मे आवक सूरवणी ही वौरो हो। विक्रमपुर रा दरवाजा सिड्या पढण र साग ई उक्षीज जावता। सहर में भौरा रो कर वपनी जाब हो। रयत दोना कानी सूटीज ही। लेक कानी राज रा नृवा कर सर हुव कानी चौर दकता रो ववदयो। मोछ दोफार गावा न कानू साम सुट कर सुट कर साम सुट कर सुट कर साम सुट कर सुट

अकाल री छिया

जण बातों बिगड है भगवान ई सुण कोनी। राज र बिगडता ई मेह पाणी वद हुययो। पापर अकाळ पहच्यो। गांव उजडण सामया। कस बा सदती बुण सामया। कर सा सदती बुण सामया। कर राज रो कोज, जिने हो से स्व पदती । योज डरे राज रो कोज, जिने हो से सद या पदती बड़े सा नुट तेवती। योळ दोकार ई सगळा न लूटीजण रो इर रतती। जात हाथ ई मुळतान कानी सु टीडो काको आपम्पो। टीडो-काक रो जोर इतो रयो क जठी न ई यो निकळ जावतो सगळा खेजडा अर रोहेडा न पट कर जावतो। सीन दिना ताई घरती काक सु खायी रथी। जागा-जामा साया कोद बोदर, साव समा सगर क्या कर राज हो से सा कार्य कार्य

अवाणवक है तीन दिना ताहै काळी आधी आर विरखा आवण सू रीडी पाको सरण सानायो। आर विकमपुर कन पूर्यो जण उणरो नांव है नांव रोो हो। बेतां में हण री परता कायोडी दीख हो। विरखा कात कुकायर हुयी। जीवण सारू चान हुयो। घास रो मुबाव वोको रियो। नोई बात नी, मिनल मरता मरता वचरण। सुसाडा मारतो कनाळो गुजरमो अर हाड दुखावती सरदी माययी। डाकर सामीडी बाजण सामारी। विकमपुर री रयत कनाळ म तो गरमी मूबळती रयी अरसीयाळ म ठह मूँ मरण लागगी। मेह-याणी हुया तो हो पण इत टाळर। छोग मूखां मरता मस्ता सम्या पण इण जीवण में की मटरक कानी ही।

गार् लीबि हिनीमेदती महो अपसर पठानगेट जावती विक्रमपुर र सारकर निकळ्यो । गोरवे राजवानी विची । राजाजी मुरतिब्द्धीन औ समाचार मिल्वो जण मिलण वासत नया । यथी बातबीत वरी । विक्रम पर विकास पेकित मेरेसी पेचे बढ बर्सार संग्री हेनकोर कर रहे थे के बिन्दे रेजीमट रा अवीर रहेवाडों रेसा कोई हीय बेर्स्स री विवार बीनी में रीजाजी सिर्म पढ वर मुक्त पीक्त बात्यार में मार्ग के स्वार कार्या मार्ग मार्ग मार्ग मार्ग मार्ग

• एसा रेसी बाच

"डेरै 'री"वात

1311 (1.31

 तो हा ही इणाई नळनी में पूछो नाम नियो। राजाजी घोसी तर दीवान सू नाराज हुयन राजानत रो नाव स्थापर मृत्यु दण्ड दे दियो। दीवान वेमीत मारपो गयो। रेसवाकरी सारू डिनाणदारो सान करहाई नरी तो सगळा ठाकर नाराज हुयाया। मौनो देसर राजाजी रा कान मर दिया। समानत ने स्थापन रो सुरम सगायर पांसी पढ़ावण रो हुनग दे दियो।

राजाजी आयुण र मोरच पमारमा जण आप र विस्वासी अर जुम्मार लोगा न सामै लेयग्या । डेर मे दो बेक गोल्यां राणी अर पासवानां रयगी ही । इण कारण ठाकरां रो डेरो साली-साली लाग हो ।

ठाकर बठ हुबता जण बेर मे रात दिन चोली चळ-पळ हुबती। आस दिन हाजिरियां सु मिरपा रवता अर दिन बळताई गढ मे जाय पूगता। राजाजी चन अठीनली बठीनली चरता दो माची दो कूढी करता। बजत जून सक हो पण ठावर चुगछी वरण मं पृक्ता बोनी। घडी केर रात गयो ठावर सा देर आय जावता। जिल वणो रा भागला कमा अवहैकता छायता। गरमीर दिनों मे मिचल चूतरी माथ जमती अर दास जमती। होळ-होळ बारला एगळा लोग पच्या जावता। ठावरसा और से आ जावता। गोल्या री पुकार मचती। पासवाना रो बखत हुबतो। औ रिस्ती अंक पुराणी अर नूवो मिल्यो जुन्यी रिस्ती हुवतो। स्पर रो अर रोटी रो। समळा सूबेगी ओ रिस्ती मजबूरी रो हुवतो।

जब ठाकरसी बठ हुवता क्य माथ निवार हुवतो। रखेला, पासवाग आप र नाव रो इतजार करती। नदई कदई इतजार में आबी रात बाक्या मोयक्र निकळ जावती। वे कोई मीट से लेबती तो उच री हानत सबता है हुव जावती। व धान्छी वसत रो इतजार करती क ठाकरों निजर ठकी रव बर बुडाय में बेर मू वेटियो चलू हुव जाव। मद रो रिस्तो बेहोशो सू हो बर मदमाती रो रिस्तो रीम सु हुवतो। समझ आए आपरी चाल चातता। हुर जीत रो निजय दो आवल आछो काल ई करली। अबार ता दोनू जगा अक दूसरेन जूसणी ई चाव हा। उणारी निजरा मे धायर वालाको रैयती। सासदाना आप रो मान देवती अर ठाकरा रो मान सेवती। पण पत्तकी दण हालत स अपरिचित ही। बाज ट ही बट वा लेकती ही का क्याणी। शो अजबूम अजाळ उणन भावतो कोती। बाज टही बटै उण रो मान ही रतको हो। आप र अधिकार रो शेवती हो। दायज मे आयी पण रूप अर गुणार कारण ऊची पर पावती जाव ही। पण अठ तो उण सरीसी केई बठी ही। ठाकरा री निजर माथ रवण साक अपण आप न कोयर कोसीस करणी

धनती म घणवरा गुण तो समय री अक्रत सागे आया अर केई गुण भविष्य री अक्रत र कारण वाता बाता म ई खण री मा बताय िया। अक्ष्रत एक्पा धनती अधेतन मन सुजद उणा रो उपयोग करपा तो उणन गरी सफलता मिती। पछ तो वा समझी बाता न याद वर कर न पूरी ई पायदो छहायण लागी। उणरो रिस्तो ठाकरा रो जक्ष्रत सु हुयो पण अठ उण रो रिस्तो क्षणिक सुख रो हो जिल सू या पबराबती। उणरी चतराई इण मे ही व ठावरसारा काम ता बणावती रव पण पग भारी नी हुवण देव जर रूण बात रो रही ही जी पालण देव। उणत घो पर अंक सागे बसावणा हा। ठाकरतान भी राजी रावणा हा बर आपरो जीवण भी सरक्षित रावणी हो।

्याव म जण वा विक्रमपुर आयो अर उण रो चतराई अर रक्षरलाव देख्यो जण ठानर मुजानसिंहजी रो नी मन हुमया। पणी भात रो छोटो घोटो सुपन-सवर री सुन्न देखर ठाकरा री इच्छा दणन अठ ही राखण री हुमगी । बगळी जाणनारी लेयर ठाकरसा नस मे मांगली । जिना र कारण कवरसा रो मान हो उणान व ना नोनी कर सब्या। अने जरस्वरील्य सातर आप रो किनाणी गमावणी नोई समझदारी नीनी हो। कवरात सोचण लाग्या क उणान रसा दिन पनी ई पासवान वणाय लेवणी चाहीज ही जिण मू कोई मांग कोनी राख सकतो। उणारो परिचम साधारण रूप म भी देवर खास तौर मुबतावणी चाहिज हो। इण भूल रो ही दूल तो उठावणी ई पह हो।

पण अठ धनकी जरखरीद ही। उण री क्छा रो कोई महत्व कोनी हो। ठाक्र री इछा ही सब कुछ हो। ठाक्रा री जरूरत ई उणरी जरूरत ही। उणन अठ आयीन याडा ईदिन हुया है पण उणन नेई लुगाया र सामन माच माथ जावणो पढघो । उण रो मन अठ कोनी काम्यो । उण मू

बेहतरीन अठ बोहळी ही। उप रो अठ कोई मोत्र कोनी हो कोई अस्तित्व कोनी हो। उतार र भाड ज्यु ही। गाव रा ठाकर न्या स छोटा हा पण उणां रो मान टर्णाम् बढी हा। व सगळारी टजत आ वरू सार जाणता हा। टणा गई लुगाई न मद रो प्याला कोनी समभता हा।

रावल रा हाल

ठाकर मुजानिहिन्नी रो हेरो थे हजार पावडा जमीन न पेरघोडो हो। हेरो तीन कानी मू खुलो हो अर दिलणाद गोला रो स्थार अक गवाडघा हो। उतराद नरी मू पाड हो। नीम, पीपठ अर भाडवा सामीडी फल्योडी ही। गोडा मूणी मेवण हो। सुरडा अर लगोसा रा विक हा। तीतर उडता फिर हा। भाटो लगावर पास अर मादगे साल आवावण रो मागव बणायोडी हो। पर रो फूम-कचरो अठीन ई नालीजतो। जीमास में गोवय मीगणा अर लील चगर अठीन ई पैरीजतो। रात दिन वप रो भमनो उठतो रखतो। मेह पाणी अर फड र दिना में ओ भगनो पाणो जोर मारती। गोलो हो जिनो आग जायर बढ मारग म रळ जावता।

हर रै सीना कामी माय मूणी बाह लाग्योडी ही। अर्क कानी सामो साम रोडा लगायर पकी मींत बणायीडी ही। बीचाबीच पूरी चौडी पोड हो। चोड कर्म कोटडी ही जिणम भीडियो देवतो हो। गोड र साय बढता है साम काबक है। कर साबी चोडी चुतरी ही। जीवण हाय कानी सफी हो जिस स ठाकरा रा थोडा बयता हा। चूतरी कन बरामदो हो। बरामद र सार छोडी कोटडी ही जिली मूडी लागा र बठण साक लाग आवती। । वरामद र सार छोडी कोटडी ही जिली मूडी लागा र बठण साक लाग आवती। । वरामद र सार चौड कावज का सांख डो। ये दया करर जायन चेक र सतर स दठन बणायोडी ही। वराम र पर जावज सांसत हो। ये दया करर जायन चोक स त्रिक छोडी। चौन म तीन च्यार जनायी बठकां ही। उच्चा र सार गोटक स दिवस हो ही। सांसा मार पर पर सार सांस्य ही पर सार सांसा स र र रखन सांक कोर हा। राहों-दर्गीस है सामक चणायोडी हो। समान पर र सार-सार पेक्या री नाळ ही जिली बाचळ में निलळती हो। उन्हराणोसा

र आवण जावण रो ओ ही मारण हो। अ सगळा लटाव मामर बणायोडा हा। प्यां र माय माळिया हा। पेडपो जठ पूरी हुवती बठ अंद मोडी हो। मोड र सामन बालळ हो। साबा घोडा मणा हा, जिनो म जुब रो समान जोण बतर रहता। सारल छट गुमारिया हा जिनो म मूस-पानडो रवते। पान रा नोटसिया अठ हो हा।

लारल बारण मू निकळपो पछ वावा ऊठो रा छपरा हा । येपडपो रा पिरोक्टा अठ ही हा । पास री डूगरी हैं अठ ही हो। दो तीन वेजडा अर जाळ लारीन ही जिसा न सिरस्या मू मिशार लांबो चोडो फूपडा अस्त राह्यो हो। को बिरला पाणी म सासरा न बापण सारू साम असतो। पोळ में बटतो हैं डाव हाथ साती हो ओरा मिशायर जत्री बणायोडी हो। दाह सारू उठ हैं मटसा अरून रास नवता। चोमान म सिरमा रा चूनरी माथ जाजम विद्यायर ठाकरा रो बटस अठ हो जसती। सीस्त्राक म बरामने साम जाजम विद्यायर ठाकरा रो बटस अठ हो जसती। सीस्त्राक म बरामने साम

ठाकरान गया दो ब्यार न्नि इंदूबा है। इस कारण डेरो साली माली दील हो। घोडा रा खुर हाल ताई दताळी लाम्या पछ ई मिटपा कोनी हा। डाव हाय कानी लून आळी आळ मूनी सूची लाग हो। डळन मूरज रो तावडो जभी र सामन पड हो। पोवलो ऊठ मूड म लिट हो। पोज म बवतो बताते हुंदी हुयायो जन ठाकरा देश न पाणी रा डावा डोवस साल देर मे छोड दियो हो।

सारस पळ्छ सू गेनो दो सो पावडा चालर सीप मारण में मिल जावतो हो। बो मारण मोडी दूर चाल्वा पछ दो वालो कट हो। अरू तो गढ र सामन हुयर राजर कृत वाली निवळतो हो अर दूरो मारण सीघो देवी मिदर वाली जावता। मारण र अपविच माताजी सू आवणआळो मारण आयर मिस जावतो हो। राणा दो दिन घहर री भाकी वेसतो रमो। घहर छोटो र हो पण हो सहो ही फूटरो। अत्यार उपासरा मे भणाई री पोसवाळा ही। व दवा दारू री नाम भी करता रवता हा। महाजना कानी सूदी अंक चटताळा ही जठ पुरु मुक्त मे भणावता। सेठां र चद खात सुगुरुजी रो भरण पोसण हुय

शहर म जात जात र लोगा रा, जात र नाग सू बास बस्पीडा हा। दीवान बद हा इण बास्त कारी चढती रा दिन हा। राणो दीवानजी र दीवानलान म मिळण सारू गयो। बठ बेरो पदयो क दीवानजी र साग ठाकरसा है 4 5 दिना पती हो भटनेर कारी गया है। बठ ही राण सगळी लवरा छी अट शो पती साग्यो क उप रठाकरा न बुनावण सारू हैकम भेजा दियो है। राणो पनकी सूमिनण बासत बेर कानी चाल पटया। सिक्या पटवा राणो देर आय सुमा

पोळियो सुस्तीरापाठ पढ हो। राण न अधाशचक देखर हडवडास्यो। वसती ठड र साम पोळियो पाळ डकर गूरडाम यडणी चाव हो। मन मे सीच्यो, ओ कुरेळारी किया आयो है कर ई हताया म बैठस्यो तो सिया मासी। राणी डोस्यो — ज माताजी री!

ज माताजी री सा। इण ठड में किया पधारधा ?' पोळिय पूछधो।

काई बताऊ ठाकरा । 'धूणी क्न बठतो राणी बोल्यो— काल तो पाछा गांव जावण रा विचार है। मिलण सारू आध्यायो।

गटी सभाळण रो साग करतो पीळियो बोल्यो- चिलम भस्र ?

काई करसा ? पाछो बगा ई जावणा है।' ऐर कयो — सनेसो कर दा तो मिलणो हुय जाव। पाळिय राजी सोरो हुयम्यो। बो सनेसो करण खादर साथा साथा पग उठायर पैढमा कानी चाल्यो। सनसो करन पाछो आया जित तो बो हुपण सागम्यो।

क्षाप चन मूबठो राणा बोल्यो । हूझाप ई आयर मिस संसू । कवतो-स्वतो राणो मिलण सारू चाल पढेघो ।

चिलकारो दिन हा पण चिलकारो ठढ सुढकी योडो सो लागे हा। ठड बधती जाव ही । डापर सरू ता कानी हुयी ही पण पून म डाफर री भलक दीखण लागगी ही। राणो पेडचा कन आयर खडी हमम्यो । पेडचा री नाळ म अधार री छिया पडण लागगी। जाळी माय मुचानणो पेडचारी सनाण ई बताव हा । पण पून पसवाड रा गाभा जरूर उठाव ही । थोडी साळ पछ धनकी पेटचा सु उतरण लागगी। पगा माथ पहला चिलको इया मालम पढ हो जाण रित रा स्वागत करणन कामनेव जूही र क्ला री पगा मे निछरावळ कर है। पीळो पोमची ओढ़पा धनकी होळ होळ उतर ही। रलही बाध्योडी ही। रखडी नीच मींढी सोवै ही। काना म पती सुरळिया हा। नाक म काटो पळपळाट कर हो। गळ मे गळपटियो हो। अक लढ दोनु छात्यां न अक कर राखी ही। बृश्या माय टढा हो। हाया म लाख री चूडपा ही। आंगळपा म बींटचा सीव ही। केसरिया बुढती माय सु सुडी गराई रो आभास देव ही। आघो कदाडो पल्ल माय स् हुयर पटलो साथ लाग्याडो हो । मघरी चारु स् उत्तरती विश्व न आकप्ति करण रो अभिमान कर ही। आख्या म घाल्याही काजळ रित री पलकान छेड बठाव हो । काळी मवर कामदैव र बाण रो बाकपण लिया हो । काचळी म फाटली छात्या कुडती सू कसीज ही । जोवण रा चुनतो रस सुडी म रसीन हो भरीन हो। पतळी कमर रस र भार स बळ खाव ही। छाती आग पत्लो राखर पाछो हाथ भीच करती जण इया मालम पडता जाण धण सुरति-सुख देवती देवती पाछी सिरक ही। पर्गारी 'आगळपा म बाजती बिछुडी अभिमान सू जावती ,जुबती रो मारण बताय ही।

कामणशारी रा, आस्याराकोबाऊ चाडूयन नीच फूक हा। राणां चितराम साहुयोडाऊ भो धनकी न देलताई रयो—रितर आवण सृजाण नामदेव चमनुनो हृययो हुव।

कन आयने कयो—'आवो राणाजी । अठीन वाला।' अर वा मारग बसावती लारकी वालळ कानी चाल पढी। बालळ म माचो पढपा हो। उण कानी देलती बोली—'अठ बठो। सगळी वाता कराला।'

राण माच माच बठर सगळी बात बतायी। धनकी बोली बोली सुणती रयी। अधारो बधतो जाव हो। ठड मुकडती जाव ही। सगळी बात मुणर धनकी बोली-

आप र साम सनसो आर्यापछ नातो भूख लाग है अर नानी द आव है। क्य चालणो है ?

राण बताया— सकरायत र दिन पोहर क्षेत्र रात गया पछ लारल फळस र सामन जाळ नीच ऊभी मिलसू। चणसूपला सीतर री अवाज करूला। जण सुवार आ जायी।

बात करन राणो पाछा आया जित तो पोळिमा ऊपण लागग्यो हो। राण पुछ्या— चिलम पीवो ?'

पोळियो बोल्यो—'ध ई पीवो ।

राणो समभग्यो म पोळियो नीद में चूज हुयोडो है। ओ तो की शीर ही पीसी। राणो चिकम भरन पीवण सातम्या। वण ई नाक मू अर कण ई बात सू यूबो काढ हो। चळडबोडा विचार यूब सात बार आव हा अरठड र भार सू दबता जाव हा। चितम भाडर राणा उठ्या अर पोळिय सूज मानाजी री करी। पोळियो चमकर बाल्यो—'बात हुयसो ? ऐर कद आयोजा?

राण मुठकर मूढो खाल्यो—'देखो, कद आवणो हुव ।' अर राणा पाळ र बार निकळण लागयो।

हा, सवार स्वान हुवणो हो अर आप र जागण न अडीक हो। राण जयलो दियो।

त्यारी देखर पूछपो— दिनुगे पला ई आ काई?

'पाहर अक दिन चढ्या पछ दुरता ? पुजारीजी बोल्या — ठर सासी है।

तावडो आवणआळो है राण पड्सर दियो— अरपडो ई कासो करणो है। पछ पुजारीजी न इडोत करन मोरी खोसर साढन ऊमी करी अरदुर वहीर हुसो।

बगीची सू बार निकळर साढ न जनायी अर सारल आसण माय थठर ठाकर मारन चठायो। टिचकारी देव न मोरी री सहनायी अर वित्रमपुर र बार बार ई गांव कानी टुरप्यो। अगूण आम म साली गरी साल हुमर निलस्ती जांव हो। जड़पा म घोळ मृद रा मुरज दीवण लागभा। होळ होळ सूर कल न हुमर चमरुण लागपा। लाली सिस्त्वी जांव ही। किरणा आभो पीरन विलस्ती जांव ही। पण राण राष्ट्रपान मारण कानी हो। साढ अंक चांक सू वालती जांव हो। तांवडो चढती जांव हो। सुतर सवार र साथ री नामळ पांगड कन कर हुवती खासण मांप आयंगी। पण साढ बांण पड़ी चांकती ई जांव ही।

सूरन सूच विचाळ आवण काया जण राणा रामसर कन पूर्त्यो । कूनो चालर प्रमागा हा। मळट चर हा। चुनाया पाणी से जा चुनी ही। सासर बैळघा म पाणी पीव हा। छोरा गट माथ बठर 'हाव हा। पणघट खाली हो। मासर बैळघा म पाणी पीव हा। छोरा गट माथ बठर 'हाव हा। पणघट खाली हो। माथ बठर रोटी खाय बर चिलम पीवी। अध्यक्षी मुस्तावर पाछो साव माथ बठर रोटी खाय बर चिलम पीवी। अध्यक्षी मुस्तावर पाछो साव माथ बठर रवान हुयो। आखी रिन सूरत र साग साग चालतो रवे। रिनूत रो ठटी पून पुपर ताई ताती हुवर पाछी ठटी चालण लागगी ही। पर सत्तार रो ज्यान बठीन हो चैना माथ हो छोरो हो। हो एस सत्ता हो ही। सूरत जातती चालतो चार पिछन माळ पाछी साथ माथ आवल छानगी ही। सूरत चालतो चालतो चाल हो। राणो असलळा चाम जीवण रा रूप समफ म करतो जाव हो। पण मन सो उण रो आ सपळी बाता सू अळगो हुयन कठ ई फिर हो।

गाव, ढाणी मारग माथ आव हा पण राणो सगळा न लार छोडता जाव हो। उगन ना तो कटई ठरण री फुरसत ही अर ना बात करण री। बार चडिय सो चालनो हो जाव हो।

पोहर बेह रात बळागी जण गाव पितवा सा उभरचा । उब ई लायी खायी पढण लागगी । सांद रा पग ई लाया खाता पढ हा । गाव यूव र गोट म ऊधडतो नेड मू नेडा बाद हा । गाव री काकड बाया पछ तो नीमडा र सायकर कूच रा थोळा थोळा मरवा भाकण लागवा हा। यून र कटकार सु

हो ।

हालती डाळपा रो ससाड कनपटचा कन फटीड सा मारण छागग्यो हो। अधारपुर हवता यका ई भूपडा भलकण लागम्या हा अर उणा र बीचोबीच रावळ री मेडी अळग सू ई दील ही। आधूण कानी देख्यो तो सूरज रो कठई नांव निसाण ई नोनी हो। चाद सूरज सुपछा ई छिपग्यो हो। सारा भिल मिल भिलमिल करता हा पण उणाम नातो चांद री सीतळता ही अर ना सरज री गरमी। ठह बधण लागगी ही। ठडी पून चाल ही। राणी कूब माध सांद्र न पाणी पायर गाव म बहण साग्यो । गाव रा गिहक घरचा माय स मुसण लागम्या हा । घोरका करन सगळा न डराव हा । गाव मे सापी पहायो

पर र मन पूनर राणा साढ सु लट्ट्यर उतरपा। फाटो सोलण साह हती पादयो। बालळ मूनी हो। पूणी ठडी हो। चूनरी साव लाली पडी हो। पूर्व पत्र सुत साव लाली पडी हो। पूर्व म सूत हुत मूदो कावर देखा अर निरमूह मान स देवर मूढो पाछो पाल सीययो। हेलो सुनर पर पिराणी सूनर सोडर बार आयो। फाट र लट्ट री सानळ सोलर माटा सोल्यो। राण साड न ठण न न ले लागर जलायन वायो। तिररपत्री गोजर तत थोल्यो अर जीण उतारन छान म रासी। पाछो आयर गोदपा लग्यो। साड र चरण साह चारो नीरपी। इत न परिपरणी रसोई में जायर बोमर म ओटपोडो वेपटी कावर सासी। सळता विकास विदेश हो पर साच साच पूर्वो है हुत ही। पूली पढ़े से हो साच साच सूर्वो है हुत ही। प्राणी पढ़े हो पर साच साच सूर्वो है हुत ही। राणो न म आयर बठन हात तथावण साचो।

मे बोहळो मोडो कर दियो [।]

'दुरघो तो बेगो ई हा। मारण म कड इंठरघा कोती। तू सीया मरती बेगी ई सोयगी दील, जिक मृतन बोहळा मोडो साग है।

मी दें सीयमी दील, जिंक मू तन बोहळा मोडी लाग है। 'आज दो आस छोड दो ही।'

बाज ठह हो सापीडी है।

(2<u>47</u>-3)

हो। पूल माय पडफ क्लाड माय सूप्रीणय म पुण्युणो पाणी पासती बोसी — हाप-मुडा धायर बा जाता। अर वा बवणी नाय सू केल ही उठायर पूल माय पाणे। राषा हाप भूबो धोवण सारू बार आयणा। पर-पराणी पुरावो नीव मू वाका वाहर पारी मांय सू बाजरा हा आरो छेन अभियन सारी। थीरिय सूचारा बार काडर परदी सार कठावड सामारी। पूनो चोको चेतन हुवस्यो। ऋषदो चानच सुमरी बच्चो। रोटी पोयर बे्सुडी माम नाक्षी। दूसरी रोटी और पावण सागगी। इत न राणो हाय मुढा घोयर पाछो स्थायम्यो अर बेबणी कन गूनियो राखर तपण लागम्यो। बा रोटी उख्य होसण सागमी। पछ केसडी सुरोटी उखारन पून हिमा राखर केकण लागगी अर पोयोडी राटी केसडी सुरोटी उखारन पून हिमा राखर केकण लागगी अर पोयोडी राटी केसडी माम राख दी। बानिय यो पायाम कोरियो हो से से स्थायम होरा हो रोटी न दो केव बार फोरी। रोटी किस उसमा केव बार फोरी। रोटी किस उसमा हो से पायाम हो हो पोरी हिमा रोटी किस उसमा । रोटी किस पायाम हो। यो हो से पायाम हो सुरोती हो पी पुरस राण र सामन सिरकायी। राणो पलाची मारन ओमण सामम्यो। हुइधी सुसाटो पारमो।

म्यू, धनकी मिली[?]

काई बात हुयी ?'

हा ।

बोहळी याता हुयी है। या आवण सारू त्यार है। दो ज्यार दिना पछ पाछो जायर उणन सावणी पडसी।

रोटी लावतो लावतो राणो पनकी र विस म सोचण सागमो । यनकी अंक विश्वना है ना सगापान ? इण रो हाय फालणो सगायान है का अत ? दोनू बाता उणर आपर ई हाय है। ज इणर ओवण म पर पर भटकणो नी हुवतो तो इलग पुराणो पर छोडणो है जो पडती नी। आ ना तो पणा पर सोडणो चाव ही अर ना आज चाव है। इण पी तो मजबूरी है। पीर मजबूरी सोडणो चाव ही अर ना आज चाव है। इण पी तो मजबूरी है। पीर मजबूरी सुत्राप्त अपमान तो नोनी स्थो जा सह। इण वासत मजबूरी में पीर आस आपरी साक्ष्य साक्ष्य प्रमान तो नोनी स्थो जा सह। इण वासत मजबूरी में पीर आस आपरी साक्ष्य साक्ष्य पर छोडर वार आव। विटबना मजबूरी रो ई दूजी नाव है।

क्षेत्र सोचण लाम्यो हुन्य इण जनाल मंत्रास्था र इस्त्री नाय हु। केत्र सोचण लाम्यो हुन्य इण जनाल मंत्रास्था र इस्ति क्ष्यो र देशो। अध्यय तव मंत्रदक्तो क्षय ईमार्ग्यानी जावू। अनेक सदीत भय री करूपना सुज्यार चरणाय सुपती आवण लागगी। ह्यान कि सोची हो ? 'सोच नोई हो[?] धार विस में ई ।' चमकर चळू करतो राणो बोल्यो।

'म्हार विस में का धनकी र विस म⁹' काठडी घोयर छनेडी में राखती। परिवराणी ठिठोळी करी।

'धनकी मेण्सा काई गुण है? हूती धारी आख्या री गराई मे गम्योडो हो। लोटो राज्यत राण उथळो दियो।

याळी माजगसारू ले जावती वा बोली— ये तपो (हू अवार याळी माजर साव ह ।

थोडी ताळ मंबा पाछी आयगी। पल्ल मुभासर मूजियो लेयगी। हाप मुद्री थोयो अर पापर री लावन सुमूढी पूछती पाछी आयर वन बठती बोली—अब बतावो ये काई सोच हा?

सोच काई हो ? भीवा मरत रा हाड वापण लागम्या हा। पळपळाट करत चर वानी देखर बोल्यो— श्री चिलको कांग्र रो है ?'

मूलो ठडो पडण लागम्यो हो। बेपडी भोभर मे ओटती बोली— पालो अब सावा। वोहर-जेव दिन चढायो हो। लाभो साप हो। सूरव की तेजी माप हो। डाकर ठरगी हो। टावर तावड म ऊभा हा। वेद छोरा रम दिरगा टोपना ओडपोड हा तर वेद मानारा तोवा चमावर कोड रास्या हा। डोवटी रा भूगत्या परघोडा हा। कमर में वाणी कन र दोरा रीवनोडण बोवोडी ही। कनोडपा म माराळ्या वोडपा अर छमलोळ्या पोयोडा हा जिक सू टावरो न निजर नी साग। पत्ता ऊभाणा हा। दो-जेव छोरी र गळा म हसली ही। छोरघो गोडो लाई पायिया पर रास्या हा। माप कतर पाटोडा ओडणा री छोटी छोडप्या बचायर नास रासी हो। गळ मे देसा पानी पानी पानी रास्या हा। भेळा हुयर सगळा टावरिया गाव हा—

> सुरजी बाबा तावडो ई काढ धारा टाबरिया सीमा ई मर।

जुनायां चीक रो नाम कर ही। आदमी चासल में दताळी कर हा। सासती न चरण साह बार काड दिया हा। सांव रा मीट्यार जुना है सपळा पाय लाग्योश हा। गावा म स्रो दिवाज है न पूर्व कमावस अर इग्यास र र दिन वाकी मोनी मोर्डिज दिरावणो नोनी हुव। इन कारण चुनायां रो वेगा अर मोडो उठणो दिना गाय निमर नर—जिन दिन योडो पणो काम हुव, तडक उठ आव मर निग दिन पीतणो विलोवणो गो हुव उण दिन सूरव कम्मा पत्नी यठ जाव। मिनत सदा है मुरज र साग ई उठ अर गोहर राठ गायां पद्म सो जाव। राण सूरज ऊपता ई उठन जरूरी काम सूफारिक हुयर सिनान करफ! पछ माताजी रो व्यान घरफो । घडी श्रेक दिन चढफो जण राबळ में ठाकरा सुमिलण न चाल्यो ।

रावळी क्यो वको बणायोडो हो। तीन कानी वाड लगायर रावळ रो रूप बणायोडो। सामन भाठा लागावर गोवर वीळी मिट्टी अर मुख्क मू नीप्पोडो हो। जीवण हाम कानी चीकी बणायोडी हो। वीची मारा कीठी हो। सामन लांबी चीडी बालळ हो। बालल मे तावट म वठो मोची ऊठाँ र जीगां र कारपां लगाव हो। पाक-साठ ऊठ ऊम। हा। सामन चूतरी माय दो-तीन मावा ढाळपोडा हा। तावडो चडतो जाव हा। ठाकरमा माथ माय बठा हा। परवार रा दो जैन जणा कन वठा होळ होळ वाता कर हा। राण बाळ म पन्यारो करन जायर आवण रा मूवना थी। सलारो सुण्या सगळा रो प्यान राण कानी पयो। राण सगळा सु ज माताजी री करी अर क्यो—'वाई सला मृत हुव है?

'आवो राणोजी आज दिनूग दिनूग ई '' ठाकरसा बोल्या--- कठई बार गयोडा हा कोई ?

हो, दो चार दिनां सारू बार गयो हो।

मई आदम्यांन तो मोरचनाय मेल दिया है अर म्हार्रजावण री स्पारं बस्तीज है। ठावरां हाचर इसार सूराण न मांच माथ यठण रो क्यो।

राणो मांच री दावण वानी बठायो । ठावरसा बायर बादस्या सूचोडी ताळ मतानून वरता रया । हुण-हुण वर दूमसी ठावरसा सीमा ई अठ सू रवाना हुमन भीम मारग माम पत्या जागी विद्या विद्या आगमी अठठ अर बठ्या पादमा हुण र साम हुमी । साळी बानो वरन सगळा आप आपर किकाम-सर जावण री स्वार्ध करण सामामा ।

रावल मे

पोहर-जेन दिन चनायो हो। आयो साफ हो। सूरज की तेजी माय हो। डफर ठरणी हो। टावर ताबड मे ऊमा हा। केई छोरा रण विराग टोपला ओडपोड़ा हा अर केई गाभारा कोया बणावर भोड रास्या हा। डोवटी रा कुगल्या परपोड़ा हा। कमर से काळी ऊम रहोरा री कनोडधा वापोड़ी हो। क्नोडघा मे मारिळ्या, कोडचा अर कन्तोळ्या योज जिंक सुटावरों न नित्रर मी लाग। पगा ऊमाणा हा। यो ओर छोरा र गळा म हतली हो। छोरघा गोड़ा ताई घायरिया पर रास्या हा। माय ऊपर पाटोडा ओडणा री छोटी ओडच्या बणायर नाख राखी हो। गळ मे देवता रा पगलिया पाल रास्या हा। भेळा हयर सगळा टावरिया गव

> सुरजी बाबा तावडो ई काढ धारा टावरिया सीवा ई मर ।

लुगायां चौक रो काम कर हो। आदमी बालल म बताळी कर हा। सासरा न चरण साल बार काढ दिया हा। याव रा मोटघार लुगाई सगळा पर लायोडा हा। यावा म का रिवाज है के पूर्क सगळात कर इम्पारत र रिवाज की के पूर्व सगळात कर इम्पारत र रिवाजिक को की हुं वा इस्त कर हम्पारत र से पाले को कि हो कर कर काल का नामा रो बेगो अर मोडो उठगो दिना माथ निमर वर—जिक दिन योडो याचा गाम हुन, तडक उठ जाल सर जिला दिन पीसको विलोजनो में हुव उण दिन सूरज उम्माप ली उठ आवा। मिनल सदाई सूरज रसागई उठ अर पोहर रात नामा पक्षी आव।

राण सूरज कनतो ई उठन जरूरी काम सूकारिक हुयर सिनान रूरपो पछ माताजी रो ब्यान परमो । घडी अर्वे दिन चडमो जण रावळ मे ठाकरा सूमिसण न चाल्यो ।

रावळो कचो पको बणायोडो हो। तीन नानी बाद समापर रावळ रो इस बणायोडो। सामन माठा लागायर गोवर, पीळी मिट्टी अर मुख सू नीप्पोडो हो। जीवण हाम कानी चौकी बणायोडी हो। चीकी माया और हो। सामन लांबी चौडी बाखळ हो। बाखल मे सावड मे बठो मोची ऊठो र जीगा र बारप्यां लगाव हो। चाव सात ऊठ ऊमा हा। सामन चूतरी माय दो-तीन मावा डाळपोडा हा। तावडो चडतो आव हा। ठाकरसा माव माय बठा हा। परवार रा दो अंक जणा कन बठा होळ होळ वाता कर हा। राज बालळ म चखारो करन आपर आवण रा मूचना दी। खलारो सुण्या सगळा रो घ्यान राक्ष कांची मयो। राम समळी सूज माताजी री करी झर कयो—'वार्ड सला मूत हव है है?'

आवो राणोजी, आज दिनूग दिनूग ई।'ठाकरसा बोल्या---'वठई बार गयोडा हा काई?'

'हां, दो चार दिनां सारू बार गयो हो।

नेई आदम्या न तो मोरच माप मेल दिवा है अर म्हार जावण री त्यारा बरतीज है। ठावरा हाय र इसार सूराण न माच माय वठण रो क्यो।

राणो मांच री दावण बाती बठायो । ठावरसा आपर बादम्या सू पोडी ताळ मता-मून करता रवा । हुण-हुण बद दूमसी ठाकरसा सीधा ई अठ स् रवाना हुन्द मीप मारग माथ चन्दा जानी दिता दिता शहमी, ऊठ अर बळ्या गारपा हुन्य र साग हुसी। सम्ब्री बानो करन सम्ब्रा आप-आपर विकास-सद्यासम् री स्वार्थ करण सामग्रमा। पोहर श्रेक दिन चढायो हो। आभो साप हो। सूरत की तेजी माथ हो। डाकर ठरमी ही। टावर तावड म ऊमा हा। केई छोरा रम विरता टोपला ओडपोड़ हा अर केई मामारा होगा वणावर झोड रास्या हा। वोवटी पा भागवा पार कोड रास्या हा। वेवटी रा भगवाय परयोड़ हा। क्यर में काळी ऊन र डोरो री किनोड्या साथोड़ी ही। कनोडपा में मारळिया, कोडपा अर स्वलोळपा पीयोड़ा हां जिक सूटावरांन निजर भी लागा पमा ऊमाणा हा। वो लेग छोरो र मळा में हसली ही। छोरपा गोडा ताई पापरिया पर रास्या हा। माय ऊपर पाटी बा ओडणा री छोटी कोडपाय वणावर नाल रासी ही। गळ भे देवता रा पालीबमा थाल रास्या हा। भेळा हुवर सगळा टावरिया याव हा—

सुरजी बाबा तावहो ई काढ पारा टावरिया सीवा ई मर।

लुगायां चीक रो काम कर ही। आदमी बालल मंदताळी नर हा। सासरा तथरण सारू बार काढ दिया हा। गाव रा मोटपार लुगाई समळा यथ लाग्यो डाहा गावा न सा रिसाज है क पूर्य आयात कर प्रयास स दिन चाकी कोनी भोडेंच विद्याच्या कोनी हुव। इस वर्गाप्य तुवाया रो वेगो अर मोडो उठगो दिना गाय निमर कर—जिक दिन योडो पणो काम हुव, तडक उठ जाव अर जिण दिन पोसको विलोचनो नो हुव उस दिन सूरज कस्या पत्नी उठ जाव। मिनल सदा ई सुरज रसाग ई उठ अर पोहर रात गयां पक्ष सी जाव। राण सूरज कगता ई उठन जरूरी नाम मुकारिक हुमर सिनान करमो पछ मातानी रो ध्यान घरघो। घडी लेंक दिन चढमो जण रावळ में ठाकरां सुमित्रण न चाल्यो।

रावळी क्यो पको बणायोडो हो। तीन कार्या बाद समायर रावळ रो रूप बणायोडो। सामन भाठा लागावर गोवर पीळी मिट्टी कर मुरह सू नीप्पोडो हो। जीवण हाय कारी वोकी बणायोडी ही। चीकी माय कोर हो। सामन लावी चोडी बालळ हो। बालल से सावब से बठो सोची कठां र जीणा र कार्या लगाव हो। पाय सात कठ कमा हा। सामन जूतरी माय दो-तीन माया ढाळपोडा हा। तावडो चढतो जाव हो। ठाकरता माय माय बठा हो। परवार रावी केल जणा क्न बठा होळ होळ बाता कर हा। राज बालळ से खलारो करन आपर आवण रा मुबना थी। खलारो सुच्या सगळा रो ध्यान राज कार्यो मधी। राज समळा सुंज मातात्री रो करी कर क्यो—'कार्ड सला मूल हुव है?

'आवो राणोजी, आज दिनूग दिनूग ई।'ठानरसा बोल्या—'कठई बार गयोडा हा काई?

'हो, दो चार दिना सारू बार गयो हो।

नेई आदम्यान तो मोरच माय मेल दिया है आर म्हार जावण री रमारा बरतीन है। ठाकरा हाय र इसार सूराण न मांच माय बठण रो नयो।

राणो मांच री दावण वानी बठायो । ठाव रसा आपर आदम्या सू घोडी ताळ सना-मूल वरता रया । कुण-कुण वद पूगसी, ठाव रसा सीधा ई अठ मू रसाना हुन्य मीध मारग माथ चन्या जागी, विता विता आदमी ऊठ अर बळ्या गावमां कुण र माग हुसी। सगळी बाता वरन सगळा आप-आपर ठिकाण-सर जावण री स्वार्थ करण सामग्या।

रावल मे

हो। डाफ्र ठरणी हो। टाबर ताबड़ म ऊमा हा। केई छोरा रग विरवा टोपला ओडपोड़ा हा अर केई माभांदा कोगा बणायर श्रोड रास्या हा। डोवटी रा फूनत्या परपोड़ा हा। कमर म काळी ऊन र डोरो री कोगा पोड़ा हा। यापोड़ी हो। कनोड़्या में मादळिया कोटया अर हजलकोळ्या पोड़ोड़ा हा जिक सुटाबरों न निजर नी लाग। वगा उमाणा हा। दो अन छोरों र गळा में हसली हो। छोरघा गोड़ा ताई पापरिया पर रास्या हा। माय ऊपर पनटोड़ा ओडणा री छोटी ओड़्या बणायर नाल रासी हो। गळ म देस पायर पनलिया पाल रास्या हा। भेळा हुबर सगळा टाबरिया गव

पोहर-अंक दिन चढायो हो। आभो साप हो। सुरज की तेजी माध

सुरजी बाबा तावडो ई काढ मारा टाडरिया सीया ई मर।

राण सूरज काता ई उठन जरूरी काम सूफारिक हुयर सिनान करथी पछ सातानी रो व्यान घरघो। यही श्रेक दिन चढ़घो जण रावळ मे ठाकरां मुमिलण न चाल्यो।

रावळो कचो-पको बणायोडो हो। तीन नानी वाड सगायर रावळ रो ख्य बगायोडो। सामन भाठा लागावर गोवर, पीळी मिट्टी अर पुरुढ सू नीम्पोडो हो। जीवण हाप कानी चौनी बणायोडी हो। चीकी माथ ओटी हो। सामन लावी चौडी बावळ हो। बातल से लावक मे बठो मोंची उठा र जीगोर नगरपां लगाव हो। जाव मात कठ कमा हा। सामन चूतरी माय दोनीन मावा डाळपोडा हा। तावडो चडती बाव हो। ठाकरसा माच माय बठा हा। परवार रा दो अन जगा कन वठा होळ होळ बाता पर हा। राण बावळ से नवारो परवार ता दो अन जगा कन वठा होळ लोळ बाता पर हा। राण वावळ से नवारो परवार ता दो अन जगा कन वठा होळ तोळ बाता पर हा। राण वावळ से नवारो परवार आपर जावण रा सुवता ही। खलारो सुण्या सगळा रो प्यान राण कानी गयो। राण सगळा सू 'ज माताजी री वरी अर परी—'वार्ड सता मृत हव के?'

'आवा राणोजी आज न्त्रिय दितृष ईं [!] 'ठाकरसाबोल्या—'कठई बार गयोडा हा कोई ?'

'हो, दो चार दिनो सारू बार गयो हो।'

'ने ई आदम्यान तो मोरच माय मेल दिया है अर म्हार जावण री स्पारी बरतीज है। ठाकरा हाय र इसार सूराण न मांच माय बठण रो क्यो।

राणो मांच रो दावण कानी बढायो । ठाकरसा लापर लादम्या सू योडी ताळ मतान्मृत करना राग । हुण-कुण कद पूगसी, ठाकरसा सीमा ई लठ सू राग तुवन मीम मारा माम पत्या जागी, दिता दिता बादमी ॐ ठ बर कठ्या गारपां कुण र माग हुसी। सगळी बातां करन सगळा आप आपर रिकाण-सर जाकण रो त्यारों करण सामाया। सगळा गया परा अण राणो बोल्यो — बद न सेनापति बणायर भटनेर माय घावो बोलण सारू केई दिना पत्नी ई निक्रमपुर मूरवान कर दियो है। मन आ जाणकारो बठ ई मिली।

'सगळी वात साची है [?]

'हां आपर कन परवानों कोनी पूग्यो काई ⁷'

को तो षार जावता ई पूगग्यो हो । और कोई बात हुसी ?' उत्सुकता सुपूछ्यो ।

'बात समळी हुमगी। वा आवणन त्यार है। हु वणन वेसम सीमो काळी दूमरी पूग जान । आप कट मूं इंचणन बुलाय लिया। हुमोडा दिन वठ है रसू। बात मोळी पड लासी जण आपरो सनसो आया सूपाधो आ जासू। मी तो मन ठावर सुरजनसिंहजी सूबर रसी। ठावर सुरवनसिंहजी अबार धाय माय गया है जण ही बात करण रो मोको मिल सक्यो। समळी बात त करन आयो ह। राण सारी बाता खुलासा करन बतायी अर चुण हमयो।

सीमाळ में ठाकरा र निलाड गाथ पतीन री बूबा बावण सामगी। सिकण साम री दिया ई रीडण लागगी। नाळती बन सू जावती साम्यो। मिकण रा मुख लांबी दूरी सू पाछो बोडण लागयो। मोडा सुन्त हृष्टर बीस्या— बगई बताज, मन तो काल ई जावणो पडसी। सीघो वठ ई पूणण रो परवानो आयोडो है। बा समळो न बा बात हाल ताई बतायो कोनी है। हु तन ई अडीज हो। अब सू बाययो, हु अठ सीघो चत्यो जासू। उपन बुलावण रो सगळो बन्धोबस्त व रतो जान्। की नमर दस तो तु देख सेथी।

थे गुलाव न भेज त्या। बो धनकी न तेयर अठ आ जासी अर पछ आपन सगळा समाचार मृगताय देसी। राण समभायो।

बोहळी ताळ ताई च्याई बाता हुवती रयी। राणी बो-यो--- अब हूँ जाव ? सिक्यारा का काल दिनुगुपाठो मिल लेग । हा। 'क्यर ठाकरसा अंक गरो निसकारो नास्यो जाण काळज रा दो टुकहा हुचन बिलर हा। पची मोठी बात होय सू अळगी हुव है। हुकार र साग ई ठाकरसा री बोहळी इखाबा उणा न इया छोडगी जिया सुरीत सुख मे इकरणी सा गरब र कारण उणान अवविचाळ ई छोड जाव।

चर री वमक होछ होछ मदी पडण लागगो हो। बाळजो सो सो हाय नीच न्वतो जाव हा। ठावरसा सावण लागग्या—आपर विस मे, ठुकराणीला र विस से बर पनकी र पिस से । की जियक पूमल लागग्यो जोर जोर सू। पूनत पूनत इल कक मे दो ई रवग्या। ठावरसा हारन देख हा—ठुकराणा पनकी, पनकी ठुकराणी। बेक रो जातिगत बहुकार वर बेक री कोरत गत विशेषता जिवरी आपरी जरूरत न तैयर जीवणो चाव हो, ठरक सू। ठाकरसा आप रो सगळो कण मुलायर केक विनक च्यू दो घडी जीवणो चाव। अर को जीवण उलन बठ जापरो सगळो परस गळाय न केक हुय जाय बर महती मुख सदारीर लडी हुय जाव। ठाकरा न यनको जीतती सागी बर ठुकराणीसा आपर अहर साग हारता लाग्या।

चदत तावह साग ठाकरसा र तिलाह माथ प्रमीन रा बाळा छूटणा। ममछ सु तिलाह राह रावह र पूछ्या जाण आवरी सगळी उदासी न रूछ लेवणी बाव हा। पण उदासी विकाह माथ कोनी हो। बा दूर कठ ई बठी बठी आपरा अनाण गर्नाण मेन हो। ठाकरसा माधनी मार सु पीटीज्योहा हा। आस्था उणा री खुती ही, रणसामन रीख की कोनी हो।

आप न आरोगण बासत अहोक है।

'जा, पाणी सा ।

वाणी आया पछ ठावरसा आपरो मूढी रावड रावडर घोमी अर कुरळो करपो, जाण उदातीन घोमर पाणी साग बवाय दो हुव । अब उण माथ मूक है। टक्षरियो खोलर पाणी साग बुस ली। विलान भरण रो हुकन दिलो। दो तीन पूना बांची जण मूढ साथ माडाणी मुननान सावणी ताव आयी अर आरोगण साल चाल पडया। मिसर अने बार है जूबो चलावता। बगरत वेबसत कर रवतो। इण बासत सीयाक म दो तीन पदी मूबो बवतो। सगळी है लुगावा पाणी लेवण सारू मूब जावती। जिरू परा म गणा पाणी लावता वारा मोटियार दाना अकता मूब जावती। जिरू परा म गणा पाणी लावता वारा मोटियार दाना कि तकता मुंचाणी लावता। पेर भी कोठा शिक्ष्य ताई पाणी सू प्रचो रवतो। ज किणी न जरूरत पढ तो निन बळ्या ताई पाणी लाय सन् हो। पण ओ आम रिवाज कोनी हो। सगळा पाणी लावण रो वाम पोहर दिन यन इं पूरी कर नेवता। शासर सारू केळी में रात दिन पाणी रवतो। माव रा सासर ईं पोवता वता जर बटाऊ लोगा र यन न ईं पाणी रो कोई ताकतीए को बटाऊ नी। राज रा राईका ईं ळठा न अठ ही गाणी पावता। पणी बार तो ब सात्य सिह्या ईं अठ गाणी पावण सारू लावता। चणी बार तो ब सात्य सिह्या ईं अठ गाणी पावण सारू लावता। वची कर सारव्या अभा जार आया जावता। व सावता। व सावता। व स्वी म सार्य रिकाम कर व र देवता।

गाव छोटो हो। योडी सी बस्ती ही। सीयाळ म सगळा गावआळा

पडोई अर नोती हो। पट्यम नन छोटो वात माळा सातर पडोई ही। नोठ र सार सार सेळी ही। नूचो च्यारा मानी तानळा समायर पनी बयायोहा हो। नूच र सार पोळ वर नीस हो। इसा र कन माटा मोटा भारत गरयोडा हा जिंका माथ गाव रा मोटचार अरटावर सिनान नरभा करता। नन ई अंक रा पढ़ी रो सातरो सेजडो हो। सुमाया अठ तेल डाळण न आवती। नानडिया रा महूना अठ ई चतारती। निजर रा उतारा अठ ई

भूवो गाव र बार हो। पाणी ऊडो हा। साठ सितर पूरस नीच। नो

करतो। इण बासत ठोड ठोड जतारा रा ठीकरा पडमा हा। छोरी छोरा इणान कावरा मार भारत कीडता रखता। उतार रो धान अर मरूबी र बाक्छारो धान बिलारण सुबठ नीडी नगरो ई हुग्बा हो। खेजड माय लाम करडारी भरूकी रो धजा धून र साग कराव हो। अळग मूई उणत दैव्या सोमान माल २ मे साण निजर ला जावतो।

सूरज माथ मू बळ ज्वयो हो। जाज ठड मी मम हो। पणिहारपा पाणी से जाय हो। बाप वासत उठ, जर बेठा वासत वळाम माडवा कूज कर सही हो। जायमी मिनला भे घड़ो है सू दूप बिया मर भर न हाथा माथ पहा हुज कर है। जुमाया तर माथ भड़ा कर कर कर रे ले जाय हो। सेळपा पाणी सू पाठी भरती हो। मूजो पाल्या न योशी ई ताळ हुगी हो। सातर पाणी पीव हा। गण री काळी मयर जूजी साड पाणी न जबा जबार पीज हो अर मण्डे पू मू कर पाछी है साड कर गो हो अर पीण पीच हा। माइत कर तो ही तिसळ जाय। येट जिप्यो हो। भूदी हुगरी सी खड़ी छोटो पोड़ी री। अंदर हवी सो हो। जाय सार सी नाह ही। पमा री नळपा सत्वी ही। पाचरो तीलो हो। बसास म काडपोड़ा पळसी रा माइणा क्य वथण पू पिटण लागाया हा पज बारा साज, हाल ताई गोर सू देख्या निजर क्षात हा। मोरी साड री नाड माय पड़ी हो। पा कळगा कळगा कमा कमी कमी बसाय कर हा! साद सा पड़ी ही। पाओ साळ कमा कमी कमी बसाय पर हा! साद न इसा सरती हेथी जा पूछपी—

पाणी क्या चवाद है ? 'योडो चिकणास दियोडो है ।' किता दात आयग्या ? तीन ।'

द्रत न गुलो नाडतो ऊठ पाणी पीषण सारू जावती विडकती साड न नृपद और जोर स गुला नाडण लागायो। राण दानदा करन होड़ करण री नेसीस नरी। साड ई लारसी टाया और पीडी नर नी। युवकारो नावती भगवानी जेट्यो— म्हान टोडिय कन छोड़ देयो। आयल साल ताई बात। जित इ रो छोटा भाई टोडिया स्वार हुय जाव। बाई इण सुमित्रतो जुनतो है। दा साल छोटो है। राणो बोल्यो— 'बोहळो मोडो हुबग्यो। आ कबर मोरी मालर साट न लेवन घर काली चाल पक्ष्यो।

कूब र सारे सार कादो पणा हो। जागा जागा पोठा मीनणा मीनण्या विलरपोटी हो। सह सहर नथ रो भमको कचो उठ हो। गांव से बहता है अकूरढी हो। अकूरढी रो भमको कोभी तर नाक सारतो हो। राणो होंछ होळ पर जाग हो। सारत से सासरा अर सानता रपगा सू रजी उढ हो जिल्ला कुण कुण हे क्यांची हुए जावती। सारत से लोग मिसता जल 'क क्वांची रो अर ज माताजी री कर हा। यज राणो तो आयरी पुन से सीधो चालतो जान हो। यर पुगर साह न ठाण र बायर एस रळकाम दियो। गांवी पाणी पीर आयसी ही जिनवा न वाच दी। यछ चिसस भरत पीवण लागम्यो। उनकी स कीचडो लोटीजण रा समीह अब ठरावा हा।

मान रो जीनण केन सीधो मारण हो जठ अपनिक्वास मरो जिनवास
लगाम प्रमार हो। अन दूज रो मान रालणो आप रो पत्नी फरज सममता
हा। मोटमार कुगार दोनू मिसतर घर रो अर खेत रो नाम नरता। जनाळ
मे जुगामा परसी हालती अर मोटिमार नेरिया नातता रचता। इण तर थोनू
मिसर आप री घर जिरस्थी चलावता। समाज रो परपरा रूडिमा सू भरी
ही। बाह्यण अर राजपूता रो मान हो। बाह्यणा सू घरम र नाव मू उरता
अर राजपूता न उरता थोनता। सो नी मिसार अेक दर रो जीवण हो।
सेस हालज मे नदर्द नदर्द शीवण मे सनट आ जावतो जल गाव रा
बुदा बहैरा भेळा हुय न समस्या रो मुक मूनसार खारी मीठो समाधान काव
सेवता। जीवन फेर सीधो चाल्य नाम जरता हा। ठाकरान विसेस माल
हो। पण रासळ मे वळाई सगळाई काम करता हा। ठाकरान विसेस माल
देर इण वात मे सूट देव रासी हो। गोल्या वेडरस्था ठाकरा र पर रो काम
भी करती। एव मुक्त पर म कथी नीची नाम करणी परती। [जिन्नी मोस्या

ठाकरा रो निजर मे चढ जावती उण रो स्तवो घणो वध जावतो । रूप र लार पासवान रो पद भी उणा न निल जावतो । पण उणा रो सतान गोस्या मू ऊली अर भाईया सू नीचो ही रवती । इण नारण पासवाना पोडी समझदार हुवती अर सस चालता थका सतान थदा हुवण रो काम दोडी राखती नी । मूल जूक रो बात यारी हुवती । ठाकर गोला रा स्थाव आपर गोला साम कर देवता पण उणा रो उपभोग ठाकर ई करता । चनकी दणीज तर भाँट्याणी सा र सामे स्थाव मे आयी ही । वखत र जोर सू उणारो रूप भोलो निखरणो । मोट्यार कवारो मर सक पण छोरो गूगी गली किसी भी हुवो कदई कवारी को मर नी । उप रो स्थाय छोर साग मी कियो जाय सक तो लाड साग ई करन कवारणो उतार देव । समभदार आदमी हुवा रो रूप पण्यान आग रो रस्तो काड लेव । इसी ई रस्तो सनकी र मामल म

दिन ढळण लागमो हो। राण मर म आयर गामा न दूसी। बाछडा न छान हेठ बाध्या। गामा न ओटो देयर सेजड नन बाध दी। साढ माथ भूल नाल दी जिण सूरात न यवर पढ तो सी नी छाग।

राणो जीम-जूठर विलय पीर ठाकरा सू मिछण भ बाहयो । ठाकरसा साळ में बठा होको गुडगुडाव हा राणो कन जायर 'ज माताजी री करज बठम्मो ठाकरसा रो बरो चिंता सू मुरभायोडो हो। मौको इसो हो जिको की करपो भी कोनी जा सक हो। ठाकरा कथो— 'तू तो जा। अर म्हारा आदभी काळी हुगरी कन गुजासी। पछ तू सरबूजीकोट चस्मो जाय। म्हारो बुगरो सन सी मन जठ ठाई बठ ही रथी नी तो यार माय कोई आपत आय जावता।

राणा बोल्यो-- 'ठीव है सा। हू काल तहक ई चल्यो जासु।

धूवो कावता ठाकर बोल्या— आग गोपाळ घार सूमिलतो रसी। बो पार कय मुजब काम कर लेसी। सगळी बात ठाकर सुरजनसिंघ न मालम तो पढ ई जासी। ब कठई ऊघो अरचना ले बठ अर मार म्हार दोना माथ आफ्त नी नाल देव । इण वासत काम बड़ो ही सोच समक्तर होसियारी सू करी अर मारग में पकडी जण रो अदेसो हुव तो बखत मुजब काम कर लेगी। आग हसी जिकी देखी जासी । राणो मिलर पाछो घर आयो ।

होळ होळ ठढ री चादर लाबी हुवण सामगी ही। गाद ठड सु हरन गूदडा म बडण लागम्या हा । धूव रो परकोटो गाव न क्यारूमेर सुधरण लागम्या हो। धूई वन री हताई बगी ई खिडगी ही। काळी रात ठड र कारण

और ई भयावणी लाग ही। राणो ऋदो दकर ऋपद म बह न सायग्या।

वित्रमपूर राराजाजी प्रजारी ध्यान बटावण सारू भटनेर माध आत्रमण वर दियो हो। इण आक्रमण सुराजाजी न दोलडो पायदी हुयो । क्षेत्र तो राजाजी राजिता ई विरोधी हा उणां विरोध करण से खुली मौको कोनी मिल्या । इसरो, जनता री ध्यान भी राजाजी सुहुटर भटनेर कानी चल्यो गयो । छोटा मोटा जिन ई राजाजी र इण व्यवहार सुनाराज हयर आप-आपरे ठिकाण गया परा हा छणा माथ दबाब नाखण रो मौको -मिलग्यो अर सणा न विरोधी घोषित करन उणा माथ धावो करण रो बहानो मिलन्यो । इता पापदा हुवण र साग साग राज रा नुवसाण भी घणा ई हुमायो । जागा जागा छोटा मोटा उपद्रव हुवण सागम्या । राज री व्यवस्या विगडण लागगी ही। राज रो खजानो खासी हुवण लागग्यो हो। घाट र कारण राजाजी चेता चुक हवण लागग्या हा। रोज रो वधतो खरच अर ऊपर सुपडतो काळ राज री जहां न हलावण लागम्यो हो । सेना री भावना वाली कोनी ही। सा सगळी बाता सू परेशान हुयन राजाजी क्षेक नुवो निषय लियो । राज री सेना री दुव ही बलावण री घोषणा व री । उल सना माथ राज रो अधिकार राख्यो-सेना राजा र प्रति पूरी वकादार रही। इण सना न राजाजी खजान सुमीन देवण रो नेम बणायो । इण सुभः सुराजाजी री क्षेक सेना बणण लागगी । ठिकाणदारा री सेना टूटण लागगी, कारण ठिकाणदार सना न मीनू तो देवता ही कोनी । माफी म दियोडी जमीन भी स्थायी रवण रो कोई भरोसो कोनी हो। इण र साग-साग बेगार और लेबता रवता। बगत वेवगत घोडी बहोत नाराजकी हुवण सु देस निकाळी और दे देवता। आ समळी बाता स्ठाकरा री सना उणा स्मन मन म नाराज ई रवती। भा सगळा नारणा सूठाकरा री सेना टूटण सामगी अर राज री सेना री भरती बचण लागगी। मीनू मिलण रो लालच भर राज री सेना रा क्तकी— दोलडी आजपण लोगों न आपर नानी आर्जियत नर हो।

राज रो सरको दिन दूनो कर रात कानणो वसता जाव हो। राजाजो अ धा माळी वातान ध्यान म रासर नृवा नृवा कर लगावणा सककर दिया जियां मृवा कर सासर कर व्याव कर वगर। आ सम्ळी वाता सु जनता और परेगान हुवनो कर वित्रमपुर लाली हुवण लागयो। िव्याणवारो राजाजी री एग मळती रो पूरो फायदो उठावणो सक कर वियो प्रयत न भडकावणो सक कर दियो। ठिकाणवार स्वतन हुवण लागया हो। अक तो बाळ अर ठमर पूर्षपर माती। रचत री इवत वचणो हो मुसकत हो। इण र साग है पिडारियान मपाठो लालक देयर जेलावारो बानो भेन्न दिवा। राजाजी परेसान हुवन मराठा न भूठी हुवचा दो अर पिडारियान भी भूठा लालक देवन वाहा नेम दिया। यण हुवधा रो मुताल नी हुवण र कारण राज री साल जाव हो। यण वचाय काईकरपा जाव। हार न मराठा विडारियां न पाहा नेकण रो निरण विवा।

राजाजी इनाम बादी म पटा देवणा बद कर दिया। रेल पाक्सी करदाई सुजमायाची सर कर थी। इस सुराज री हालत और विमादक लागिया। व्यवस्था र नाव रो की कोनी रया। जागा-जागा अपदव हुक्य लागिया। विदाय कर काल्या। क्षांचा कर कालो हुक्य लागिया। क्षांचा के ठा हो निकल्प्यो। कालो सात कर कालो कि ता कर कालो हिक्य को कालो रात कर कालो कि ता कर के कालो है। आली रात कर कालो काल हो। राजा रा कालो हुक्यो को ता कर कालो हिन बील कर के कर के लोगे हुक्यो काला हो। आली रात कर कालो हिन बील कर के कर के लोगे हुक्यो काला हो। या राजा रा कार्या है मुसक्त हो के हुम्य राजा रा कार्या है मुसकत हो के हुम्य राज रा कार्यो है अर हुम्य लुटेरो। दोना रो केक सो ई स्थवहार हो—जनता न लूटणा। यूत लोग सोक रा कायदी उठावण म कर दुक्य हो। बा राज रा वारिया र सात मिलर लूट मयावधी सह कर थी।

सिंहया पढता ई बजार वर हुय जावतो । दुकाना रा फाटक दिन में आघा ढक्योडा रवता जर लाया पुता । उचार देवणे सेकदम वर हुययो हो । सोगा री क्रंक दूसर माय विश्वसा कोनी रसो । सरीददार अर सुटेरा रो नेय निकालणो ई मुसकल हो । राज री आप सेकदम ठप हुवण लागा। । विण्ज चौरट हुवच सागयो है। परा रा बारणा ढक्या ई रखता । जठ ताई पूरो विवसता नी हुय जावतो रात विरात वारणो ही नी खुलतो ।

राजरी सेना जागा जागा ठाकरा रै बलवा न दबावती फिरती। राज रो सेना र आवण सूरेल चाल री देवण राकोल करता अर उण र जावता है पाछा मुक्रर जावता। इण हालत से लुटेरा री बणगी। विणव रा मारण लुटेरा सू भरप्पा हा। बोळ योकार राज मारण में पाडेती पाडो नालता रवता। विणजारा आप र साण सठत विषो चालता। बाळदिया स्वासा साण रालता। सणळा सराजाम साग रालण पर भी पाडेती अर लटेरा सूबचणो ओली हो।

वित्रसपुर रो बजार सूनी सासा भर हो। रात दिन चालता चरवा चुप हुयाया हा। तवत्या देरिया सूना पटपा हा। सबी चुप हो। रगरेजा री आगळ्या जिसी रात दिन रगा में ईपती मुनी हुवण लागगी हो। लून दो छापण बाळा ज्या पृढ सू भरीज हा। छोट छापण बाळा पाटा सून पटपा हा। स्वेचक रो बातळ्या रो रग फीको हुवण लागमा हो। शास दिन हास ता हाढ अस वसास्या सूट हा। बगत साव माडो हो। क्तारिया रा बळच बठा ई बठा रवता हा। धान-तोसती ताक ही भेळी हुयोडी पडी हो। नगरावण माध परीदरार कोनी हो। इंदब बात रा बाहक धना ही हो। नगरावण माध परीदरार कोनी हो। इंदब बात रा बाहक धना ही हुए। रोजमार मुळवन सू पेट मरण रो नाव कोनी। हाय र सार सुमूळ र अधर माध टावरा न पळणो अर मुळ न सुरक्षित राखणो पड है। काळी पीळो चातती आध्या सू सहर मे मूडा रा घोरा तो बचता बात हा, अर भूल सू लोग मरता जाव हा। वित्रमपुर डजड़त बहरा री निणती से आधा जाद हो।

हा। भारण थो तो तो सावता सरनां सावण देवता। सजान री हासत स्रतायता अरु दिन भास्त्रसिंह सिरमाय शिक्ष मस्मयद तो राज री रमम स्राव है। राजाजी स्मरो तीन सार इसी बात हुसी जण चर्णान परा विस्तरास हुसायों अरु चर्णा उपान अरुनेर सुजरूरी साम राजांव सेमन बुलासन सारण में ही सहर देवर मरवाय नाव्या।

राजाजी कान रा काचा हा। व कान भरीज्यां पछ साच भूठ रा निषय है कोनी कर सकता हा। पणकरा ताजिमी सिरदार है परमचर वद रा विरोधी

विक्रमपुर रो खाको

राणो विक्रमपुर पूग्यो जण घडी दो दिन चढग्यो हो । डाफर चाल नोती ही। ठड की जमाव माथ ही। घूरी दरवाज र माय बढता ई मतरा री गवाही ही । मल पाणी रो नाळो मदो मदो बन हो । नाळ र सार सार यूथनी हलावता गळ-सूवर भागता किर हा। नागा छोरी छोरा बार लार लार नाठ हा। आगे चालर लोहारा रा गाडा लाग्योडा हा। बारी धाकणी होळ होळे चाल हो। शबर सुसिया रोटी बणायर खाव हा। छेणी माय छार कर हा। उणार आग खाली चौक पढ हो। हजार अके हाथ चाल्या पछ नटण्या रा परिया हा। चणा रा केई बारणा बद हा अर केई खुला हा, जाण रात भर री रगठ न दिनूग सुरती साग विखेर हा। इणां र पसवाड विस्ती रहता हा जिना पाणी री मसकां भर भरन लोगांर घरा मे पाणी पूनाव हा। इणा र पाछ तेल्यों री घाण्यों चालती ही। बजार में मदीवाडी हुबण सु इणा री घाण्या दिन चडधा पछ चाळणी सरू हुवती । घाणी रा बळघ हारग्या हा । तत्यां र सार कुम्भारां री चाकां ही। कुभारा र घरा र लार नाया ही जिका मांव स घ्वी निकळ हो। कुभारा र पसवाड चूनगरा री बसती हो। सुमारा री बसती आ दीना बसत्यां सू आगे ही । बसोल री खट-खट अळग ताई सुणीज ही। राणो इणांर सार हुबतो यनो गणेदाजी री बगेची पूरमो । दरवाजी खुको हो। बनेबी रमाय वहता ई डाव हाय कानी कुड हा । कुड र सार कांकर जनायर पामतण बणायोदो हो। बिरला म पामतण र पाणी स्कट भरोजतो हा। जीवण हाय कानी सुसी बासळ ही। बासळ म जाळ बर नीम रा रूस हा। सामन गणेशजी रा मिटर हो।

दोनारों पछ राजी घनकी सू मिलन बासत सणील र बार बार पास सणील रो शहर रो कूढो जागो जागा पदधा हो। मुगाया जगळ जावण सास् सणील रो सारो लेवती हो। ग्रमु गुराणो सणील सोहर लाग अधवो गयो जान काढका भरधो मारण निस्तो गयो। गारण म ठीड ठीड मुनियां रा बिल दै निजर साथ हा। माडक्या र सार सार राग काढघोडा लाडा ई हा। ऊदरों रा बिल ठेट ताई दीख हा। कठई नठई मरघोडा जानवरा रा हाडका पढधा हा। गिरफडा मास बूट चूटर सायया। हा अर हाडका सू रात न लोगां न जिन रो बस हुव हो। राजो उतावळा पर रासतो जाल हो। मारण से दो बेक तळायों ई दीखो जिकी सूची साडा वही। पाळ माय कम्योडा दरखता र नीच सासर बठा वठा चुनाळी कर हा।

राण न सुरजनिषयजी र देर नन वृगता-पूगता पढी सह सागगी ही।
बठ पूगर गमछ सु मूनो दूखयो। योळ मे बडताई देख्यो क चूतरी माथ मायो
बळर पोळियो बठो बठो सावडो सेव हो। अर विमठी बजायर सुगती वड़ावर
हो न सुगन मनावण रो जतन नर हो। पण तावड म सुसती और गरी इड़ावर
बाय हो। बासवा म सुसती रो भनक निजर बावण छागगी ही। राण न बडती देख्यो तो मन म गाळ बडाडी कर होठा सु मुळकार यकी बोस्यो—

ज माताजी री । आवा, पधारो ।

ज माताजी री। तावडियो लेवा हो बाई?

हा। मानो खास्टी करतो दोऱ्यो — आओ वटो ।' आग कयो — हाल ताई पाछा गाव यया कोनी काई ? काल ताई जासू।' माच भाष बठतो राणो बोल्यो--'मिलतो जाऊ अर समाचार ई सेवतो जाऊ आ मोचर आपन तकलीक देवण न आयग्यो।

'म्हान काई तकलीए है ? आपन जरूर आवण जावण री तकलीफ हुमी हुसी।

म्हान काय री सकलीफ। अंक पड़ी बेसी करघो सही जिके सूझाप लोगा सुमिलणोई हुय जासी।

हा, आ बात तो साची है। चर माथ जीवण र आखरी सास रो भाभास लावतो बोल्यो— आपरो आवणो तो कदई कदई ही हुव अर म्हे अब किया सर्वाई बठाग रसा।

कसा सदाइ बठपा रक्षा।

इसी काई बात है ? धीरज बधावतो राणो बोल्यो—'हाल किसा
पाच बीसी बरसा रा हयस्या ?

'बरस तो हाल ताई सोचतो सोचतो पोळियो क्षेत्यो— तीन बीसी कन ई पृग्या है पण दम स डील ढीलो हुमग्यो ।' पछ जोस लागर बोल्यो—

न न इंपूरण हु पण चन सूठाल काला हुमला। पळ जात लायर बाल्य 'नी तो हूं ⁵ आज मोरच माय हुमतो।

मोरच रा काई हाल है ?' बात मे रम घोळतो राणो बील्या ।

'हाल तो माडा ई है। पोळिय कयो—'बात्यां में ई बगत गुजार दियो। चिलम पाणी रो पूछयो ही कोनी।' अर यो चिलम भरण न उठयो।

योडी ताळ दोनू चिलम पीयता रया। अर्वे धनको न हेलो पाढ दो।' राज कयो।

ये ही नीच सहा हुयर हेली पाट दिया। आप रो नाव सुणता ई आ जासी। मन क्यूफोडा घालो हो ⁷'पोळियो बोल्यो।'

कोई बात नीं।' राणी उठर जानतो बील्यो।

राण जनानी डोडी कन जायर दो तीन पेडमा ऊची घटर हेली पाडयो। आवण सारू उपळा आयो। चौक में सगळी सुगाया बठी ही। हेली सुणतां ई पनकी मिल्रण सारू नीच आवण लागगी। वेडपा सूधनकी साथी लाभी उतरे ही पण उण लगावल में केक ठराव हो। मैंदी रच्योडो हाप जल बा भीत र लगावती उतरण लागी जण राण न इया लागये। जाण का भीत है पनकी र साग नीच उतर है। चाल में मधराई हो। आंख्या र सवारा माप कामदेव री मनुण तज्योडो हो। कीया री चाल कामण नर हो। वेडपा सू नीच उतराती री कमर भालों मारती सी दीस हो। भेट जमर दूमहिया स्रक्षकता हा। राणो फागण रो रसियों सो देखती रयो।

धनकी री उसडती सांस राण र लागी जण उणर होस बापरघो । यूक गिटलो राणो बोल्यो---'काल हू जासू । काई समाचार कवणा है ?

राजी खुसी रो कय दिया। काळ कोया सूकी पूछती सी बाली।

राणो होळ होळ सक बुदबुदायो । सगळी बात बतायर खखारो करन जोर सूबोल्यो— तो हु जाबू । राजी खुसी राक्षय देसू ।

राणो मुडर होडी र बारण सुधार आयो अर भूतरी माथ जायर गट माय सुतमालु स्वट न चिलम भरी। शासी निचीयर कथेटा अर मीगणो फोडर तमालु साथ राख्यो। हड्ळी सीन भून खाउर एक छोर सुखाडी तो पित्तम माय अंकर तो जोर री ली उठी अर पाछी मिटगी। घूसो छोटा पोडिंग्य न न आयो अर जिलम देवतो बोह्यो—सो दे दे फन खाच को।

'चे ई पीवो । मन घासी आ जासी । पोळिय कयो ।

राण दो तीन वस सागोपाग खाच्या । तमाञ्च बळर राख हुयगी हो । चिलम भाडतो राणो बोल्यो-— तमाञ्च तो सातरी बणायी है ।

'हां, हू आप ई माह-मूटर बणावू हू। राजी हुवती पीळियो बोल्यो। मोडी ताळ हताई करन राणो पाळी टक्को। चण रापस तो आस्म

मोडी ताळ हताई करन राणो पाइडो दुरधो। उण रा पग तो भारग माय चाल हा अर मायो योजनावा माम विचार कर हो। दिन क्षायण लागम्यो हो। ठड थयण लागगी ही।

अभिसार

टरें र लारल बारण साम घोडो दूर जाज नीच घूपी ओडवा माणस लडपो हा। मन साढ जववाडी हो। मोपी हाप म हो। पहर रात री तोप दानीजगी हो। डाफर बाज हो। तह तह बरन बूग पढ़ हो। पुरसळी सी अल्या भाट बानो जाब हो। सुसाड करती डापर, भरी सीयाळ री अपारी रात। पोहर अने बीत्योडी रात दमा लाम हो जाण जाघी रात हमगे हुव।

मक्रायत री सुनसान रात । आ भा विदूष सूई काळ बादळा सूभरोजस्यो हा। ठर ठर न भिरमिर छाटघा पड ही । सूरज रातो दन्सण ई कोनी हुवा। कि घोळ गंघीर अधारी हो । सिंभस्या दो घणी पकी ई पडगी हो ।

हिमाळ सूचातती ठण विषमपुरन आपरी बावास पर तियो हो।
ठण न पीरती को यदी वोशी पण ठड र भारम उण री आरवास त्वसी।
थोडी ताळ पछ भाटर नीच सूनक्वाळी छिया उपडणा लागी। छिया ताळ पछ भाटर नीच सूनक्वाळी छिया उपडणा लागी। छिया ताळ तोळ नाम आप ही।

तीन च्यार पावडा आग आयर राणा बात्यो— आयारि ?

हा। पडतर आया।

जीग माथ मू घूपी उतार न दी। या उच न ओन हो। दोनू जगा साढ माब बटम्या। मोरी देन्सान सान प्रभा हुयर भोजासर बनानी पात पद्मा। रामसर दा मारात जब चीच म आयो सान पलडा मारा छोन्द बठीन पटगी। दा घंडी ताह सीधी अह ई पात्र मू चानती रयी। न्तन

माताबी र मिंदर री धवा दीखण लगगगी। दोन जणा मानाबी न मन मन में ई मिमरण करन मिंदर न त्रीबण हाथ कानी छोडर गांव र बार बार ई क्षाग निकळपा। आग फेर सीधो राज गारण छाडर धाडती मारण ल लियो जिनो छोनो अर सीधो पडता हो। गण उण मारण म सतरो ई पणो रक्तो। रात निन मीत र मन रवण आळो न अ सतरा नो ई स्तरा नो लखावता नो।

अभिसार करती रात थकर मावण लागगी हो। अम री जडपा म गूटती लाखी अंक नूबो उत्साह पदा कर हो। नूब उत्साह र माग केवी नूबा सवाल आह्या आग आव हा। आधी भविष्य छाती माग साप सी छोटण लागग्यो हो। राजो गमब्द सुमूने पूछर जाण आपरी सगळी चितावा मिटा बणी चाव हो पण भविष्य सी समस्यावां और पणी भारी हुय न चर माग जमण लागगी ही। पावयोडे तूब सो सूरज सामन दीखण नागायो हो। परभारी पुत डाकर न चवकवा देवर सुवालती जाव ही।

धनको न उवास्या आवण सागगी हो। चुटको देवर वा नीद री मुमती भगावणी चाव हो पण वा और गरी हुयन आव। उदासी सावती पनकी बोला—'और किसोक अळगो चालणो है?'

अब दूगरी आयी ई समभा। नीद आव तो । किरची देवता बाचो—'दूणन गलाफ नीच देवाव ल । नीन उड जामी।

सूरज र तावक में हूगरी अळग गू ई चितकती निजर आव ही। कण यार पून र साग हालती उचा रो स्वागत करती सी निजर आव ही। करोर माय बगती वारी ज्य चमक ही। पून सू लाल पत्रा क्यां रोवती निजर ओ ही। ठह हळने हुवच लागरी ही। आगळगा म जान आवण सागगी ही। सीली पुषी पमवाड हुवती जाव ही। साड नूव जोस सू और साथी चालण सागगी ही। माता रा चका मारस आवण्या हो। चेत चेत करन राजों सान न सत्त री विकटता सुसावित कर हो। पण कण कर महंसाड न ठोकर साथ न साथ सी विकटता सुसावित कर हो। पण कण कर महंसाड न ठोकर साथ ही ती ही। हूगरी री गूग कि जम साथ न नेवल साथपी ही।

जहचा म पूर्या पछ साढ जनायर उतरघा। जीण उतारत से कडी र सार रात्यो। साढ न बाधर शतू पुढ़ा नानी चाल पहचा। जावण सूपती माढ रा दोनू नान उतार न रत्यों म पाल तिया भर रत्यों नाथ राल ली। उत्तराय पर रालता गेनू जणा मुना कानी जाव हा। गुना री गडी आटी टूटी भर ऊची नीची हुवण म चरण म दोरी ही। दोनू जणा बराबर चढता ई जाव हा।

वाडी कर्न

िन घडी अन चडाया। बाबाजी पूणी बन बठा हा। पूणी होळ होळ पूणी माय ग उठ हा। मीगणा छाणा अर इडा बीर रा दुक्डा नागर बाबाजी बासनी जगावण री बोसीस करहा। धीपियो पूणी म खडो कर गरावो हो। तूबी बन ई पणे ही अर सार ई विलम आडी मेर्ग्योश हो। बाबाजी अबार अबार ई बगली इकन नाथ आयर घठया हा। पूणी वितायर हो बाटचा बगावण रो विचार कर हा। उत न पेडा मांग मू ऊषो उठती साणे देवर सोचण सामा क बुण हुसी। होळ होळ राण रा चरो साक नित्रर आयम्यो। यरो प्याणा स्वष्ट चपत्र करमो व साय आ बुण हुसी। श्सीठड में अठ विचा आया?

पाय लागू बावाजी ! राणा बायाजी न आमण माथ बठा देयर को जो।

तुस रवा। आज वठीन सू[?] विक्रमपुर वानी सू। आसी रात चालता आयाहो वाई? हा।

साग कुण है ? आवा पली हाय तपालो ।'

धनकी बाबात्री र पता म नगरकार करन पूर्णी कानी अपूठी बठती। राणो हाथ तपावण नागम्या। बाबाजी बोल्या--- हाय तपा स। धनकी को तिराळ हाय तपायर गुक्त कानी मुसतावण सारू गयी गरी। राण सगळी बात बताथी अर सेखाबाटी नानी हुवण आळी नूई बाता री जाणनारी करी। समळी बाता हुवा पछ राण कुढ कन जाबर कमडल र पाणी सूहाध मूडी धोयर पाणी र मुटक साग किरची ली। यनकी न ईहाब मूढी घोवण रो कसर पाछा आयन बठन्यो।

दोकार पछ राणा धनकी न लेयर पाछो टुरग्या । कोस आळ घोर कन राणो मारण छोडर ऊजड हुमग्यो । धनकी पूछया— अठीन सिधारू चालो हो ?

आपा र रवण राजठ बदोबस्त है बठ चाला हा।' साढ घोडी ताळ ताई घोर री जड़ा म चालती रयी। घोर र पतवाड लेक हरयो भूरमुट दीखा। साइ सीधी बठीन चालती रयी। सिन्या पड़ण म आधी पोहर बाकी ही जिल तो राणो भूरमुट कन जाय पूथा। गाडी माप मूळा, कादा, गाजर मूला पातक बर पोदीण री गाठड घा घड़ी। जावण री त्यारी हो। सवार न देखता है बाडी माय सूमाळी बार आयो अर पचाणर बोद्या— आयो राणा। हु तो जावण री त्यारी में ई हो।

साढ जकायर दोनू जणा बतरणा। माली राण न बाडी म लेजायर सगळी बात बता दी अर फूपडी देवायर रवण री जागा बता दी। चाव दिवायर रावण री जागा बता दी। चाव दिवायर ताबो पाणी पीयण री बात बता दी। बाढी च्यार पाच दीणा म ही। बाढी र ज्याहमेर बाढ लगावर सासरा सू ववाव करपाडा हा। बाढी म बढता दे छाडी छोडी व्यारपा बणायोडी ही। बाढी री ज्याण माथ बरी बणावर चाव लगावरी ही। माडी री डावणी दी ही अर लेक लानी देवेंक सर रो आठो वाण्योडो हो। माडी री डावणी वाण्योडो ही अर लेक लानी देवेंक सर रो आठो वाण्योडो हो। माडी री बावणी वाण्योडो हो। में जब मान बावणा विद्यायण साम्मूददा राज्या हा। बाढी में दत बार बयारपा ही जिवचा म हरी सबली सुद्रदा राज्या ही। माठी सिंदमा तादाडी म काम करती, पाणी देवती सबली उपाढती, पोणी देवता अर लारिया म ना चादरा म वायर घर के जावतो। दिनून पर रा जुगाई टावर पान सट वेच आवता। माठी पाठी दिवन अठ

का जावता कर सिझ्या समान ल ाावता । सार सीयाळ ओ ही हिसाव रवता। चौमास क्षठ ईरवता । सेती ईनरतो । माळी न जावण रो क्या पछ राण धननी न भवडी म चन मृरवण रो कयो ।

साट रो जीण उतारन पाणी पायर बाडी म पडी र बाध दी।

धनहीं भपदीं म तोवगी ही। राणों पूणी चेतार नामळ ओडपां तप हो। अक अन द्वाणों अर योडी योडी भूरमस जरूरत मुजब उणम नालतों जाव हो। भूरम नाग्नता ई अन साग जो जोर सु उठती अर पाढी ताळ पण होडा दे कावती। रात र साग ठड़ है बपती जाब हो। च्यार कोज पणी हुवण सु ठड आप र नांच मूर्ड जाणीज हो। रात रो ओअको डील म सुसती लाब हो। पून ठड र आर मूमबरी पटती जाब हो। दूर दूर तार्ड बोलता गादडा नीद री भैरपा न तोड हा। राण नीद उडावण सास्ट ट्यारिय माय सु हिर्चा गाढर सब सी हो। पण हिरची ई ठड री मारी ठडी पड़गी हो। राणा पूणी नन कुनडो बच्चाडो वडपो हो। आपी रात पछ पननी बार अधी अर राण न दल र हासी अर जणन हाथ भारतर भ्रपदी में से जायन सीवाण्या।

तीन च्यार निन बाता बाना म ई निक्छम्या । राणी दूगरी माय जायर पता स्टर काम जावता पण हाल ताई बनी पूगी कोनी ही । तीजी बार गयो जाय बनी मिली ही । गाडीबात सूमाळी जाणवारी लो अर दूसर ई दिन बेगो ई सनकी न संबर पाछो आवण रो क्यर पाछो आयो । सनकी न अगल निन बालण री बात बतायी कर बेगो ई गाव पुगण रो क्यो

याद री दसतक

दूज दिन धननी न दूगरी वन लागर छोड दी। बसी धनकी न सगर रवाना हुवगी। राणो कन लड़ो देखता रवा। जीवण र अध्याय रा श्रेक पाठ पूरो हुमायो अर अब नृवा पाठ सरू हुव हो। आखो दिन बसी चालतो रयी। पत्री साथ विश्व हो हो। या सो दिन बसी चालतो रयी। श्रेक हो हो। या सावच सू यनने और पणी अळूफती जाव ही। रण उळफाड रो ना तो कोई आदि हो अर ना अत ई हो। पणी-देशास सास्व बळी रण ई काई यूव कन उरती अर पाछी पालण लाग जावती। धननी सोच हो भी जीवण बसी दाई है जक न रात दिन चाला हो। चाला कहा सु वह साथ सु यनने उत्त हो। पाणी-सास सास्व बळी रण ई काई यूव कन उरती अर पाछी पालण लाग जावती। धननी सोच हो भी जीवण बसी दाई है जक न रात दिन चाला साथ हो। वातता वालता श्रेक दिन वळप दूग हुम आसी, त्रूचो इणा र खाध सु उतार न दूजन न वळ प दूग हुम आसी, त्रूचो इणा र खाध सु उतार न दूजन न वळ प रणा साथ स्वयो आसी अर सा बळता न मरण सातर सेता म छोड दिया जासी। बार धनकी कन रूप है, गुण है पूछ है काल बुढापो आसी जण भूतर में मेज दी जासी अर रावळ री तरफ सू पेटिया मिनसी गुजार सातर। पण मन ओ कोनी मुगतणो पड ज कवास धनिदेशो हुण जाव

बुजो आवण सू भटको लाग्यो। चालता विचार टूटग्या। नाल ठाकरा न ओपता लाग्यो क टावर किया रो है तो दोना रो जीवणो इ मुसल हुव जासी। इया भय सुवा करपण लाग्यी। बादसी रोसगा कर मुसाल हुय जाव भर करन सामन देखर तो नाठ जाव। जसमा नी नाठ तो सामल रोभय नाठ जाव अर तुन्तु म ईसमाठी नियदारो हस जाव।/

हा ब कव हा नी क ठाकर तो मोरच माथ गया परा हुसी। दो-तीन महोना पछ आसी जण सारी बात हुसी अर किण न पतो चालसी क ओ किण क्षा जावता अर सिझ्या समान ल जाबता। सार सीयाळ को ही हिसाव रवता। चौमास अठ ईरवतो। खेती ईकरतो। माळीन जावण रो कया पछ राण धननीन भूवडी म चन सुरवण रो कयो।

साट रो जीण उतारन पाणी पायर बाढी म पड़ी र बॉध दो।

धननी भगडी म सीवागी हो। राणी धूणी चेतार नामळ ओडपा तप हा। बेन अेन छाणी अर घोणी घोडी भूरवस जल्दत मुजब उणम नाखतो जाव हो। भूरवस नालता ई अन साम ती जोर सु उठती अर घोडी ताळ एव पाछी दव जावती। रात र साम ठड ई बयती जाव हो। च्यान कानी पाणी हुवण सुठड आग र नाव सुई जाणीज ही। रात रो ओभको डील म सुतती लाव हो। दूर दूर ताई बोलता गावडा नीद रो भेरपा न तोड हा। राण मीद उडावण साल टपरिय माम सुविर्ची वाढर सेच की हो। पण विरची ईठड री मारी ठडी पडगी ही। राणा पूणी नं न कुमडो वच्छोडी वडपी हो। आछी रात एड एमकी बार साथी अर राण न देल र हासी अर उणन हाम भागतर भरवी म ल जायन सावाण्यो।

तीन च्यार निन बाता बाता माई निनळाया। राणो छूपरी माथ जायर पता मरन आप जायतो पण हाल ताई बेनी तूपी कोनी ही। बीतो बार गयो जाये बेनी मिली हो। गाडोबान सू सामळी जायवारी लो अह हमार है बिन बेगो ई यनकी ने समर पाछो आवल रो क्यर पाछो आयो। धनकी न अगल दिन चानकारी बात बतायो बर बेगो ई ताब पूराण रो क्यो।

याद री दसतक

दूज दिन पननी न दूगरी कन लागर छोड दी। बसी पननी न सेयर रवाना हुया। राजा हन न वहा देखता रवी। जीवन र अध्याय रो अंक पाठ पूरो हुयमो अर अब नृवा गठ सम्म हुव हो। आखो दिन बसी चालती रयी। मानी भोजती रयी। हिनकोळो र साग विचारों रा तातण टूट हा अर जुड हा एन पननी थो पारो कोनी छोड हा। पण साचण सूप मनती और पणी अळू असी जाव ही। इन उळकाड रो ना तो नोई आदि हो अर ना अत ई हो। पणी पेसास साम्म बळी कर्ण है नाई हुन कन उरती अर पाछी पालण लाग जावती। धननी सोच हो अो जीवन बसी दाइ है जिक न रात दिन पालण है। चालता चालता क्ये रिव बळच बूढा हुव जाती जुबा इनगर साथ पूजतार म दूजन ना बळार रे साथ मान रात दियो जाती अर बा बळ्या न मरण सासर खेता में छोड दिया जाती। आन पनकी कन रूप है पूछ है काल सुढापी आसी जग मुरद म मेन गी जाती कर रावळ री तरक सूपेटियो सिसती। जुनार पातर। पण मन ओ क्योनी मुगतना पड ज क्यास पनिधी हुव जाव

बूजो आवण सूभटवा लाग्या। चालता विवार टूटग्या। काल ठाकरा न आपतो सामधी कटावर किल रो है तो दोना रो शीवणा हूं भूगवल हुय जाती। व्याभय मुबा बदपण लगागी। वालभी रोसमा हर मुआधी हुय जाव सर करन सामन देसर ता नाठ आव। व समक्षती नाठ तो सामल रोभय माठ जाव सर तुन्तु महसयको निपटारो हुय जाव।

हा, व कव हा नी क ठाकर तो मारच माथ गया पराहुमा । टा-तीन महीनो पछ आमी जल मारो बात हुमी अर क्लिय न पना चातमा रू आ क्लिय कोनी। जीव न व्यावस दियो। पण काळ जो बार बार जागा छाडतो जाव हो। ता तासरो ना पीइर अर ना नाताणो। राङ हू पण रहायो कोनी। सगळा है वण की कोनी। मन ना कानी भाग्यो। ना समळी बात समफ है पण चाय। हुय, जण कोई लायी हुवतो तो आपरी ओला॰ न कुण ह्या वयणी चाय। हुय, जण कोई लायी हुयी न कोई वीठी। हावण हुया। अङ्गर्देश माघ र टावर ज्यूपालण पोपण हुयो। कोई बाप भी हुमी अक्सी मा तो पदा कानी कर सक ही। काई पुरुप नाव रो प्राणी जरूर हुसी। पण उणन कदई दस्यो कोनी। आग र तार मान ई देखी। याभी सुन हा असूभी अमूभी रवती। याधी यही हुयी जण रावळ म किरण जागगी। मान छोट माट काम म सारा देवण लागगी। उतिरया पुत्रिया गाभा स तन ढावण लागगी। रात कर दिन भाजता भाजता ई निकळण लागया।

रा है। ह विक्रमपूर स दिन चढायर जायी ह। आज अर काल म काई फरक

कवराणी सा रो व्याव महत्त्वा जण मन पण ई हरस्त हुवा पण म्हारी मा ता आंबी रात वस सुई रावती । उणरो वम साची निकडणी अर मन कदराणी र साम मैल दी। मन की पतो बाती हा। जीवण इतो करते हैं रोटी इतो मूची हैं। मैं मन मं सीच्यों क मा रो रोवणी फालतू हैं। उस बीम दिना रा अठीन अठीन रवणो हैं इण मन वाई दुस है। बीती जण पता साहयों क मा रा जी मैण सुई मुलायन है अर वण रो अनुमब कवोई साम है। भौमायों बोजण न पाछा कोनी भौगणा चाल ही अर ता आर पर से सीलाद न भोगण देवणा चाल ही। पण विवासा रो सेल बड़ो ई विचित्र है। उणरी मरजी र मुजय सन म सनणा ई पदमी।

अनू रही रो भन निखरण लागमो। पीठी हुवी अर बनही रा गीत गायोज्या। रातुरात क्याव हुबग्यो। अंक पढ़ी म तनळा नग-दत्तुर हुबग्या ज्या पनी लाग्यो क म्हारा मालटक रो हाडी मू ही हुळाते हैं। कन म मतीजर मरगी। गण काल काह हुबग्य आळो हैं हण रो आज मन पता बेगी ही। और आग ई पानर हुती। समय रो फायदो उटाया क्यरसा। मन अक निन फेर विचार पसवाडों कोरण लागवा। जे घोलों दे दियो तो ? आपको काई कियो। आपनो विश्वास आपन साम है, आगल रो घालों आमल कर ! ओ घोलों भी बडो मीठों है। याद करता-करता ई जीवण निकळ जासी। अत में बा हो तो काम हुसी जिको आज ताई हुबतों आयो है। आपणों आपण साम ई लेक्स हुय जासी। अन नृवो सळ फेर सेलोजसी अर उण रा पान हुससी आपणी औलाद अर जगारा करम। यग उण सूपकी पुराण सेल रो पटाधेय को हुवम दूरी। आम

बली चालती रयी. बात फिरती रयी । दो दिन भर श्रेक रात विचारा म ई निकळ्या । गाव पूरी जण दिन चितकारो. मार. हो । गढ म सरणाटो छायोडो हो । बसी र मारा ही अरू ईंप्यों चेतन हुयर फिरस लागरी ।

बोध री छिया

पनकी र वसी म जबर रवाना हुयां पछ राणो पणी ताळ ताई बळपां र खुरा मू उबती रजी न देवतो रयो । यूळ री मुवारो अंदयम लोग हुवयां जण हुरान वो पछी मुणा नानी चाल यबयो । आख दिन राणो पत्तवाडा फोरतो रयो । सरदी रो दिन छोटो हो पण राण न वाब सो लावो लायो । बटो मुसक्छ सू सिंहया पढी । बावाजी आरती करण साक बगली म जावण साम्या जण वा राण न आरती करण साक साण वालण रो कयो । राणा इया बो यो जाण नोई छव महीना रो रोगली हुव । बावाजी हुत र कयो— इत्तव बोहळो जीवणा है । अर आरती करण न गया परा ।

राणो सूनो-सो बोह्ळी देर ताई पूणी बन बठो रहो। हार न, उठर बामळ बोडर गुका र बारण बन सोयहो। अधारी राल हीळ होळ उतरण बनामळ बोडर गुका र बारण बन सोयहो। अधारी राल हीळ होळ उतरण काणागी। हागळी बूगरी अधार म स्विप्ती। पुत्र ने जो र वरण लागयी। वामा पाइती ठढ पडण लागगी हो। सुनी नितरहो हो सुना हो। तारा स भरपी आभो ससार र जीवा री बरणी न निराद हो। पुत्र न रटकार स्वीर पत्रीताणो री राग गाव हो। गुका अधार पुत्र हो। राणो आख्या पाइट अधार में बोज हो पण उण री निजर साली हाम ईमांछी आव हो। चेताचुन सो हयोडो राणो ज्यारा बनाने देख हो अर हारन आस्या पाइट नामी आव हो। प्रचा म राणो अरण आप मू ईडरण लागयी हो। अचा द चान सी लाग हो। नम हे उणन दमा रील हो जाण सात उण र बानी आव है। कण ई उपन प्रचा पुणीजता। राण न रात आधी सू पणी बीतगी साम हो। मन स सोच्यो आज बावाजी नो बासी है। वान रीती। अंदल व ई आसी रात रखा चित्र हो। इसा सीच्या सीच साने हो। हमानी। इसा ल द आसी रात रखाने प्रचा री सीट सानगी। राण रखा प्रचा राती। अंदल व ई आसी रात रखाने प्रचारी सीचेट सानगी। हो। साने सीचेट सानगी हा। हमानी। अंदल व ई आसी रात रखाने रखाने रात रखाने रहा। रसा सीचेटी हमानी हिंगी सान सी सीचेटी हमानी।

वावाजी देगा ई आरती नरन नीच आयम्या। राण न सूती देखकर बाबाजी पूणी म छाणा, मीगणा नास्तर वासती जगाया अर आटो ओसणर बाटिया बणाया अर सीरा माम सकण सागय्या। सिन्धां पछ बान बोगर मे औट दिया। सिन्दता बाटिया री सागीडी सुगय आव ही जिलो पून र फटनार सूगुका म ई गयी परी। राण री भूव चेतन हुयगी। अस्थिर विचारा न छोडर बोचरती माम आयम्यी उठर बार आयो अर बाबाजी सूबोल्यो— आज तो बोहळी जेंज सगास दी?

'नही ता, आय ता वेगो ई गया हो। तन सूतो दलकर बाटिया वणाय न योभर में सिक्ण सारू ओट दिया है। अवार सिक्ल जासी।

बाबाजी छाणा, मीनवा नावन ट्रटिय रो सारो ियो । पूक सगायर जमाय दिया । पूणी सू निकळती मळ सू राज रो चरो चमक हो । राणो जायरो मूढो जुनोवणो चान हो । पदी पत्नी विलाड माय हाय फेरतो जान हो जाण किली गम्योडी चीज न जोवतो हुन । पज बन ता ता नूवा विचार साव हा सर ना पुराणा विचार अपरी जागा छोड हा । बा सूनो सो बठो हो । बासाजी राण कानी र्या देख हा जिया मोनळा बरसा र लाव इतिहास रा पानिया तिलाड माय मड हा । राणो जणा न मिटावणो चाव हे हो पण ब बीर पणा उपरता जात हा । बरसा सू मेळी हुयोडी पीड और सम्ब हुवती जाव ही । राणो ट्रटोो जाव हो अर चण हुटर बिसर जावला जो पतो कोनी चाल हो । सेक बिसराय मेळी हुयडो हो राण र माय ।

मून भागता राजा बोह्यो — बाबाओं । काई बताळ घटना घटनो अर हु उम घटनावा रो जेंक साक्षी मात्र हूं। सगळी घटनावा न भेळी करणो बाबू तो भी वा समळघा न वाछी मेळी बोनी कर सक् । उमा न मेळी करणी बाबू तो भी व सगळी विकारभोडी रसी अर हु वा सगळी बाता रा जेंक कण मात्र ई रायाभे हूं। विक्रमपुर स् चाल्यो जग धनकी कामल आसवा बठायी हो। ठड तो कब ही क घडनू जिंदी आंच ई पटसू। चालती डाकर गामा काइ-माडर काळन न चीर ही। मारम में शे बार तुस लवणी पडी। आंधी रात ताई पालता रया। गाळतो ठट सूकापतो जाव हा। मारी आपळपा सूसिरक न नीच पढ हो। आधी रात टाळण सारू पास रो दूगरी कन ठरपा। पछ उपन कारक आसण बटायर पाल पढपा। नेई दिना बाडो में राखी जण पतो चाल्यो क पनकी म नाई गुण है ठावरसा इच न वयू पाल है। जुगाइ सुनाई से करक है। और

थीज म ई बाबाजी ई बात्या— छी। नी परक नोती है। मन रो परक है। जरूरत रा परक है। महत्त्व रा परक है। सुगाई-सुगाई म नी फरक नानी है। बार मन रो बस है। बात करण र साग साग बाबाजी बाटिया बोभर मोय सुकाब्दा जाब हा बर भड़काबता जाब हा। पछ राज न बाटिया वेदता बोल्या— किया भूख रो भाडा अस है उजी तर क्षेत्र रो भाडों औरत है। अर बाबाजी ई बाटिया खावण नागया। बाबाभी कोरी मोटी रोटी न इत बाब सुखा हा जिन बाब सुराज राजसी भोजन कर।

राण भूला मरत अक बाटियो बगा बगो लादर दूसरी लियो । बादाजी इतिमगत सुभोजन नरपी बर कर्नराटबोडी सूबी माय सुपाणी पीय न मूडा पूछपी अर तापणा सक कर दियो । राणी छत्र महीनां रो भूसी सो बाटिया साया जाव हो ।

बाबाजी बोहमा — जीव बाव जर्म आप र साम लाव लोय। पण पाछो जाव जण जणन छाड जाव कर साम स जाव करम। जीव री जा तो की जरूरत हुव कर ना स्वारण। जरूरत सग्रजी लोग री है—मोह कर स्वारण। मानजा लोग म रास जीव न नी। जीव परावाता रो खता है अकर है अमर है। लोगा री नासमधी म अक समभ है व जीव न कोनी रोव न्यूक वा अगर है शोध न रोव जिसी मरणशीस है। सरीर रा घरम है क वो जीव र साम चाल अर निस्तेष भाव नृषण हुन री पेडी घड़ । या या सिन्स हम बार बार कर ता वा आवरण सृषिर। हुयोड पाप सृषण हुन केव तो पाप कोनी। इण वास्त पारी वार वारी आवसा रो सुदरता माथ निमर कर। आ कयन बाबाजी चुप हुमन्या। राणो आपरी आतमा मे फ्रांकण लागम्यी। मरीर, आतमा अर धनकी – आ तीना री आकृति राण र सामै आवण लागगी।

चाद सुव विचाळ आयोरो हो। रात आधी वन पूगगी ही। पून मे ठह वथण लामगी हो। सुसादा मरती पून रो चाळ चाथी हो। तारा रूपधी रे अंचिळ म पुणण लागाया हा। बाबाजी गुफा म जावता बीया—ह समाधी सगावण न जावू हा। राणा घोर काळी अधारी आधी में पूमण लागम्यो हा। बोह्ळो ताळ बार्द राणो पूणी कुचरतो रंगो सोचतो रयो, यण माया की वाम वानी वर हो। हागन सोवल सारू चाल्यो।

बोहुळी ताळ ताई राना पसवाडा पोरतो रयो पछ पलवा माथ नीद भोडी मीटी पपवचा देवण सागगी। मींद र साम साग धनवी रा सपना है आवण सागमा ! पेडपो मू उतरती दीखी ! पोमच र पसाम मान तर तरन इत्या मांव बसीवत जोवन साग दिन बमीवतो दीखा ! पाछी जावण सागी जण नसागा म मन बप्पोडो गैन्यो ! नुपाई जुगाई म एन्स दीस्था ! मुद्दमुदा हाव सावण साग्या ! मैंदी साम्बाडा हाय नृतो देवता साग्या ! आखी रात मन सोधी बण दारू ज्यू मीठी सागी ! बार बार पीचा र बार भी तिरस जिया मिट बोनी वपती है जाव ! ठावर माबी ही कह हा व धनवी रा मरम पनशे र बन है है ! उन म कतीदिव आवरण है !

रत न पनशे री आवाद मुणीकी— वा सगळा र सून में दाक अर असीम रो इती महरी रस भरपो है क बान निर्वाय क्याय दिया है। व औरत न अरेत ही नी समभ । उणा री तमझ दाक मी छिद्यती है उगम मीटियार री भीठी तम ना कांनी। वारण्य सगळा मूम सरीरिका में मर जावता पण सतान देवण म नाकाम रवका। औरत सी की दयर एळ भी चाव दिवा मन दणी मू मित्रशा शेरता कोंनी। यार मू मिस्सी यक मन को कतास हुमम्पो क पूचन मुगाई ही कांनी ह जनते भी हु एण वारण बार साग हुरिक कोवर मीधी सर मन कमावल रा गय है। राजा हडक्वायर उट्यो अर भीवण साम्पो—सावाणीय वावस मुरभायो कोंनी। एळ देवनी रया — हु जाम्। दिन ऊपण आळो हो। बाबाजी अस्ती कर हा। विडयां बोल ही। राणा उठर जरूरी कामा सू भारक हुयर साढ माय जीण क्सन लारल आसण बठर चाल पडयो।

आज सू तीन महीना पत्ती ही तु चाही अठ स उठर तथी हा अर काज उथ वाली सवाल न लेयर पादी आयो है। जुनायर है जुनलि है। जिन्नी बात तु नवणी चाथ हो वा नय कोनी सहयो जर निको नाम नरणो चाय हो यो नर नोनी सवयी। इस आत्महीन आदमी न लुगाई कर ही चाव? मजबूरी अलग है। समाज री नरही रखावार कारण वा छोडर अलग कानी हुय सन पण पुर पुटर जीवणो है नोनी चाव। आ नयर बाबाओ उठ्या अर गुका नानी जावता बोल्या— तू जिमनार आदमी वण। पछ सीच समकर की कर।

याजाजी न यता न वता चल्या गया अर राणी हुयह चिता म वस्या रथी। लारला तीन महीना आस्महता री तर बाडी अर सर्वू जनीर नन विताय। । बम मही मरायो । खुनाई टाउर वार्ष कोचता हुसी। पानती नाई कवती हुसी। राणी हतप्रम हुयाडो होचता रथो। यी पाटनी ही। तारा विस् ज्ञज्ञ लाग्या हा। चमचेडा पाछी गुणा र बारण आग मेळी हुवण छानगी ही। पर रो मीह करन राणा उठर गाव नानी ट्रर बहीर हुसी।

अेक सवाल

लु बालती रयी, साढ भागती रयी। च्यारा कानी पल्याडी निदराही भोडळ ज्यू चमचमाट कर ही। ताबडो गाभा मायकर छील ताई पूग हो। पसीत राबाळावव हा। आ त्या पूरी खुल ही कोनी ही पण सवार तो अनेड लगावतो जाव हो बर नकली वाना आळी सार भागती जाव ही। मोरी वान र कन पड़ी हो। साढ़ रो पसीनो भभको मार हा अजीव सी ईं। आख्यामे रावळिया पड हा । सामन बाळ रेत रो भारग भ्रेत ज्यु लाबो हवतो ई जाबै हो। सरज सिर माधकर चमकतो चमकता आयुण कानी जाव हो। पण सवार तो सूरज कानी देख ही कानी हो। निजर अकमात्र मारग माथ ही। वण हो घोरारी चढाई आव हो अर क्ण^{के} ढळान । सवार न नाती साढ टटण रो हर हो अर ना आपर मरण रो । साढ ढाण पडी दौडती ई जाव ही । क्ण ई घोरा माथ सिणिया बूजारा दरसण ह्य जावता, इको-दुको क्षेजडो दील जावती । हरियाळी र नाव वस इतो ई हो । धीरा माथ नित हमेस नुवा मारग वण अर मिट । शेटी पाणी रा टरसण भी कठ ई हुमा कोनी । लोटडी म पाणी नाव रो हो । सवार न बम हो व कठ ई रण तपस मे काळी पीळो आधी नी आय जाव अर बीच मारग मे कठई नक्णो भी पड । इण वासत भागोलियो गीलो करण न पाणी रो बोडो सराजाम चाहीज। होठ सुक हा पण कामोलियो आलो हो । कामोलिय की सील ताळव ताई पुग ही । साढ मृटो हलायर नाड रो पाणी होठा साई साव ही । पून र साग इका दुका छाटा उडर सवार र मृत्याच पढ हा। सवार अंव हाय म लियाड गमछ स् मृदा पुछ लव हा ।

िनत उठण लाग्या हो। तावहो हिमाई नेत हो। पून रो नांव निताण ई नो हो ना उनस्त वधवी जाव हो। मवार रोवन वधनो जाय हो। के वेगो नो करवो अर मोसस म वस्ट्याव नी हयो तो जावळू रो काळी प्रो अर मोसस म वस्ट्याव नी हयो तो जावळू रो काळी प्रो आधी आ जासी। मगरा म पतीन रा रोगा वाल हा अर सून हा। वा माय पडता रावळिया पतीन वठ ई मूना नेव हा जिन मु बुनतरी करडी हवती जाव हो। आग रो जडफा म पोरिय रो पढे के पाले नेता हो का आवती निजर आयो। सवार न पोरिय हुयो। गाव कन ई हो। साव रो बाव ती निजर आयो। सवार न पोरिय हुयो। गाव कन ई हो। साव रो बाव ती निजर आयो। वाई ममफ ही न गाव मे पीवण न पाणी मिलसी अर वरण न वारा अर लूग। आशी निररोही हथेळी ज्यू साफ ही। यूजा रावळियान व वा हा। सूं अर ताट रा वगर पून र साथ करता र तात हो। सवी वेव ना वा रो साथ पार करता जाव हो। साथ मारा मारा मारा मारा मारा साथ री सीव पार करता साथ कर दूपयो। गाय र साथ मारा मारा साथ ला ने में व्यवस्थ कर वा कर दूपयो। गाय र साथ मारा मारा साथ हो। गाव र साथ सारा मारा साथ हो। गाव सी सेव पावडा मारा सह हटर कून सू सूर हो।

जूद पांचल हो। याव सा जन पांचल सारण सुटर पूज पूर हुए।

जूद र जेन कोठो अर दो जेन पडोया हो। चाठ म चहस पही हो।

जूद रो पाणी हुए मोही। कोठ में गोडा सूचा पाणी हो। सिळी म सिवाल
जैन पाणी हो जिनी नाई अर पूड स अरघोडी हो। याणी रा कभी तो कोती
ही पण मुक्तळाव ई की हो तो। मिनल जिनावरा न पीवण न पाणी घणोई
हो पण सेळण साच नमती हो। पणघर लाली हो। दो जन रावा वेसा पाणी
भरण सास्ट स्वाद हा। जूबो वास्त्रणभाठा जोगान सेवर 5 6 लोग चाठ

माथ वठा मुस्ताव हा। अपेपरी साह न जेन सास भागती लावती न देवर
की वम री निजर मुदेल लामपा। अयुची रीन पता नरस चितित
हत्यामा। सवार कत लामर साह मुजरपो अर गाळी डीली नरस तरेहडी
काडर मरव यू वायर चाठ नानी होळ होळ आवण लागगी। आपर गूर
रो डाटा ई सोल लिया। थाइती रो मोडा वम हो जिनो की नम हत्वतो
जाद हा। यू अयार मूरा दोत व नोते हो, जात पता पताली जी।

राण न दलकर बाराओं भी हो अर नराज भी ही। घणा दिना सु घर पूर्य न देखर मगन ही, पण माजीसा रा ओळभा मू आस्या रा तवर बदळता जाव हा। लुगाई लुगाई न देख सक पण सौत न कोनी देख सक, भर सौत र साग मुठा मोटियारा रा बोळभा । मोटियार वर बाळभा रो बेन इसो पको रिसतो है जिको सदा इ साग रव अर लुगाया आ दोना सु सदा परेमान रवै।

107

मूनो चाद चादणी सु मुसकराव हो । धोरा माथ परुयोही बादणी सीन ज्यू चमक ही। दूर दूर ताई सोनिलया धोरा सोन र पाढ ज्यू लाग हा। ठडी चालती पून सोन र पाडा माथ बपक्या देवती चाल ही। घोरो माथ बण्योडी लरा इया लाग ही जाण सोन र समदर म तरगा उठती हुव । कितो आकषण है आ धोराम किती नि स्पृह् अपणायत है आ धोरा म[ा]

बाद भारण लाग्यो हो। तारा विचारा सा बिखराव लियोडा हा। जठ रा

आधी रात ताई राणी सूतो रया। पछ उठर पाणी पीय न साढ माथ जीण क्सी। लाटडी पाणी सूछलर बाधी। अर टुर पडचो। ठडी रात मे राणी हेत रो हुलास किया चालतो जाव हो। मारण में दिन उन्यो। आखो दिन चाल्यो अर पाछो विसुजण न स्राग्यो तो ई राणो तो चास्रतो ई रयो । घडी अक रात गया गाव वन पग्यो।

वूव माथ भीड हो। मोटियार लुगाया पाणी ले जाब हो। मोटियारा र सिर माथ पोतिया बच्चोडा हा। ठाकरा न गुजरधा न पनर बीस दिन हमस्या हा। अेक महीन रो माग राखणी जरूरी हा। इण वासत गाव-आळा रात न पाणी भर लवता अर दिन म घर रा छोटा मोटो वाम निमटायर माजीसा कन बठण न जावना । इण कारण कूवो रात न देर ताई चालतो । दिनूग सासरा र पीवण वास्त पाणी कोठ माय सूई दियो जावतो। गाव रो धणी गुजरम्यो हा । सगळा काम बद हुवन्या हा । ब्याव-साबी गीत गाळ गाव म की कोनी हुवतो। यन बेटी अर बहुर पीर सासर आवण जावण माथ ना तो ओळपू गांपीजती अर ना नोई बंधावो । गांव रा संगळा मोटियार भदर हुयोडा हा। लुगाया पकी ओडण्या ओड राखी ही। कूव कन राणो पूग्यो जण समळा उण र कानी देखण लागग्या। राण न अचभो हुयो—ओ वाई ?समळी बात रो पतो चाल्यो क ठाकरसा न गुजरधा योडा ई दिन हुया है। उगर पसी रासमाचारकी कामा हा। इण वास्त उण भी आपर साफ माथ सोग रो निसाण गमछो वाथ लियो । जुडो साची रोयो ई । स्रोगा धीरज बद्यायो । मुढो घोयर पाणी पीयो अर साढ न पाणी पायर घरा पूग्यो। घरिवराणी अबार अबार ई माजीमा सु मिलर आयी ही।

106

MINTER

राण न दलकर बा राजी भी हो अर नराज भी हो। पणा दिना सू परेपूम्य नेकरमणन हो, एण माजीसा रा ओळमां मूं आक्ष्मां रा तबर बटळता जाव हा। सुगाई जुगाईन देव सक पण सौत न कोनी न्या सक अर सौत साम फूठा मीटियारां रा ओळमा। मीटियारा अर आळमा रो अंक इसो पको रिसतो है जिको सदा इसाग रव अर सुगाया आ थाना मुसदा परेमान रव। राणो दिनुस मदर हुयन अणमण मन सुकोट हो सवा। गाव रा भूडा बहेरा दो ज्यार जणा बठा हा। गरवार रा ई स्वाणा आदमी और बार सु आरावेश मोदियार कठा हा। सण्डार चरा माय मुरदानची हो। ठाकरा र बेट भवानों सिंह न ठाकर वचाय दियों जिके हाल कोई च्यार बराया रा र हो। मुराणो कामदार बन बठो ममाना सुवारण कर हो। मन में के देशा रा है हो। मुराणो कामदार बन बठो ममाना सुवारण कर हो। मन में के देशा हो हो। दुनिया म पण्डी भात रा छोन हुव। राजो हुवणी अर हुतलो साग ई बच्चोडो है। सण अर दुतमण कठ जाती? अतो यठ हो रसी अठ दुनिया हुती। राण न मूबो उतारपा बढत न देख्यो अभ केट्या री आस्या में एरह आयग्यो अर बेट या र आमू। मचानीतिह भी बाद र भावन न देखर करी। राण उच्च न दातो मू समायो अर सगळा मूज माताती री करी सरका बठन्यो।

वित्रमपुर सू आयोडो स्त्री कागदार वन हो। बोल बतळावण हुयगी
जण बूढी नामदार बोस्यी—अनदाता री हुत्तम हुत्र तो हु अरज कह।
मानानिसिंहती नानी देवर उणा रा मून हुत्र रो जाधर आग बोस्यो—
'वित्रमपुर सुहन्म आयो है न रायोधी न ठावर भवानीसिंहती रा तरसार
नियुक्त नरयो है अर राज नानी सू वाधावास र ठावरा साम बीदावाटी री
देवरेख नरयो है। ठावर मवानीसिंहती राजी हुत्यो अर केर्ट भाई वस देराजी
हुता। हुटत राण माथ अर्क नुई जिमदारी रो मार पदधी। राणी इतनार
कर तो विच न अठ वोई हुक्य देवण बाळो हु हो कोनी हो। अर मजूर वर रो
ई विच र साम, अठ गुणक आळो हुण हो? नुव बादेस रो पाळच करणो है—

जिको यो मरतो मरतो ई करसी । आन्त्रा र माग हो मरमी । आ सोचर बो चुप हो ।

आखो टिन बठक मे ई गुजरम्यो । मिलण भिटण भाळा जावता जावता रवता । नव आदेश स् रतवो और वघग्या हो । राणा आल दिन सगळी बाता मणतो रयो। सामतो रयो नृव जीवण र विस म। भायला गयो परा अर जावता जावता आप री जिमनारी उण र काघा माच नायग्यो हो। ना ती चन म जीवण दियो अर नामरण देसी। राणो चुप हो। घर न नेसर गाव न देल्दर अब रोव तो क्लिंगर आगे राण र सामन घणी समस्पादा आयगी राज परवार री । राज परवार रा केई लोग राजी हा केई नाराज हा। यात लगाया जिक बठा हा व निरास हुयन कोई बखेडो खडो नी कर दव । राण न वही साच समक्तर काम करणो हो । सगळा न साग राखर बीदाबाटी कानी जावणी अर राज परवार मू चीली रिसती राखर ठाकरा रो मान ई बघावणो हो। इण वासत राण न आप रा विसवासी अर विसवास पाती दोना न परमणा हा। हाजरिया सु साववान रवणो हो। सगळी बाता न गराई सुसोच समभर राणो इण नतीज माथ पृथ्यो क जे सगळा न अठ बठाय लिया तो घर हाण र अलावा और की नी हव । सला सत करन जिला ठाकरार साम मोरच मूळाया हा उणान मोरच माथ जावण री सला दी। इण बात रो सनसो विश्रमपुर र राजाजी कन भिजवाय दियो। और बाकी रयोद्या न आप र साम बाघावस र ठाकरा कन जायर बीटावाटी री सूरला रा काम सभाळण रो समाचार भिजवाय टिया ।

सिह्या पढ्या पछ राणो माजीसा कन मिलण वासन गयो। उणन पला साळ मे बठायो। राण सगळी वासा माजीसा न विमतवार बता १९। सारी बाता हुयगी जण माजीसा बोह्मचा— प्रकृतकाणी न ये अठ वय मेल दा? इणर आवता ई ठानरसा थाम पायारवा अर राड किणरो पेट राल राख्यों है, आ आएन और है। इण वासत इणरो इतवाम करो। गणो आ वात सुजर मरणाट में आवत्या। जूक पिन्ट आध्वासन दियों व आप निणी बात री राणो दिनुष भदर हुयन अणमण मन सुनिटही गया। गाव रा भूडा बदेरा दो स्थार जणा बठा हा। परवार राई स्थाणा आदमी और बार सुआयोडा मोदियार बठा हा। घमछो र चरा माय मुरदानवी हो। ठावर र र वेट भवानीसिह न ठावर बणाय दियो हो जिवने हात नोई स्थार वस्ता है हो। पुराणो कामदार वन बठो मगाना सुवारण कर हो। मन में केंद्र राजी हो केंद्र दुनी हा। दुनिया म सम्छो भात रा छोग हुव। राजी हुवणो अर हसणो साग ई बच्चोटो है। सग अर दुनमण वठ आसी? अतो बठ हो रसी जठ दुनिया हुसी। राण न मूबी उतारणा बढत न देखो जण केदमा री आस्या म एरण आयम्यो अर वेरणा र आसू। मवानीसिह भी बाप र भामल न देखर रोय पदमी। राण जण न छाती मू सगायो अर सगळा सूज नाताजी री करी अर वन बठणों।

विकमपुर सू आयोटो रहो कामदार जन हो। भोत बतळावण हुमगी जण मुझी नामदार बोल्यो—च नवाता रो हुक्त मुख तो हु करज कह। भा मानानीसिहनी कानी देखर वणा या मून हुक्तरों जाणद आग बोल्यो— 'विकमपुर सू हुक्त मानाने हिंदा वणा या मुन हुक्तरों जाणद आग बोल्यो— 'विकमपुर सू हुक्त आयो है कर राज वानी मु बापावातर ठावर सा साथ बोदाबाटी रो देखरें करपो है। ठावर मानानीसिहनी राजी हुयो कर केंद्र मा इंबर वार्यों है हिंदी हुया हुद्र ता पा वार्यों केंद्र मानानीसिहनी राजी हुयों कर केंद्र मा इंबर वार्यों हुया। दूरदे ता पा या केंद्र मूर्व विवासी रो पार पक्सों। राजी उनकार कर तो किंपन अठ वीईहिक से देवण आदो है कोती हो। जर मजूर कर तो हिन्य र साम, अठ मुण्य आळो हुय हो? नूब बादेस रो पाळण करणो है—

जिको बो मरतो मरतो ई करसी । आवश र माग ही मरनी । आ सोचर बो चुप हो ।

आलो दिन बठक म ई गुजरायो । मिलण भिटण आहा आवता जावता रवता । नव आदेश स् रतवो और वयग्या हो । राणा आख दिन सगळी बाता मणतो रया। सावतो रयो नुव जीवण र विस म। भायला गया परा अर जावता जावता आप री जिमनारी उण र काधा माच नालग्यो हो । ना तो चन मुजीवण नियाक्षर नामरण देसी। राणो चुप हो। घर न नेखर गाव न देखर अब रोव तो जिण र आग ? राण र सामन घणी समस्याया आयगी राज परवार री। राज परवार रा केई लोग राजी हा केई नाराज हा। यात सगाया जिक बठा हा व निरास हुयन नोई बखेडो खडो नी कर देव। राण न बडो साच समक्तर काम करणो हो। सगळा न साग राखर बीदाबाटी कानी जावणो अर राज परवार सूचोलो रिसतो राखर ठाकरा रो मान ई बघावणो हो । इण वासन राण न जाप रा विसवासी क्षर विसवास भाती दोना न परसणा हा । हाजरिया सु सावधान रवणो हो । सगळी बाता न गराई स् सोच समभर राणा इण वतीज माथ पूर्यो क ज सगळा न अठ बठाय लिया तो घर हाण र अलावा और की नी हुव । सला सूत करन जिका ठाकरा र साम मोरच म् आया हा उणा न मोरच माय जावण री सला दी। इण बात रो सनेसा वित्रमपुर र राजाजी वन भिजवाय दियो । और बावी रयोडां न आप र साग बाघावस र ठावरा वन जायर बीनावाटी री मुरम्या राकाम सभाळण रोसमाचार भिजवान टिगो।

सिहया पढ पाण पाण मात्रीसा कन मिलण बातन गयो। उणन पया साळ में बठायो। राण सपळी बानां मात्रीसा न विगतवार बता नी। मारी बाता हुयगी जण मात्रीसा बो या— मुत्तराणी न से ळ प्रयूमेत दो ? दणर आवता ई ठाव रसा धाम पथारचा अर राड विचार पेट राख राख्ये है आ आगत बोर है। इल बातत दणरा इतसम वरो। राणो आ बात सुजर गरणाट म आयाया। पून विन्ट आध्वासन नियो व आप विची बात री फ्किर मत करा समळो इतजाम कर नियो जाती। राण रो मन तो जचाट हुयम्यो हो अर आ न्छा हुवण सामी क अवार रा अवार धनकी सू मिलू। पण लावलान सू वचण साह को कानी कर सबयो। चुपचाप उठर घर आयम्यो। रातन घरिषराणी मणाई घोषा करघो क इती काई बात हुयी जिक सू पारा चित न्ता जनस है ने माजीता की क्य दियो काई ? पण राणा कव तो काई कव ? आपरी भूल आपन के मताब और खुलर कव तो लोगा महसाई हुय।

िन्त गणा धनवी कत मिछण सारू गयो। गौर म सीत जेव क्षूयडी दियोडी हो जठ वा आपर भाग भरीम गडी ही। बसत रो इतजार कर हो। उत्तर घर माय पीळास लिया शेव गरी अवसान भनक हो। थेट आपर गौरव मू कवा हा। भाग्योडी बाल आज बतमार हो। थीवत्र रो आसम सती पत्र तिसरतो जाव हा। गण चिता रो उणीज तर क्षेत्र गरी रेसा उत्तर पर माय राम हो। राण न देवर भूगद र वारण सार मध्यो मर्गर सोकी — आवा।

राणरा पग धरती सूचिपण लागग्याक्षर त्रीभ ताळवसः। यूक गिटरकोल्यो— आकाई?

ओ आप रो नियोडा है जिको भोगूह। पण इतो ⁷

ज ठाकर रवतातो मार दी जावती।

पण ।

पण काथ री? न्हारों नोई अस्तित्व काती। म्हे गुलाम हा। म्हार कन रूप क्व कित न्हारी केन्द्र रख अरण कवई भूळ संपट भारी हुव आव तो मीन कन पुणाय नी जांव का गिराय नियो जांव। दानु ह हालत संभीत र कन आवणा है। ज नोई स्थाणा हुव तो किणी रा नाव गळ सद दव। नाव निणी रो बान अरभीय कोने। आ भाग रा खेळ है। मरीज ई कोनी

110 माभन

अर जीयो भी कोनी जाव। ऊपरलो जद सुणसी सगळी बात हुसी। अर धनकी वसक्या फाटर रोवण लागगी।

राणो आग बधर उणन बोली राखणी चाव हो, पण पग उठर पाछा थमग्या। सोचर बोल्यो-- धबरा मती। सगळो ब्तजाम कर देस् । अा कयर पाछो आयग्यो ।

सारी द्पारी राणो आवण जावण आळा म अर कामनार म बाता करतो रयो जरूरी काम सलटावतो रयो। रात न पाछो माजीसा कन जायर धनकी न पाळी भेजण री बात कयी अर आग री सगळी ॰ यवस्था करण री बात बतायी। माजीसा तो आ ही चाव हा कथी पाप अठ मुटळ। अेक गोली ओछी ई सही ।

दो तीन दिना पछ अके दिन तडक ई उण सागी बली स धनकी न

पाछी बाडी कानी भिजवाय दी।

अणजाण्यो मारग

हाप लगायर लिनाइ अर साल्या माथ हाय लगायो। आल्या आंगुतो मू
छलती। बानी बोली पाटी बठर हालण रो नयो। चली चाल पदी। पननी
आपरी एल्योटी आस्यां सूल्या जान हो। रोयो तो कोनी पण बाको का
मानी रयो। ते निर्दी रहस्यमयी हैं। पदा कर है हुया पछी कर हो। आयी
क्लिंग साम हो। स्याद काली हुयो पण साथ मोवण आळा बोहुजा जणा
निरज्या। अर अय जाव कर है हो। ना तो आग रो पनो अर ना लार गे।
कुण कुण आसी कुण कुण जामी कोई क्यती। क्यार सहस्या साम पूमी।
ह्या पण ना तो पीठी हुयो ना नननी बणी। क्यार सहस्या साम पूमी।
गावण म हीडा होडी। आल्या मानु आसी स्थार ते रायता हुयो।
जर पट स्थार कृष्य हुयो। तम रूप स्थान हुयो। उस पर स्थान कृष्यो।

गाव री मीव पार वरी जिन सूरज आभ में भोवण लागायी हो। धनकी बली क्वायर हैठ उत्तरी। गांव कानी देनर साथ र शंजक्ष री पेडी र

> आयो सगारो सूबटो अ त्रम्यो टोळी मांगसूटाल सोन्दबाई सिथ चाली। आयो अर ना बर्दई इणन

रा मूबटी नाती क्टन क्षायों अर नाक्दई इलन इत मान मूलस्या। जीवण कितो प्रजित है। नालों है जिको रात दिन क्यतो रव। मरजी म आव जिको पळूपाणी पीलव। मान बाप। पनकी र सनक्या फाटण सामग्री। गळी पाडरेरोय ई कोनी सत्ती। काळजी पाटतो जाव हो। साम नाबाप। बुल छाती मूचियाव बुल मिर माय हाथ फोर, बुल उलप हुल न बटावें ? ना चवरी आळा माटियार जिका ई छाता सूलगायर ६ळवी कर। सगळा मुळिच्या यार है। ज धनकी तूपबाई नी हुबतो तो काई सामर सूनी रवती ? यार बिना निसो अणसरपा पड़े पा हा ? ज म्हारो मा आ पूळ नी वरती तो कितो आछा रवतो ? पण आ भूल उप री को हो नी। हरेक जुगाई थाद क दामा बण मोटियार सूमा बण। ज को ससी करपोड़ो नीवळ तो आडोसी पड़ोमी सूबण। अर २ण स्वारय र नारण ई उपरी माटी पत्नीत हुव। या समळी बाता न सहन कर किंग बासत, माथ सतान वासत। वा सुरकादणी तो चाव पण स्व दयर।

धनकी सोमती जाव ही, गाडी चानती जाव ही। आ ही जीवण री विडवना है। आ ही भूल म्हारी माचरी अर आ ही में। पट माव हाय फेरती सोच्यो। सरमावती पकी उठायर पाछा छाती अर पेट माय होळगक रारया। पुत्र र असहा रर के अन मुळक ही, जिकी मरपा पछ ई सार रही। नारसी। फलाणी रो डोकरी है, पकणाणी रो बीकरो है। किती घरद, किता पुत्र आसी। फलाणी रो डोकरी है, किलाणी सोकरो है। किती घरद, किता पुत्र अपमुक्ततो अपमान आ सब्द्धा मावकर निकट्ट आपरी बीलाद न देवणी पाव राजी राखणी चाव, दुला मू वितमणी चाव, अपण आपन पुनर्जीवित करण साथ। आ जात किती निक्मी, दुक्टा माथ पळणआळी, पाटपाडा परणआळी, किती ओछी है। किसी खुणिनजाज है सतीपी है, जे कोई पोडो सो सारो देव तो उण माय कुरदाण हुय जाव। अेन हुई इसी नोनी म्हार जिसी पणी ई है जिसा रो जीवण म्हार सु और ही घणी सराव है, नीची है।

मूरज रा पाडो दौडता जाद हो, वली रा पहियो चालतो जाव हो। बली र क्षीक माम राम्योड घड रो पाणी भवळकतो जाव हा। वली र भटक साम विचार टूट हा, ठर हा। सोर मारग साम पाछा चालण लाम जाव हा।

जलमी जण मान देली। बाप रो नाव ई सुण्या का। जण नाव सार समभ्रमण लागगी ताकई नाव सुमी या। बसक्याफाटती आर्वाज सुमान बाप रा नाव पूछचो जण दो च्यार गदीड पढणा। आस्या सूआसू भरण लागमा। पूछ फोरन मा ईधोरज छोडण छागणी ही। घननी तूओन सवाल है जिन रा जवाब ना तो घारी मा कन है, और ना घार नन। बेमाना दे रो उत्तर देव सक है, पण वा अन्य्य है। इल वासत चारा सवाल घार लागई जासी। अर तूबिना उत्तर ईमरमी। किती वही बात है किती ओछी बात है। और धनकी मन मन सोली---पनकी! तूबा सगळा सूपर है।

धननी साथ ही — म्हारी ओलाद भी इया ही बायू रा नाव पूछती रसी काई? नहीं नहीं। हु उण रो पढ़ तर देनू बतालू देखा सु निरुष्ट्र में इया वाप । टू निरुष्ठन कोनी। हु म्हार बाम जू वजित भी कोनी। जिका काम करपा है सोच समक्षर करपो है। अंक मुंबी सवाल फर उणर सामन बाया कत जिवा काम करपो है सोच समक्षर करों है। अंक मुंबी सवाल फर उणर सामन बाया कत जिवा काम करपो है साव समक्षर करपो है। स्वत्कार सामन क्य सक है? पण आगलो इण बात न मजूर करपा कोनी? अर ओ ही सवाल जण सार सामन हुज रूप म आयोज जिल जुचपा रोव हो। पेट किण रो? इण रो पड़ तर बात बार किणी न दियो नोनी। सायद तू लाण ही कोनी औ किण रो है ' मुळरर क्यों — कोई खुनाई इसी अणजाण कोनी हुव। या नाव बताव का नहां आ बात दूसरी है। छोगा रो नाम है धम करणो, अर ब सम र नाव माय ई जीव। धर धनकी ' तू नय सक्वी ' नहीं नहीं हूं भो कवूनी। पुट पुटर मर आवृत्ती। विचारा में ही बहबडावण लागगी। रोवण सामी। बर्च्य रोवण सामी। बर्च्य रोवण सामी। विचार में स्वार पा स्वार की दियों नी।

दा दिना ताई बली चालती री। धनकी बादा म बकती रयी। गाडी धान पाणी पादती रयो। काळी डूगरी कन बली पूर्णी जित तारा सू आभी खवालव भरीजण्यो हो। आख दिन री ततनी मिटगी हो। ठडी पूर चालण लागची हो। जीव सोरो हुवण लागयो हो। जीवण सो ताबो मारग ठरतो सा साम्यो अर इया मालम पडण लागमी क जीवण रो विसराम अठ ही है। तारा म जगरती आकाण गगा पूर्य सा साबी हो। और धनकी विचारा म लागाडी हरारत मू वरेसान हुयोगी गुफा कन पूनी जप बावाजी पूणी कन वडा बडा रोटियो लाव हा। बसीबान समळी बात बतायी, जप बावाजी बोल्या— का तो हुवणो है हो। रात भर कठ ई विसरास करो। दिनूत बाढी वाली चल्या जाया। बोडा ठर न बाया— हाडी म आरा क्यों है, रोटया बणायर साला।

नहीं मारगम लायर दुरघाहा।

धरम री भोजाई

धननी मोबना चाव हा पन दिवार सारमी घटनावा नानी दोह हा।
ना तो बारा अत हा अर ना नाद ई लवन देव हा। आसी रात तहण्डावती
रधी। पनवाडा नोरती रधी। साधती रथी। आज गुनई नहोनों पनी जया
अठ आयी ही जण जवानी न टोनर मारती चात हो। दिनों बहिनों ही। पुरुषा म आक्ष्यण दीखती। आज आज बासमळी बातों मृनिती दूर हुवती जाव है अतमुभी हुवती जाव है। नानों म सम्छी आसाजा आवणी बह हुयती। वाण बार रा सम्छा हता आवणा बर हुष्या हुव। टावर री स्तिकारी रात दिन नाना र कन गुणीज है। आक्ष्यण भेळी हुप न पेट म बहस्या है। ओ जीवण नुवों है वा जीवण री नुवें दिवसना है?

काल रो भोग आज नृव ीक्षण रो मारग वणता जाव हु। वाल तार्क् हुजिन काम न रात दिन भोगणा चाय हो उण मुहा आज मन नपरत है। म्हारा वाल तारसी समझी बाता न भूकर तोतली अवाज म मुजणी चाय है— मा तुव्ह है आ आलरा म दिना ममस्य है। दिना आण है। इण मुद्दा रो ना तो आदि है अर ना अता आजारा गाम सा पित्र है, भिसी दें लाबो है। आदमी इण मारग माथ चालतो चातता तत्तन हुम जाव पण आणद कदई सतम कोनी हुव अर ना इण मुनद्दे पेट भरीज। आखी रात इण आणद रो लारी म पुत्रणी। आरती रो टाली टण टण मुगीजी जण धननी पाछी धरती माथ कामगी। हार न उठी अर जीवण रो सारग तय करण रो त्यारी करण हागागी।

धोळ शकार ताई चालता रया। बाडी क्त पूम्या। बाळी बाळण मूळी, गाजर कादा लगावण सार अमीन साफ करन क्यारघो सावळ कर हा। टावरिया तबहरू। बारता फिर हा। आ समळा न देवर अवभो करयो। अवाण्यक योळ-दोफार निया आया? बतिय समळी बात समफायी। राण र पाप सात दिना मुपूर्ण रो समाचार दियो वर इता दिना सारू वासी पायण रो बात की।

धनकी सूजण माळच री रात न बात हुयी अर पग आरी हुवण रा मासप पड़यो तो मी जाज्यों क पज़की दुदा री योग्छों है। खुगाई, लुगाई री दरद समक्षे। आपरी घटम री नणद बणायर रात्नी अर हुसी, जिसी चाकरी करण रो आशतासन दियों।

भागतो-मो चौमासा आयो। दो च्यार बृदा माधी अर भागयो। बाप मितान मोठ बानदी गवार मान तागर खेता म नाक्यो हो पण मुसादा मारती आध्या बासी जिल्ला म माठी धान उठम्मे। खेता रा ऊमरा है साफ हुममा। जेठ सो तपती ताबड़ा मादल म है दिन भर बाठवो करती अर रात न पड़ती सामोड़ी ठड़। मादण में आध्या वालो कोनी रीहिणी नवत तपती कोनी जल विराह्म कर है इसरो साल हो। इसरा इतता अवडा जर सा लाग है इसरा इतता अवडा जर सा लाग हा। पण करघा नाई जाव? मनवान हो बरी हुम जाव। इस पत्र प्रत्या करती हो है व सा अर्थ मात्र हो। इस पत्र प्रत्या का मात्र मात्य मात्र मात्य मात्र मात

नुई मुहण लावगी ही ता इँ चाय चालती ही। अंक दो प्यारी, जिली है मिली जिली है। हो पाठी आवाण लातगी ही। दीपाठी आवाण लातगी ही। दीपाठी आवाण लातगी ही। दीपाठी आवाण लातगी ही। दीपाठी आवाण लातगी हो। पेल जो सुगन तो सगळा मनावणा हो। पड़ हो। भूगड़ा नीपीअण लातगा हा। फाड़ण महस्वारा हो। फाड़ण महस्वारा हो। पत्र तदा आवता जाल हा। के हो ने सो ने महस्वारा हो। पत्र तदा आवता जाल हा। के हो ने सो ने महस्वारा हो। पत्र तदा से साम अर जरर सू मुबाई। पत्र तदा के साम अर जरर सू मुवाई। राम निमाद जिया ही निमसी। पत्र की पाड़ी की ने म्वणां चावती ही पत्र और तिम के ही हो पत्र ही साम अर जहर लागर, और त्य जल मे हिमाड के पाइ र हो हो को साम अर हर हो हो हो। साळ्य जल पाड़ा पड़ तदा दो सार माई रा हाम गोड पत्र है, उस मोजाई भी पानठी ने नी हो हो है।

शरद पूर्यु आयगी। महीरान भगवान ई तानता रवन्या। सीर ६ पूरी सी मिली कोनी। समै रो प्रभाव जाणर सगळी बात भूलणी पर। भगवान इणरा अपवाद कोनी। निन छोटा हुवण सायस्या रात बसी।

लावसी हुयी, साम दीया ई यस्या। सदमा यूजन हुया। मूलाझ म दीया चाली तर जयमगाया ई नोनी। मूणमास्त्र सगळा ई नरपा। मैदी सामी, वण उजरी महरू पूटी ई नोनी। आंगळ्यां रा पेरवी मास ही लाल निवाण मोडर सूप हो। गोरपनजी नाय मूप्तर वेशीरिया ना नाचर नी, सिटी मी। पणगोरपजनी जरूर दुज्या जाती चाव की ना हुनो शेयोयों भी चमता, जाव वाट आली नरन ई चताव। नाम सगळा ही नरिया वण जी र ऊपर बर। धनवी र नित ज्यू जू नहा आव हा चिता वयती जाव ही। यण करपो नाई जाव हुनी है जिन्ही हुनी। सराज्ञाम सगळी है हुन हो, वण धनकी र जी म वाली नी नोनी हा। वसत वितो माहो है। बोई समस्र ही नोनी। धनवी रा मन चूला नू भरता जाव हो। अब नोई सुछ हो नोनी। पराय धर म दुल डो सातर नाम रासी है। विचार आपरा है चलो न चीपा राख ता सारी सतार पोली देश कर चुरा राल को समळा दुरा दोश है। ना सा कोई बुरो है ना कोई भनो। सगळा आदमी है। बीसा भी आव, पण धीरज स्रीय नान नोनी चाल।

अंत नित राण रो भेन्याश आदमी पूछता पूछती आयो। समझी बाता हुवल मू रोटी साथन जाड़ी जावण री हालोहाल ही त्यारी करता बीत्यो—मन राणा विशेष पर करता बीत्यो—मन राणा विशेष पर काम मू भेज्यो है। बात शी विक्रमपुर गया न दा वार्ष महीना हुवण्या है। मन भी काई दीवाड़ी क्या कर पूर्णणो ही पण जररी काम जावण सू जाय को तक्यो हा नी। अब मारण जावती अके पीहर काढर आयो हा आदी मारण चारण सू जाय के सकता वेचलत आहा आसी, अ राणाओं भेज्या है। सवार पदायां अर्थ दो धनवी रो भेर मार जताराणों कर दूरी होती मारण मालयां।

बीदावाटी

जजाळी बीतमा। सीमाळी आसमो। धाडी छाटमा पडण सू सी पणी पणी। आ दिनां म ई बदेस मिल्सी च तब दे र लाट साज रा लास जादमी विजयनों र अग्र के साम कि स्वी प्रस्ता रो साम जादमी विजयन है हिस्सी प्रस्ता रो सामळी इंतजाम कर दियों जाता। इच बात बीदालाटी कानी में प्रोड आदस्या न पाछावित्रमपुर कुलाय निया। राणों भी साम हो। सामीडी सरदी पडण लासभी जज लाट साम रो आदमी आयो। सरदी में जजारा दो तीन आदमी दिया मरता सरदा है। साम हो। सरदी में जजारा दो तीन आदमी हिस्सा मरता सरसा हा। साट साज रो आदमी आयो। सरदी में जजारा दो तीन आदमी हिस्सा मरता सरसा हा। साट साज रो आदमी तो चन मू विजयनपुर में कानड सू निकळर आग्र जावनों भाव हो। राजाजी आपर विस्तासी सरस्या साल हिसार साई जजान पुणावणे रो अवस्था कर दो। राजा भी आदस्य सरस्या रोजें मारता नजा हो। हिसार सू पाछों विजयनमा कर दो। राजा भी आदि सा सहोगों उत्तर लालाया हो।

राणो विक्रमपुर सूराध्य सैराबाटी हुवतो नाळी दूसरी र बायात्री नत पूर्णो। वाबाजी नत नह बाता हुवी। बोकारा सागळी हताथा म निकळाणो। राणो रात भर वठ ही रागे। नेपा वाती हुवा पछ रोटपा वणावर सेकण लागणा। बाबाजी बात यार अणाणी क आज सूत् बोहळा महीना पती सूक्षा ई अठ आया हो। छन महीना रा बीमार सी लाग हो। हा

रु। आजकी फरकलाग है ?

फरन काई हूता घणा अळ्फता जाबू हू।

अ थारा काम अळूभ बाळा ई है। हुतो क्द ई को बळभता हो नी पण भगवान री भरजी।

रूपायद ६ वा अळूमताहाना पण भगवान रामरजी नुष्ठा घारामरजी ही जण क्षासगळा वाम हुयो ।

म्हारामरजी? अवभा करताराणा बात्यो — हू किसा विश्रमपुर सुद्रणकाम मृही चात्या हो?

तू चाल्यो तो ठाकरो रो नाम नरण सारू ई हो। पण दीच मधार मन मारग छोड दियो। आग बाबाजी बोल्या— ज ठानर ना मारमा जाता तो बारी सास उथड सी जाता, पण थार भाग सारा दे दिया।

कठ ? हाल ताई ता विधा ई मटकू हू। ज श्री अभ्भट नी हुवतो तो मन काई वायन श्राव ही क राजाजी र काम माग इती पूमता। सास सायर राणो बोस्यो— राटी-पाणी इ सून्य्या।'

थार मन म सुधार नाहुसी बठताई हसर बाबाओं बाल्या— घणी फरक को पढ़नी।

राणा सरमायर जुल हुयथा। राज्या नाउर खाथा। पाणी पीया।
गुष्टा म सोवण न पत्या गया। पाष्टी ताळ म बाबाबी गरी जीव म चन्या गया। राणी पित उठघोडो सो पसवाडो गोरतो रयो। वणाई पननी दीस हो वणाई परिपराणी। जादानार बीच चित स्रात हुयोडो सो राणी साही रात पूमतो रयो। बाबाबी बेगाई उठर पूजा वरण खातर वगरी चान्या गया। दिनुत तोई राणी आठस मरोडतो रयो। ताबडो सागीडो चडम्यो जण त्यार हुयर बाडी कानी चारू पड़ना। मारन म सूचना मिला न रिवारी सूट मार करता सम्बादाटी साई आयम्या है। राषो रो आग जावण रो मतो उन्त चूक हुवज लागय्यो। पण किया हो बाडी तो गयो परो पण बठ भी कोनी साध्यो। हारन गाव गया।

भा काना लाख्या। हारल गाव गया। गाव भागर पूष्पा जल उला न पता चास्या कथनकी र डीक्रो हुयो है। राणो राजी हुयो। पल लेक नूबी समस्या उल र सामन क्षायगी। राजवास रयो। दितृत पाछो टुर पडया। लाल दिन पोहर रात तार्ड चालतो रयो।

रता। दिनुत्त पांक्षा दुर पढ़या। आका दिन पाहरे रात ताइ आलता रथा। जीती पूगर हालपाल पछ्या जल पिढ़ान्या री सूजना मिली। विकासपुरवनी मूजना अयर समेसा भैगणा जरूरी हा। दूसर निन पत्ता आदमी सुजना लेयर आयम्यो। जल राजो टीजी बजासर वित्तमपुर नानी जाल पढ़यो।

विकमपुर आयर ओ सनेसी राजाजी कन पुगायी जित तो पिंडारी

सरदार रो क्लो ई प्रामो । राजाओं केई निना ताई सोच विचार करघो । पछ अपगुर र सेठा रें नाव हुडया तिबार विडारी मरवार कन मेजी । तेण वेण रा मामने वेगा मुळ्या किनी । उतर पहतर बावता आवता रया । वो महीना दुग मंदि किनळ्या । हार न पिडारी हुई। क्यर शेक्षावाटी मही पाइ इस्पार । जब आपर राण न चन कथा। वत न पतो चात्यों के साट साव रा बात आदारी पठा वा साव रा बात आदारी पठा वा साव रा बात आदारी वठा विजयपुर ठरया हा अर राशाओं आ सु मदद मागी है।

्षणि सब म ते मरोसी दिरायर नमा है क लाट साथ सू बात करम यह तर भेजमू इत म पिटारी सरवार रो आदमी हुडी री ओठमी लेमर पाछ सामम्मी । जयपुर म एज नाव रा कोई सठ द नोजी हा । हुडी ओटी ही । पण साव र परीम रो ममाचार सुजन वा रातारात दै पाछी विक्रमपुर मू चत्यों गयी । लाट साव र भरोम र नाव मान मू द विक्रमपुर रो सापन टळगी । दा तीन महीना म घटनावा इती तबी सू घटी क मी पत्ती ही जानी पाल हा क आग माई हुसी ? ना राण म सोचण री फुरमत मिन ही । रात दिन पनरो का सी पूमतो रजना जम भावो मारण री स्थारी म लाखा रखता । जठ सामन लायामा हो ।

अतहीन अत

जेठ में विरस्ता हुयगी ही। हुळ बाय दिया हा। आम म मणपोर घटावा तो कोगी ही पण सोर साल हा जिया कर के कर्ड मुदाबादी कर हा। वाजरी व हती विरक्षा ई पणी। गुणा र सामन बावाजी बठा हा। कीर साम सु जान हा। के द गुलार नाल हा सर के योगा दे उस हा। नहुर म गोहमूला पालर पाणी ही जिक म मीडना कूट हा। मोगा मीगा जिनावर पाणी माथ उक हा। बात में साम सु जान हा। वाजरी ही जिक में भीडना कूट हा। मोगा मीगा जिनावर पाणी माथ उक हा। बाताजी सोच हा जो भीडना भा जोरदार जिनावर है जिको पाणी री बुदा मिलता हो जीवतो हुत जात। पाणी सुवता है समाधी लगावर सेवर पू सुक जाव। उपारी साथा जयार है। वण है तावको जोर सु निक्क हो। मारा साम हुसोडी अळाया साल हुवती जाव ही पण जण पाणी री पृहारा पड ही व पाछी माय बठण साम जाव हो। घोडी ताळ म बावजा रा सार चालता चालता साफ हुवण लागमा। आभी सेवर्म आसमानी हुसर पामनण नामाथी। बावाजी उठर गुणा में जायर खुटी माय दिनय हकतार न जतार सियों अर दगरी री पडती दिया म आसण नाल र बठमा न इनतार न जतार सियों कर वरियों पर पतार सा के र राग न विदेशी—

इण ता आंगणिय हेसली । केई नर सेल्या नेई सेलसी नेई नर सेल सिधाया सखी ।

पून री छरा र साग इक्तार री आवाज स्थारा वानी गुजल सागती। सारी निवरोही जीवण री अस्थिरता म सिनान करण सागती। वावाजी मगन हुनर आस्था मीच्या गावता जाव हा। पडमा चढत मिनलार पणार लडक चूबाबाजी री मसती हूटी। आस्ता लोकर देश्मी ता राणो मोनी मे टावर किया होळ-होळ पड हो, जिया भाव सू उठर पालको सीलाहो। वन आयर राण टीकरैन वन वठावता उठोत करी। बाबाजी इंचरज मूछोर र माय उपर हाय फैरन आसीस दी अर राणकानी देखर बोध्या— दया काई?'

धोलो देवसी ।' बमनया काटतो बोल्यो ।

काई ? धीरज देवता वादाजों बोत्या— चालती रयी ? ओ ससार रो नंग है। नाम हुयो, गयो। डल म दुख री नाई बात है ? धीरल धार। उज्ज री निसाणी न पाळ। घारा काम कर। बा आपरो काम करणी। पण बावळा पत्ती बता तो सरी काई बीमारी हुयी ?' बावाजी री आल्या म ई पाणी आयम्यो हो।

रोवता रोवतो राणो बोरवो— हूं विडारपा र चपर म पज्योहो हो। तीन च्यार महीना इय मक्ट म ई लागच्या हा। इणमु पली अठीन जावतो आपन बगळा समाचार पुरताबच्यो हा। एछ मन की पत्नी कोना हो लार काई हुयो है छोर उपान हो। हिस साई हुयो हो। हो कि पहुर समेरी वेयर परंथो पत्री हो। हर ही मन यह लाट साव र आदमी री सनेतो मरीस रो मित्या हो। एउ हिम मरीस प्रेम मरीस प्रेम मरीस हो। पंजाजी देवणो तो पाव हा, पण माम कुठी ही जिल्ने पूरी कोनी करी जाय सक ही। सोवी परावण में बलत बोहळी लाग में स्वायर मान ही ही प्रावण में बलत बोहळी लाग साक महीस हो ही प्रावण में स्वत ध्री स्वायर हा प्रावण में स्वत ध्री स्वायर हा प्रावण में स्वत ध्री स्वायर हा प्रावण स्वाय हा प्रावण हा सहस्वीकोट वावच साक मारण मान ही टळायो।

गाव कानी गयो जण गाव र बार है मेटी हन होन बाज हा। हू मारव छोडर वठ हे हम बाह गयो। म्हारा हो करम ई स्टूट्या। वठ पत्रकी न मेडी गाम नाल रात्मी हो। भोगो छिया म क्षायोटो हो। दोन जोर जोर सु बाज हा। भोगो सारवारी जोर जोर सु माथ माय माय साव हो। महारो भायको अर उपरी परपणिराणी छोर न निया बठा बठा रोव हो। गांव रा दो च्यार

अतहीन अत

केठ में बिरसा हुगारी हो। हळ बाय दिया हा। आम म पणघोर पटाबा तो कोनो ही पण लोर पाल हा जिला करूँ करूँ बुदाबादी कर हा। बाजरा न "ती विरसा ई पणी। गुफा र सामन बाबाजी बठा हा। छोर साम जावा हा। केई कुतार पाय हा बर केई घोषा है उक हा। कु म मो स्कृणा पालर पणी हो जिल म मीडका कुद हा। मोधा मीया जिलाबर पणी माथे उक हा। बाजों सोच हा सो मीडको भी ओरदार जिलाबर है जिको पाणी री बुदा मिलता ही जीवतो हुम जाव। पणी हो तत्र कही भाषी मुक्त है समापी लगावर फेलर पूर्क जाव। वणरी माया जयार है। कण्डे ताबडो और सू जिल्क हो। मगरा माय हथार है। कण्डे ताबडो और सू जिल्क हो। मगरा माय हथीशी अळाया लाल हुक्ती जाब हो पण जण पाणी री पुहारा पड ही व पाछी माय बदल लाम जाब हो। योडो ताळ म बारळा रा सार पालता चालता साफ हुक्ण लाममा। आभी जेक्स आसमानी हुमर पमकण लाममी। बाबाजी उठर गुफा म जाबर लुटी माय वरण्या न इकतार न जतार लियो अर कगरी री पटती दिया म आसण नासर वरण्या न इकतार न जतार लियो अर कगरी री पटती दिया म आसण नासर वरण्या न इकतार सजावण लागा। इक्तार तहार साथ केर राग चाइली—

केई नर सेल सिपाधा सली । पून री ल्रार साग व्यवार रो आवाब ज्यारा कानी गूजण सामगी। सारी विरोही जीवण री अस्पिरता म सिनान करण सागनी। बाबाजी मगन हमर आस्या मींच्या गावता जाव हा।

इण तो क्षागणिय हे ससी । केई नर सेल्या केई सेलमा पडमा चढत मिनलार पगार लडन सूबाबाजी री मसती दूटी। एसा लोकर देरयो ताराणो गोदी मंटाबर किया हाळ-होळ चढ हो, जिया स्व सूउठर चाकणो सील हो। कन आयर राण डोक्टन वन बठाबता हात करी। बाबजी इचरज सूछोर रागाळ करर हाथ फेरन आसीस दी र राण कानी देखर बोल्या— इया बाई ?'

घोलो देयगी ।' बमत्रया फाटतो बोन्यो ।

काई ? धीरज देवता दावाजी बोल्या— चाळती रयी ? आ ससार ो नेम हैं। काम हुयो गयो। इप म दुख री नाई बात है ? धीरज धार। एप री निसाणीन पाळ। धारा नाम कर। वा आपरो नाम करसी। पण सळा पनी दतातो सरी काई बीमारी हुयी ?' बावाजी री आस्या म ई गणी लायम्यो हा।

रोवता रोवतो राणो बोरयो— 'हू पिडारघा र चर में पण्योग्री हो। ।

गित च्यार महीना इण सनट में ई लागमा हा। इणमू पनी अटीन जावतो ।

प्राप्त समझार सुगतावग्यो हो। पछ मन की पतो कोनी हो लार ।

गाई हुयो ? छोरो इस पनर दिना रो हुयम्यो हो। हू वित्रमपुर सनेसो लेयर
सर्यो गयो हो। यठ ही मन यह लाट सात र आदमी रो सनेसो भरोस दो
मिस्सा हो। वित्रारघा रो मूठी हुडी रा सतावो बार बार बाख हो। राजाजी
देवणो ता चाव हा पण माग जूठी हो। जिको पूरी कोनी करी जाय सक हो।
सीदो पटावण म चलत बोहुलो लागम्यो। सलावाटी ताई जायर समझा पाछा
आव हा जण ह सर्जुजीनोट जावण साक मारा माय हो टळायो।

गाव कानी गयो जण गाव र बार ^ई मेडी कन टोल बाज हा। हू मारग छोडर बठ ^{टे}मण सारू गयो। म्हारा तो करम ई फूटग्या। वठ पनती न मेडी गाम नाय रायी ही। भोषा छिया म आयोगो हो। डोल जोर जोर सूबाज हा। भोषो सावळा री जोर जोर सूमाय माय पाय खाब हो। म्हारा भायकी अर उपरी घरधणिराणी छोर न लिया बठा बठा रोव हा। गाव रा दो ज्यार

अतहीन अत

तो कोनो ही पण लोर पाल हा जिका कर्ठ कर्ठ ब्रह्मावारी कर हा। बाजरी न व्ही विरक्षा है पणी। पुकार सामन वावाजी वटा हा। कोर साम सुजाव हा। केई जुवार नाथ हा बर केंद्र योचा ई उठ हा। कु सा ना बस्याया पाणी हो जिक म मीरक्षा कुत हा। मीवा मीया जिनावर पाणी माय उठ हा। बाबाजी सोच हा बो मीरको भी जोरदार जिनावर है जिको पाणी री बुदा मिलता ही जीवतो हुव जाव। वाणी मुकता ई समापी कलायर बेतर उद्दू सुक जाव। उपारी माया अपार है। क्या है जोवतो हुव जाव। वाणी मुकता ई समापी कलायर बेतर उद्दू सुक जाव। उपारी माया अपार है। क्या है। पा जवण पाणी री मुदार माय हुयोधी अळाया साल हुवती जाव ही। यो जवण पाणी री मुद्दारा पड है। व पाछी माय बदल सांग जाव ही। योडी ताळ मे बादळा रा सार पालता चालता साफ हुवण सांग्या। आभो जेक्दम आसमानी हुयर पामण लागयो। बाबाजी उठठ पुरा मे जायर खुटी माय टिगय इक्तार न उतार साय जर दूगरी री परती दिया म आसमा नालय वटणा न इक्तार न जतार साया । इक्तार वहार सार अस राण वाडवी—

जेठ में विरला हुमगी ही। हळ वाय दिया हा। आम म घणधीर घटावा

इण ता आगणिय हेससी । केई नर सेल्या, नई सेलसी नेई नर सेल सिधाया सन्ती ।

पूर्त री लरा र साग व्यक्तार री आवाज च्यारा मानी गुजण सागगी। सारी निदरोही जीवण री अस्थिरता म सिनान करण सागगी। वावाजी मगन हुमर आस्या मीच्या गावता जाव हा। पडमा चढत मिनलार पगार सडक सूबावाजी री मसती हुटी। आरमा लोकर देरची ता रागो गोदी में टावर लिया होळ होळ चड हो, जिया भाव सूउठर चालणो सील हो। वन आयर राण डीकरन कन बठावता टडोत करी। बावाजी इचरज मूछोरर माथ ऊपर हाय फैरन आसीस दी अर राणकानी देलर बोध्या— दया काई?

'धोखो देयगी ।' बसवया फाटतो बोल्यो ।

काई ? भीरज देवता बाबाजो को या — चालती रयी ? आ ससार रो नम है। काम हुयो गयो। इन मे दुख री काई बात है ? भीरज धार। उन री निसाणी ने पाछ। धारा काम कर। बा आपरी काम करगी। पण बाबळा पत्नी बता तो मरी काई बीमारी हुयी ?' बाबाजी री आक्या मई पाणी आक्यायो हा।

रोवता रोवतो राणो वोत्यो— हू पिंडारपा र चनर म पज्योडो हो। तीन ज्यार महीना इस सन्ट में ई बातम्या हा। इलम् पनी अठीन जावता आपन तमळा समाधार मुसताय्यो हो। पछ मन नी पती कोनी हो सार कार्य हुए हुए हुए विकायुर सनेतो लेवर चर्चा हो। हू विकायुर सनेतो लेवर चर्चा गयो हो। हु विकायुर सनेतो लेवर चर्चा गयो हो। वह तिकारो मरोश रो मिल्या हो। वह ही। सज्यो मरोश रो मिल्या हो। वह हिम मर्थ हुई है। सार वार आव हो। राजाओ देवणो तो चाद हु, पण माम जुठी ही जिल्हो पूरी मानी नरी जाय सन्ह हो। सोदो पढ़ा वाह आव हो। स्वार सार आव हो सार वाह हो। सारो पढ़ा हुई हो सारो वाह आव सार सार सार आव हो आव हा जा माम जुठी हुई एस हो। होई आव सार सार सारा आव हा जा हु सर्वुजीकोट जावचा सार माम ग्री टक्कायो।

गाव कानी गयो जण माव र बार ई मेडी कन नोन बाज हा। हू मारण छोडर बठ देमण सारू गयो। म्हारा तो करम ई फ्ट्रम्या। वठ घनकी न मेडी साम नाव राखी ही। भोषो छिया म आवाडी हो। ढोल जोर जोर सूबाज हा। भाषो सांनळा री जोर जोर सूमाय माय साव हां। हारो भायको अर उणरी घरपणिराणी छोर न नियां वठा वठा रोव हा। गाव रा दो जार जणा क्षत्र सहस्या थावस बधाव हा। भोषो खून चूस चूसर यूव हो। जरछाती साई चढग्यो हो। बठ सूनीच उतर हो कोनी हो।

मन देलता ईसमळा रोदण क्षामचा। पनदी न होस आव हा जाव हो। म्हारो नाव मुणता ई धनकी न होन वाबडघो। गुचळरी सावती वोसी— आयम्या? छोरदानो नेक्स योबी— ममळ सिवा पारी मनाफी न।'पेर हिचकी आयमी। सांग चायर योगी— 'इण म्हारी भावन अर इण म्हार भाई म्हारी समळी दक्षावो पूरी वर दी। ग्णान वरई मत भूत्या। समळा आग्मी गढणा हा निवर रोदण लागग्या। पेर म्हार दानी दैसर योजी— ह तो जाव हा अंगर ।

मैं गोदी म उठायी उणर साग ई वा आपरा प्राण त्याग निया।

यावाजी मैं संगळा कारज करवा वण महारी वाळजो मन छोड दियो, जिनो पाछो कोनी आयो । गळवळो हुयर राणो बोल्यो—'हु अब कार्ड करू विवाजी की समक्ष सको आवती ।

षावम वपावता वावाजी बोल्या — पनशी री जेक ई तम ना ही मां वणण री अर वा पूरी करगी। तुस्वारंग सुभरघोडो है। वा लुगाई ही, अर लुगाई ई रवणी चाव हो। आ इछात पूरी करो। उणरी माझूम एळ धार सामन है। इणन धार टावरा साम बेगे कवर गळ। बाकी रो भारण अतहोन है।

'ओ ही करसू। राण पडूतर दियो ।

सिक्या पडण लागमी ही। बादाजी उठर वसली कानी आरती करण न चल्या गया। षोडी ताळ पछ निंदरोही में दूर दूर ताई टाली री आवाज सुगीजण लागगी ही।

